महामति प्राणनाथ की किरतन पदावली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध - प्रबन्ध

निर्देशक

डा० माताबदल जायसवाल 'प्रोफेसर'

हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

शोधकर्ती

श्रीमती कोकिला श्रीवास्तव

प्राकथन

हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास में महामति प्राण नाथ उन महान दिव्यात्माओं में से एक हैं जिन्होंने सम्पूर्ण विश्वमंच पर विश्व-मानवता विश्व समाज एंव विश्व धर्म की सस्थापना के उद्देश्य से मध्य-कालीन भारत की समस्त समस्याओं के समाधान का प्रस्तुतीकरण किया है।

17वीं शताब्दी के समस्त बकवियों की भाषा में प्राणनाथ की भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के साथ ही सशक्त एंव समन्वयात्मक भी है। स्वंय महाममति प्राणनाथ गुजराती होने पर भी भारत की एक राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता देकर हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग देते हैं। मध्ययुग की मूलाधार भाषा भी खड़ी बोली ﴾ हिन्दवी ﴿ है किन्तु खड़ी बोली के रूप अन्य भाषा रूपों से इस प्रकार पिरोए हुये हैं जिसका मात्र सीमित अध्ययन ही संतोषप्रद नहीं है। अतएव प्राणनाथ की रचना मे " कीरतन " की भाषा का सर्वांगीण रूप मे भाषा वैज्ञानिक अध्यन करना श्रेयस्कर एंव अत्युपयुक्त समझा।

भाषा विज्ञान का किंचित अध्ययन करने का सर्वप्रथम अवसर मुझे स्नातक तथा स्नातकोत्तर उत्तरार्ध में ही प्राप्त हुआ था। अन्ततः इस विषय में अत्यधिक रूचि होने के साथ ही प्राणनाथ की कीरतन की भाषा को भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देखने एंव विश्लेषण करने का सौभाग्य मुझे पहली बार मिला है। शोधात्मक दृष्टि से किसी कार्य को पूर्ण करने में निर्देशक के निर्देशन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतएव विभागाध्यक्ष की कृपा एंव पथ प्रदर्शक के रूप में मेरे निर्देशक डा0 माता बदल जायसवाल की अत्यन्त व्यस्तता के उपरान्त भी मुझे निर्देशित करने की उनकी अनुमति

ही मेरी उत्कंठा एंव आकांक्षाओं को पूर्ण करने का सम्बल बनी। उनके यत्न-पूर्ण निर्देशन एंव आशीर्वाद से ही मैं अपना यह शोध प्रबंध प्रस्तुत करने की समर्थता को सम्मुखीन कर पाई हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुये ही महामति प्राणनाथ की " कीरतंन " की भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। यह शोध प्रबंध मुख्यत: 10 अध्यायों में विभक्त है। अध्ययन पद्धति की दृष्टि से इन अध्यायों में ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की योरोपीय पद्धति तथा अमरीकी पद्धति का समन्वित रूप अपनाया गया है। " कीरतंन " की भाषा में प्रयुक्त प्रत्येक व्याकरणिक पद की प्रयोग वृत्तियों का विवेचन इस अध्ययन की सबसे बड़ी विशेषता है। कीरतंन की भाषा समन्वयात्मक होने के कारण इसमें अनेक बोलियों के रूप प्रयुक्त हुये है। अत: प्रयोगाधिक्य के आधार पर ही कीरतंन की भाषा की मूलाधार बोली का भी रूप निर्धारित किया गया है।

प्रथम अध्याय में प्राणनाथ की कीरतंन की भाषा का ध्वनिग्रामिक अनु-शीलन प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में पदग्राम के अन्तर्गत प्रत्यय प्रक्रिया की चर्चा की गई है। तदुपरान्त तृतीय अध्याय में संज्ञा शब्दों में लिंग वचन और कारक के उदाहरण हैं।

चौथे अध्याय में सभी प्रकार के सर्वनामों के साथ सार्वनामिक विशेषण को दृष्टिगत किया गया है। को

पांचवे अध्याय में विशेषणों का वर्गीकरण प्रस्तुत है।

छठें अध्याय में कीरतंन की भाषा के क्रिया विधान पर विचार किया गया है। इसके अन्तर्गत सहायक क्रियाओं, कृदन्तों, कालों, प्रेरणार्थक क्रिया

वाक्य प्रयोग और संयुक्त क्रियाओं के उदाहरण दिये गये हैं।

सातवें अध्याय में अव्यय की विवेचना की गई है ।

आठवें अध्याय में कीरतन के सामासिक पदों के उदाहरण रखे गये है ।

नवें अध्याय में पुनरूक्ति के उदाहरण प्रस्तुत है ।

10वाँ अध्याय कीरतन के शब्दकोश का है ।

इस प्रकार प्राणनाथ की कीरतन की भाषा का भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण करके ज्यों का त्यों रख देने का प्रयास ही इस प्रबंध का मुख्य उद्देश्य है । इस प्रकार प्रयत्न में कहाँ तक सक्षम हूँ - इस संबंध में मै अपनी अल्पबुद्धि के साथ मौन रहना ही श्रेयस्कर समझती हूँ ।

इस कार्य को गन्तव्य स्थल तक पहुँचाने वाले डा0 धीरेन्द्र वर्मा तथा स्वयं निर्देशक की पुस्तक " मानक हिन्दी का एतिहासिक व्याकरण " मेरे आधार ग्रंथ रहे । इन वरिष्ठ गुरूजनों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करना अपना पावन कर्तव्य समझती हूँ । क्योंकि बिना आधार ग्रंथों के प्रस्तुत अध्ययन मेरे लिये दु:साध्य था।

यह प्रस्तुत शोध प्रबंध मेरी अपनी रचना की मौलिकता का परिचायक है जिसको अंकुरित करने एंव इसको पूर्णता का श्रेय मेरे निर्देशक को ही है । जिनके सौम्य स्वभाव, मधुर फटकार एंव प्रभावपूर्ण बचनों के परिणाम स्वरूप मैं अपने शोध प्रबंध को प्रस्तुत करने की क्षमता को जुटा पाई हूँ । आशा निराशा की मन: स्थितियों के बीच उनकी आत्मीयता सम्बल बनकर सतत प्रेरक रूप में रही है । उनकी इस आत्मीयता की भावना एंव नि:स्वार्थमय सहयोग के लिये मै सदा ऋणी रहूँगी। किन शब्दों में उनका आभार प्रगट करूँ वस्तुत: उनके लिये तो कृतज्ञता पूर्ण शब्दों की अनेकों

भावभीनियाँ भी अल्प प्रतीत होंगी।

अतएव उनके प्रति मेरी असीम श्रद्धा एंव सद्भावनाओं का सतत् समर्पण ही मेरी हार्दिक आकांक्षाओं का चरम लक्ष्य है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरे पति महोदय की इच्छा भी प्रेरक रूप में रही है । अनेक कठिनता पूर्ण स्थितियों में भी उन्होंने मुझे अपना शोध कार्य पूरा करने कासाहस और सहायता प्रदान की । इसके साथ ही अपने पूज्य पिता तुल्य श्वसुर एंव माता- पिता के प्रति कोटिश: कृतज्ञयता व्यक्त करने पर भी मुक्त नहीं हो पाऊँगी जिनकी प्रोत्साहन एंव प्रेरणा समय- समय पर निरन्तर मिलती रही ।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अपना शोधकार्य करने का यह मेरा प्रथम प्रयास एंव अनुभव है अत: अनेकों बार परिमार्जन करने पर भी यदि कहीं भूल से अत्यन्त सूक्ष्म त्रुटियाँ दृष्टिगत हो जाती है तो मैं अपने सुयोग्य निर्देशक एंव वरिष्ठ गुरूजनों के समक्ष क्षमा की पात्रा बनने की अधिकारिणी हूँ ।

इन शब्दों के साथ अन्त में मै पुन: अपने विभागाध्यक्ष डा0 जगदीश गुप्त, निर्देशक श्रीयुत डा0 माता बदल जायसवाल एंव प्रयाग विश्वविद्यालय इलाहाबाद के प्रति अपनी श्रद्धापूर्ण सद्भावनाओं की मंजूषा समर्पित करती हूँ ।

विषय-सूची

महामति प्राण नाथ

भूमिका-

धर्म मानव जीवन की सबसे गहरी और व्यापक अनुभूति है । वस्तुत: सामाजिक राजनैतिक एवं आर्थिक एकता के भवन धार्मिक एवं आध्यात्मिक एकता की सुदृढ़ नींव पर ही स्थिर रह सकते है । इसमें विश्व मानवता स्थाई सुख शान्ति से निवास कर सकती है ।

विश्व के प्रत्येक देशों में भारत आरंभ से ही सांस्कृतिक और धार्मिक समन्वय का सेतु रहा है । विशिष्ट देश काल एंव परिस्थितियों में अपनी विशिष्ट साम्प्रदायिक परम्पराए विकसित होती गई प्रत्येक सम्प्रदाय का मूल मंत्र एक निश्चित धर्मग्रंथ एक निश्चित शैली की उपासना पद्धति और एक निश्चित कर्मकाण्ड का स्वरूप विकसित हो गया। इस प्रकार प्रत्येक का मूल संदेश जो बीज रूप था अब सम्प्रदाय के स्थूलतम रूप में फैल गया अत: साम्प्रदायिकता की संकीर्णता के कारण धर्म मानव कल्याण के महान उद्देश्य से अलग हो गया। भारतीय इतिहास के मध्ययुग में कबीर, नानक, दादू आदि अनेक संत हुए जिन्होने अनेक धर्मों के बीच मतभेद को मिटाने का प्रयास किया है । किन्तु धार्मिक एकता में धर्मों के अलग- अलग से इष्ट देवों धर्मग्रन्थों मूलमंत्रों तथा अलग - अलग कर्मकाण्डों का होना सबसे बड़ी बाधा होती है । अतएव जब तक इन क्षेत्रों में मौलिक एकता और समता न स्थापित हो तब तक धार्मिक एकता एंव विश्व शान्ति संभव नहीं हो सकती ।17 वी शताब्दी में अवतरित महामति प्राणनाथ ने विश्व धर्म संगम के उद्देश्य से मध्यकालीन स्थिति के अनुकूल बहुत बड़े अभाव को पूरा करने का प्रशंसनीय प्रयास किया।

महामति प्राणनाथ का जीवनवृत्त :-

विश्व के अनेक अवतारी पुरुष एंव महामानव सम्पूर्ण मनुष्य जाति के लिये धर्म के क्षेत्र में सदैव पथ प्रदर्शक रहे है । महामति प्राणनाथ ऐसे ही महामानवों में से एक थे जिनका जन्म 17वी शताब्दी {1618} में गुजरात { जब जामनगर } में हुआ था । इनका बाल्यावस्था का नाम मेहराज ठाकुर था। धर्म मे दीक्षित होने के कर पश्चात् इनका नाम इन्द्रावती रखा गया।

इनके गुरू निजानंद स्वामी श्री देवचन्द जी {1581-1655 ई० } म ने उस युग में भारत मे प्रचलित सम्प्रदायों के गुरूओं सन्यासियों, योगियों के पास जाकर परमात्मा को पाने का सरल मार्ग खोजना चाहा और जीवन के 40 वर्षों तक वे विभिन्न धर्म शास्त्रों का अध्ययन श्रवण मनन करते रहे । अनेक मठों- मंदिरों से होते हुये श्री देवचन्द जी निरन्तर चौदह वर्ष तक श्रीमद् भागवत की कथा को श्रवण करते रहे। वहीं एक दिन पूर्ण ब्रह्म परमात्मा , आनन्द कंद श्री कृष्ण जी ने साक्षात् प्रकट होकर श्री तारतम मंत्र प्रदान किया। उसके प्रकास में श्री देवचन्द जी को अक्षरातीत ब्रह्म स्वरूप तथा उनके अक्षर और क्षर लीला रूपों का अन्तर स्पष्ट हो गया। श्री देवचन्द जी निजानंद स्वामी हुये । उनके उपदेशों की सर्वत्र धूम मच गई । उसी समय बारह {12} वर्ष की आयु में मेहराज ठाकुर श्री देवचन्द जी की शरण में आए । वे 16 वर्ष तक उनके संग संग रहे। गुरूदेव ने अपनी जीवन भर की अर्जित अध्यात्म पूंजी , हिन्दू धर्म शास्त्रों के सार सहित { तारतम मंत्र } उन्हें सौंपकर ई० सन् 1655 में श्री देवचन्द जी ने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया।

देवचन्द जी की अध्यात्मिक शक्ति के अधिकारी मेहराज ठाकुर हुए । उस शक्ति को पाकर ब्रह्मात्माओं के जागरण एंव संसार के प्राणियों

को मुक्त कराने का पूर्ण दायित्व इन पर आ पड़ा । प्रियतमा परमात्मा का आवेश , आदेश, तेज एंव सदगुरू के रूप में परमात्मा की अगाना श्यामा शक्ति को पाकर मेहराज ठाकुर महामति प्राणनाथ हुए । मेहराज नाम एंव इन्द्रावती की भगिता महामति में एकाकार हो गई । तत्पश्चात् के धार्मिक एकता एंव विश्व धर्म समन्वय के उद्देश्य से विश्व के अनेक स्थानों में भ्रमण किया। आवागमन के साधनों का अभाव होते हुये भी महा-मति प्राणनाथ ने जामनगर सूरत, वगदाद, दीपबंदर उदयपुर, कामा पहाणी •मेरठ , दिल्ली , मथुरा वृन्दावन आदि अनेक स्थानों में भ्रमण करते हुये अपना अन्तिम पड़ाव पन्ना- बुंदेलखंड § मध्य प्रदेश § बनाया। पन्ना में ही लगभग 75 वर्ष की आयु में § 1694 ई0 § श्रावण कृष्ण चौथ के दिन अपने पर्थिव शरीर का परित्याग कर दिया।

समन्वयात्मक दृष्टि-

§17वी0 श0§ मध्यकालीन स्थितिमें महामति प्राणनाथ की धर्म समन्वय की दूरदर्शी दृष्टि उनकी अमूल्य देन है । महामति प्राणनाथ अपने दर्शन को धर्म शास्त्रों के समन्वय की अत्यन्त दृढ़ नींव पर खड़ा करना चाहते थे । इसीलिये उन्होने समस्त जातियों के धर्म ग्रथों के विद्वतापूर्ण, उदार , मौलिक एंव आध्यात्मिक समन्वय पर बल दिया। 17वीं श0 में धर्म ग्रथों के रूपों तौरेत , जंबूर , बाइबिल , तथा मुहम्मद साहब के अनुयायियों में कुरान मान्य ग्रंथ थे- जिन्हें कतेब कहा जाता है । इसी प्रकार हिन्दूओं के धर्म ग्रंथ - वेद उप निषद गीता और भागवत मान्य ग्रंथ थे । महामति प्राणनाथ यह जानते थे कि प्रत्येक मधर्म के मूल पुरूषों एंव धर्मग्रंथों की एकता को स्थापित किये बिना समन्वयात्मक भावना विश्व

में नहीं उत्पन्न हो सकती । अतएव पश्चिमी देशों का सैमेटिक कतेब ग्रंथों का सार कुरान में तथा पूर्वी देशों की वेदवाणी का प्रभाव युगानुकूल भागवत में आया है । उन्होंने बलपूर्वक कुरान और भागवत दोनों को सही कहा है और दोनों ही परसत्ता के प्रमाण ग्रंथ है । उन्होंने सभी धर्मों को आन्तरिक आशय को तारतम की कुंजी से खोलने का प्रयास किया है।

महामति प्राणनाथ अपने युग की राजनैतिकता से सम्बद्ध होने के कारण तत्कालीन राजनैतिक एवं धार्मिक उथल पुथल के वातावरण को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । प्राण नाथ स्वयं जामनगर के मुख्यमंत्री थे किन्तु राजनैतिक वैभव से सन्यास लेकर एक व्यापक धर्म प्रचार द्वारा जन-कल्याण या जागरण के लिये राज्यपद छोड़ दिया था। समस्त मध्यकाल में संभवत: वे प्रथम सन्त नेता थे जो एक इकाई एक राष्ट्र के रूप में भारत का स्तवन करते हैं । अपने जीवन काल में वे स्वयं अरब, ईरान, ईराक आदि देशों में भ्रमण कर चुके थे । अनेक देशों से उनका परिचय था इन सब देशों में वे सर्वप्रथम भारत भूमि को ही महत्व देते है । हिन्दू उस समय जातीय दृष्टि से पराजित और शोषित थे। मुसलमान एक विजेता जाति थी। तत्कालीन युग में राष्ट्र की केन्द्रीय सत्ता औरंगजेब के हाथ में थी। औरंगजेब की सामाजिक धार्मिक अनुदार नीति से उसकी प्रजा असंतुष्ट एंव संत्रस्त थी । वह अपनी सामाजिक धार्मिक नीति में कुरान का कायल था। अत: प्राणनाथ ने लोकहित के कारण कुरान का वास्तविक अर्थ स्पष्ट करके कुरा पैगम्बर मुहम्मद का शान्ति दाई संदेश भेजकर उसकी आत्मा को जगाना चाहा किन्तु इससे उन्हें विशेष सफलता न मिली फिर उसे समझाने के लिये

अपना एक शिष्य काबुल भेजा परन्तु कोई उस पर विशेष प्रभाव न पड़ा। फिर भी वे निराश नहीं हुये । वे सारे देश के राजाओं के पास गये किन्तु किसी में भी राजनैतिक साहस नहीं हुआ जो कि प्राणनाथ के जागृति का संदेश अपना सके 2 अन्त में वे छत्र साल से मिले जो एक सामन्त था । उसकी देशभक्ति और साहस को देखकर उन्होंने उसे लोकशक्ति धनराशि एंव आध्यात्मिक शक्ति देकर एक महाराजा के रूप में बनाकर उसका राज-तिलक किया। इस प्रकार वे सच्चे अर्थों में उसके पथ प्रदर्शक और राजगुरू बन गये , उनके समस्त सांसारिक कार्यों को आध्यात्मिकता प्रदान की । उस युग में सारे हिन्दू संत ज्ञान राजाओं को राष्ट्र भक्ति की प्रेरणा देते हुए धर्म रक्षा की ओर संकेत करते हैं ।

महामति प्राणनाथ एक प्रगतिशील सामाजिक चिंतक की भांति जाति पाँति तथा रूढ़िवादी प्रथा के घोर विरोधी थे। वे पीड़ित एंव परि-त्यक्त लोगों से ही संबंध रखते थे। यह उनकी सामाजिक प्रगतिशीलता का सबसे बड़ा प्रमाण है । महामति प्राणनाथ हिन्दू एंव मुसलमान जातियों में आध्यात्मिक चेतना को जगाकर उन्हें ही एक सामाजिक स्तर पर रखना चाहते थे । उन्होंने अपनी आत्म साक्षी और वेद कताकतेब की समान अवधारणाओं के आलोक में बार- बार इस सत्य को निरूपित करने की आवश्यकता पर बल दिया है कि जो कुछ मूसा, ईसा आदि कहते रहे हैं वही मुहम्मद साहब ने भी कहीं है । वैसी ही अ उक्तियाँ हम सभी की धार्मिक परम्परा में सुरक्षित है । क्योंकि सत्य सदा एक होता है । अलग नहीं होता । वस्तुत: महामति प्राणनाथ धर्म के कारण बनाई हुई

सामाजिक सीमाओं को तोड़ कर धर्म का वह रूप दिखाते थे जिसमें सभी धर्म समाहित हो उठें ।

दर्शन चिन्तन-

महामति प्राणनाथ ने 17वी शताब्दी में कृष्णा के जिस रूप अवधारणा की है वह समस्त भारतीय वाङमय में नवीन और अथम्य है । उन्होंने पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत सच्चिदानंद श्री कृष्ण को ही एक मात्र परम पुरूष माना है । उन्होंने लीला भेद मे श्रीकृष्ण के तीन स्वरूप माने हैं । अक्षरातीत अक्षर और क्षर तीन पुरूष है । इस सिद्धान्त के लिये उन्होंने गीता और भागवत को प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है । अक्षरातीत पुरूषोत्तम, आदि अखंड और चेतन स्वरूप है। उनके आनंद मय अंग में ब्रह्मात्माओं के तेज से परमधाम का प्रकास है । अक्षर पुरूष के रूप में मंत अंग अर्थात सृष्टि रचयिता है । इनके नूर से ही सृष्टि का विकास है । क्षर पुरूष नारायण के रूप में कंण- कंण में विद्यमान् हैं नारायण की माया से सृष्टि नश्वर ब्रह्माण्ड और जीव सृष्टि का निर्माण है । अक्षरातीत ब्रह्म और अक्षर ब्रह्म को अनादि, अविनाशी, अखंड स्वरूप माना है । क्षर पुरूष महाप्रलय के समय प्रकृति में विलीन हो जाता है ।

महामति क्षर- अक्षर के परे परम पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण को एकेश्वर के रूप में मानकर उनकी उपासना करना स्वीकार करते हैं । उन्होंने इसेश्वर कृष्ण की प्रधानता भी अवश्य दी किन्तु उनके लोकरक्षक एंव धर्म रक्षक रूप को ओझल नहीं होने दिया। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये वे श्री कृष्ण की तीनों लीलाओं को मान्यता देते है ।

मध्ययुग के आरंभ से ही लोक मानस पर श्रीमद भागवत की महिमा का सार्वाधिक प्रभाव पड़ा था । महामति ने पुष्टि मार्ग के परम आराध्य का प्रेमाश्रय स्वरूप , दिव्य एंव चिन्मय श्रृंगार को प्रस्तुत करने के साथ-साथ गीता का विराट एंव अनन्त स्वरूप भी बनाए रखा। जो कृष्ण ब्रह्म के रूप में वेद उपनिषद एंव भागवत के परम नियामक अद्वैत स्वरूप है वही अपने श्याम या साम रूप में कतेब धर्म ग्रंथों एंव सांस्कृति परम्परा के पैगम्बर या हादी भी है जिन्होंने सामी परम्परा का सूत्रपात भी किया था। इसी प्रकार कुरान के सिद्धान्त को भी स्वीकार करते हुए महामति ने पांच प्रकार की उत्पत्ति को माना है । ब्रह्मात्माएं उनके अंग में प्रगटी है। देवों या फरिश्तों की सृष्टि नूर से हुई । संसार उत्पन्न तीन तरह की पैदाइश है । उच्च जीव को खुदा ने दो हाथों से बनाया है, मध्यम एक हाथ से और निकृष्ट " कुन " होजा कहने से माया उत्पन्न हुये । माया के दास जीव अपने कर्मों के फलस्वरूप जन्म मरण के चक्कर के फिरते हैं । ब्रह्म सृष्टि परमधाम की स्वामिनी है । ईश्वरीय सृष्टि का घर अक्षर धाम है । जीव सृष्टि ब्रह्म सृष्टि के समान प्रेम करके जीवन के वहिश्तों से मुक्त सुख प्राप्त करती है ।

सृष्टि रचना का कारण आकर्षण एंव विविधता के विषय में भी महामति प्राणनाथ के विचार बड़े मौलिक तर्कपूर्ण एंव हृदयग्राही हैं । उनकी प्रकाश ग्रंथ की वाणी में स्पष्ट है कि जब क्षर ब्रह्माण्ड की रचना नहीं हुई थी तो अविनाशी लोक परम धाम में अक्षरातीत परमात्मा अपनी आनंद अंग श्याम और उनकी बारह हजार कलाओं §अंगी आत्माओं § के साथ आनंद लीला में मग्न थे। उनके सत्य स्वरूप अक्षर ब्रह्म अपने विज्ञान और कल्पना के बल पर अनेकों ब्रह्माण्ड की रचना क

की गई । ब्रह्मात्माओं ने काल रहित ब्रजभूमि गोपी कृष्ण के रूप में तथा योग माया द्वारा निर्मित रास लीला के ब्रह्माण्ड प्रेम की पराकाष्ठा में अनन्त मिलन का आनंद अनुभव किया। दुखमय विश्व विश्व को देखने की चाह से तृतीय बार फिर घोर कलिकाल में काल माया के ब्राह्माण्ड में उनका अवतरण हुआ । परमधाम के अतिरिक्त संसार के सुन्दरतम दृश्य फीके और परम ऐश्वर्य के साधन नीरस जान पड़ते हैं । आत्मा परमात्मा से मिलने और अपने परमधाम को पा लेने के लिए मचल उठती है । परमधाम असीम है सीमा में बंध कर वर्णन करना कठिन है । तो चिन्तन और मनन के लिये उसे सांसारिक वस्तुओं के उदाहरण देकर जन साधारण की भाषा में कह देना पड़ा । महामति प्राणनाथ के उपास्य कृष्ण का स्वरूप प्रणामी सम्प्रदाय को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करता हैं । उन्होंने साधना पद्धति पर चलते हुये शरीर को कष्ट देने का निषेध किया है । महामति ने मन को एकाग्र करते चिन्तन में सहायक बनने की शक्ति को प्रेरणा दी।

ग्रंथ का नाम-

महामतिम प्राणनाथ प्रणीत ग्रंथ का प्राचीनतम नाम { कुलजम " है । अरबी शब्द" कुलजम " का अर्थ है दरिया या सागर । महामति प्राणनाथ के धाम गमन के उपरान्त कुलजम ग्रंथ को ही वि0सं0 1751 में उनका स्वरूप मानकर गद्दी पर अभिषिक्त किया गया। तब से आजतक " कुलजम " { श्रीमुख वानी } को उनका { कृष्ण का } स्वरूप मानकर प्रणामी मंदिरों में उसकी पूजा की जाती है । प्रणामी इसे " कुलजम स्वरूप " के नाम से सम्बोधित करते है। विक्रम सं0 1751 में ""कुलजम

स्वरूप " के प्रथम सम्पादक श्री केशव दास जी ने कुलजम के चौदह ग्रन्थों का संकलन किया। आज भी सिंघासन में कुलजम स्वरूप के तारतम बानी का ही प्रकाश होता है ।

हिन्दी के विकास में महामति प्राणनाथ का योगदान-

मध्यकालीन भारत में समन्वयात्मक विचार धारा के प्रवर्तक श्री प्राणनाथ ने तत्कालीन मानक हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देकर केवल भाषात्मक एकता ही नहीं अपितु समूचे राष्ट्र की एकता की ओर संकेत किया है । तत्कालीन भाषात्मक वैभिन्नता को देखते हुये उन्होंने बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है । महामति प्राणनाथ उन महान विभूतियों में से है जो अपने युग की समस्त सांस्कृतिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हुए भी विश्व मानवता, विश्व समाज, विश्व धर्म की ओर इंगित करते हुये भी युगातीत हैं । उदार समन्वयात्मक दृष्टि रखने के कारण साम्प्रदायिकता से परे हिन्दू मुसलिम ईसाई धर्मों में एकता स्थापित करने का सक्रिय प्रयास किया। जिस प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में प्रान्तीय या प्रादेशिकता की सीमा को तोड़कर राष्ट्र की भावात्मक एकता पर बल दिया उसी प्रकार अनेक प्रचलित भाषा वाले मध्य कालीन भारत में मातृभाषा गुजराती होने पर भी भारत की एक राष्ट्र या अन्त प्रान्तीय भाषा या विश्वभाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता देकर राष्ट्रभाषा के विकास महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्राचीन काल से ही जन प्रचलित भाषा ही धर्म प्रचार का मुख्य साधन रही है । अतः गुजरात प्रदेश से बाहर आने पर ही महामति प्राणनाथ ने यह अनुभव किया कि धार्मिक आख्यानों को श्रोता तथा पाठक अनेक

जातियाँ तथा अनेक भाषाओं के वक्ता है । ऐसे समय में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता प्रतीत हुई जो अन्तप्रान्तीय हो जिसको देश के अधिकाधिक लोग बोल तथा समझ सकें। इस प्रकार उन्होंने एक समूचे राष्ट्र की भाषा की आवश्यकता का अनुभव किया। गोरखनाथ ने भी अपने धर्म प्रचार के लिये जन प्रचलित जनभाषा को ही चुना । अमीर खुसरो ने अपने फारसी ग्रंथ में तत्कालीन भारतीय भाषाओं की गणना की है । उसी विवेचन में हिन्दुस्तान की भाषा को हिन्दुस्तानी (मध्य प्रदेश) भाषा या हिंदवी के नाम से अभिहित किया है। आगे चलकर इसे खड़ी बोली की संज्ञा दी गई। सूफी सन्तों ने भी धर्म प्रचार का माध्यम और साहित्य सृजन का आधार हिन्दी को अपनाया । महाप्रभु प्राणनाथ हिन्दी से हिन्दी से परिचित थे बहुज्ञ होने के कारण वे जानते थे कि विश्व सब प्रदेशों की अलग-अलग भाषाए और बोलियाँ हैं सभी को अपने देश और कुल की भाषा प्रिय होती हैं। अतः उदारवादी दृष्टि कोण रखते हुये बिना किसी भी भाव के सम्पूर्ण विश्व को सम्बोधित करना चाहते थे । फलस्वरूप उन्होंने यह समझा कि देश की समस्त भाषाओं में हिन्दी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जिसे देश के अधिक से अधिक योग बोलते है । हिन्दी में भारत की समन्वयात्म संस्कृति को अभिव्यक्त करने की शक्ति है। तथा इसी सर्व व्यापक भाषा में लोगों के हृदयों को जोड़ने की शक्ति है । जिसकी प्रयुक्ति व्यक्तिगत जनपदीय प्रादेशिक सीमाओं के परे विश्व धर्म और विश्व ब व धुत्व की ओर उन्मुख करता है । प्राणनाथ का कुलजम स्वरूप इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी इस देश की राष्ट्र भाषा के रूप में अन्तप्रान्तीय

व्यवहार के लिये साहित्य सृजन के लिये सर्वव्यापक धर्म के लिये भारत की समन्वयात्मक संस्कृति के लिये सक्षम थी। यह हिन्दी आज आधुनिक हिन्दी और उर्दू दोनों की जननी है। प्राणनाथ की हिन्दी अरबी फारसी के शब्द निसकोंच अपने तद्भव रूप में आते हैं किन्तु मूलरूप में हिन्दी खड़ी बोली के व्याकरण का आधार मिलता है। आज ह हिन्दी भारतीय संघ की राज्यभाषा और राष्ट्रभाषा है। जो कार्य हिन्दी के लिये राष्ट्रभाषा के रूप में महात्मा गांधी ने किया वही कार्य 300 वर्ष पूर्व ।7वीं शताब्दी में महामति प्राण नाथ ने किया था। इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महामति प्राणनाथ का योगदान मध्यकालीन इतिहास में अद्वितीय है।

कीरंतन अनुशीलन

" किरंतन " ग्रंथ महामति प्राणनाथ का आत्मानुभव एंव आत्म साक्ष्य या तत्व है। यह ग्रंथ उनके अपने जीवन काल के व्यापक अनुभव और दूरदर्शिता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसके मूल में आत्मा परमात्मा के शाश्वत सम्बन्धों का अनेक रूपकों में वर्णन मिलता है। धर्म की आवश्यकता व्यक्ति और समाज में क्या है और कितनी है इस व्यवस्था के विरूद्ध ही प्राणनाथ ने अपना स्वर दिया।

महामती वांगमय विशेषकर " कीरंतन " में विभिन्न धर्मों ग्रंथों में निर्दिष्ट अनेक ऋषि- मुनियों और अवतारी पुरुषों, पैगम्बरों फरिश्तों आदि के जो संकेत मिलते हैं। उन्हें न केवल पौराणिक ऐतिहासिक पात्रों के उल्लेख द्वारा निहित आशय को ही स्पष्ट किया है बल्कि पात्रों के चरितों या अवदान के आलोक में उन्होंने अपने दृष्टान्तों का भी स्पष्टीकरण किया है। महामति अपने आराध्य देव अक्षरातीत परमात्मा स्वरूप श्री कृष्ण जी को समस्त अवतारी शक्तियों या प्रतीकों - चाहे वो किसी भी धर्म संस्कृति और परम्परा के प्रतिष्ठातारहे हों- का परम स्त्रोत माना है। त्रिदेव §ब्रह्मा, विष्नु, महेश§ अन्यान्य अवतार परमात्मा के आदेश से आविष्ट शक्तियाँ, पैगम्बर, और फरिश्ते उन्हीं आदि स्त्रोत के विभिन्न रूप संस्कार है। उन्होंने ईश्वर को एक माना है। क्योंकि सत्य हमेशा एक होता है अलग नहीं। वेदों उपनिषदों के बचनों का अभीष्ट आत्म तत्व एंव परमात्म सत्ता अविभाज्य और शाश्वत सम्बन्ध को द्योतित करना है - उन्होंने सभी धर्मों के आन्तिरिक अर्थ एंव आशय को तारतम ज्ञान के माध्यम से निकालने का प्रसंसनीय प्रयास किया है।

वे कहते हैं सदगुरू वही है जो शास्त्रों का प्रमाण देकर यह सिद्ध करें कि सभी एक परमात्मा की ओर लक्षित करते हैं -

शास्त्र ले चले सतगुरू क्सोई
वानी सकल को एक अरथ होई । कि0 4/4

सभी अवतारी पुरूष एक ही परमात्मा की बात कहते हैं । धर्म ग्रंथों का समन्व महामति प्राणनाथ की अमूल्य देन है । अपने जीवन काल में अनेक देशों में भ्रमण करने के कारण अनेक देशों से भ्रमण करके परिचित भी थे । इन सभी देशों में वे भारत भूमि को ही सबसे अधिक महत्व देते हैं । ब्रहमात्माएं ब्रह्मज्ञान एंव स्वंय ब्रह्म भी यहीं अवतरित हुए हैं । भरत भूमि के साथ व्यापक एंव विशाल हिन्दू धर्म का भी उन्हें गर्व था इसीलिए उन्होंने कहा है -

त्रैलोकी में उत्तम खण्ड भरत को
तामे उत्तम हिन्दू धरम । की0 58/4

महामति प्राणनाथ इस जीवात्म और परमात्म बोध के बीच की बिडम्बना को अनादि संघर्ष मानते है और इसको इतिश्री जीवात्मा के समर्पण और आत्म बोध से हो सकती है । अपने परम्परित और रूढ़ रूपक में जीवात्मा की धृष्ठता को माया प्रेरित बताया गया है । मानव मन को घुमाने वाले " शैतान " "इंवलीस " " दज्जाल " नारद जैसे पात्रों को साक्षी द्वारा चरितार्थ किया है। " कीर्तन " में उन्होंने धार्मिक विद्वेष को उभारने के लिये " ईश्वर- का रोजगार" करने वाले या कर्मकाण्ड का विधान करने वाले को दोषी ठहराया है । क्योंकि ऐसे ही पांखडी धर्म को कलंकित और लोकमानस को दूषित कर रहे हैं । महामति प्राणनाथ ने अपने व्यापक भ्रमण और हरिव्दार शास्त्रार्थ प्रसंग में इस चरम विखराव को परिलक्षित किया है । सत्य, परमात्मा, पूजा तिथि ,प्रेम आनन्द,हक , मेहबूव, इश्क, नमाज रोजा, रियाजत और जकात आदि को

प्रतीक रूप में मानकर अभिप्रेत आशय को आत्म धरातल पर प्रतिष्ठित करने का आग्रह भी उन्होंने अपनी वाणी में मुखरित किया है। घर के स्वामी घर में हो तो अन्यत्र तलाशने का उपक्रम व्यर्थ है। अपनी अन्तवृत्तियों को प्रिय के प्रेम में केन्द्रित करते ही अन्तर्मुखी साधना का मार्ग प्रशस्त होता है। महामति इस नश्वर शरीर से जीव को वार-वार चौकस करते हैं। लेकिन अज्ञानी जीव आत्मा पुनः उन्ही योनियों में भटकना चाहती है। विषयों का रस उसे भरमाता रहता है - अज्ञान का अंधकार उसे यह जानने नहीं देता कि उसके उदार प्रियतम स्वंय अपने हाथों में प्रेम सुरा लिये उसे प्रेमोन्मत करने के लिये आतुर हैं। परम प्रियतम § परमात्मा § उन्हें § जीवात्मा को § अपनी चिन्मय प्रेम मदिरा से वेसुधकर " माननी " का पद प्रदान करते हैं। प्रियतम के अनुग्रह में ही उसका सहज स्वाभाविक प्रेम है तभी तो वह राह में पड़ी धूल को भी प्रतिष्ठित कर देना चाहते हैं।

महामति प्राणनाथ ने " कीरतन " में ही नहीं अपने सम्पूर्ण वांगमय में प्रेम के माध्यम से एकेश्वर वाद अद्वैत और तदनुरूप अक्षरातीत की आनन्दपूर्ण सत्ता को निर्देशित करना चाहा है। प्रेम तत्व को ही उन्होंने बौद्धिक और आध्यात्मिक उन्नयन के लिये योग्य और उपादेय बताया है। पूर्ण प्रेम के पात्र में ही प्रियतम § परमात्मा § के प्रेम का अक्षय प्रेम रस समाता है।

जो सुख याथें उपजे सो कहयो न किनहूं जाए।
पात्र होय पूरा प्रेम का, तिनका रस ताही में समाए ।।

कि0 35/31

महामति के कीरतन में नर देह के विषय में उनका आशय जीव सत्ता या देहाकार से नहीं बल्कि उसकी चेतना, अंतरंग भावना और मानसी सेवा समर्पण से है। इस आवश्यक और परिहार्य योग्यता को झुठलाकर जीवधारी

अपनी संकीर्णताओं में खो जाता है और नरदेह रूप में उपलब्ध सुअवसर हाथ से निकल जाता है । इसके अतिरिक्त अहंकार के विषय में भी उन्होंने बताया है है कि यह भी मनुष्य या जीव को अपने निश्चित लक्ष्य से भटकाता है। अतः इसके समान वैरी उन्होंने नहीं देखा । वे कहते हैं -

मोकों मार छुड़ाई बंदगी ,सो भी बुंजरगी इन ।

ऐसी दुसमन ए बुजरगी , मैं देखो न ऐसे दिन ।।   की० 102/9

इस विषय अंहकार की स्त्रोतस्विनी माया ही है। इसी से प्रेरित होकर मनुष्य अपनी सहज पहेचान से विरक्त हो जाता है । फलस्वरूप अंहभाव से केन्द्रित होकर वह विशिष्ट होने के उपक्रम में जुट जाता है । अंहकार अपने साथ कई दुगुर्णों एंव दुरविचारों को लेकर आता है । जागनी का संकल्प तो व्यक्ति की चेतना को उद्‌बुध करना है । तथा उसे निरंकार बनाना है। जागृत जीवात्मा को सांसारिक प्रलोभनों को सहज ही छोड़ देना चाहिये ।

अब छोड़ो रे ज्ञान गुमान मान को , एहीखाड़ बड़ी भाई ।

एक डारी त्यों दूजो डारी, जलाए देखो चतुराई ।।   की० 6/6

" कुंजरक " ही काम क्रोध और अंहकार से जीव को लैस कर देती है और जीव अविक्विवे की दुराचारी बन जाता है । " कुजरगी " महामति द्वारा प्रस्तावित निरभिमान प्रेम और समर्पण का सर्वोत्तम निर्देशन है । महामति माया में पड़ी इस दुनिया के दुर्वह संकट को प्रेम और समर्पण से जीतने का महामंत्र देते हैं । प्रेम हीप्रियतम के प्रति कृतज्ञ § सुकर § निः श्रेयस § गरीब § और धैर्य § सबर § रखने का सम्बल प्रदान करता है । वे कहते हैं -

महामत कई ईमान इशक को, सुकर गरीबी सबर ।

इन विध कहें दोस्ती धनी को,प्यार कर सके त्योंकर ।। की० 102/103

वे स्पष्ट स्वर में कहते हैं प्रेम भरी बानी बोलोगे तो प्रियतम § ईश्वर § का दरवाजा खुला मिलेगा । प्रेम भक्ति के द्वारा ही ईश्वर के दोनों §निर्गुण, सगुण § रूप प्राप्य हैं -

मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुम्हारा काम ।

प्रेमें मगन होइयो, खुल्या दरवाजा धाम ।।

महामति ने परमात्मा के साक्षात्कार के लिये सच्चे प्रेम को अनिवार्य और आरम्भिक आधार बताया है । साधक को अपनी अन्त: सत्ता को परख और पहेचान द्वारा प्रेम को पुष्ट करना चाहिये तभी परमात्मा का दर्शन सुलभ होता है । जीवात्मा के साधक शरीर के साथ ही साथ उसके दुख, विरह , त्याग, समर्पण का आत्म निग्रह भी है । उसके विरह में ही आनन्द है । मिलन के आनन्द की सीमा क्या होगी । जीवात्मा उस अखंड प्रेम विहार की कल्पना एंव सम्भावना से प्रिय विरह में दत्त चित्त हो उठती है । परीक्षा के कठिन क्षणों में भी विरह जनित दुख , दैन्य, ताप वरदान स्वरूप होता है-

मैं वह दुख मांगू पीउ पैं

जो पल- पल रंग चक्दाए ।। की० ।7/।।

इस प्रकार वे बार- बार उसी दुख की मांग करते हैं जिससे प्रिय के प्रति प्रेम पल- पल बढ़ता जाए । इस क्षण भंगुर शरीर में जीव जगकर सनद्ध हो जाए इसके समय भी बहुत कम है । उन्हें निद्रा का सर्वथा परित्याग करके आगे बढ़ना है ।

सूता होय सो जागियों, जागा सो बैठा होय ।

बैठा ठाढ़ा होइयो, ठाढ़ा पांउ धरे आगे सोए ।। की० 86/18

महामति प्राणनाथ के " कीर्तन " में दुख परिणामत: कितना आत्मीय और सुखात्मक है इसे तो स्वत: के अनुभव में ही उतारकर देखा जा सकता है । जामनी की भूमिका दुख, दाह और ताप का निश्चित रूपान्तर अथवा

लक्ष्य है । दुख अनुताप एंव विरह की कसौटी पर खरा उतरने के बाद ही पर-मात्मा की स्वाभाविक सदिच्छा से जब प्रियतम का दर्शन होता है । तब वह असमान्य प्रियतमाओं की तरह सुहागिन हो उठती है । महामति ने "कीरतन" में इस अलौकिक विवाह का सुन्दर वर्णन किया है ।

मैं जो आई व्याहन दुलहे को ,दुलहा आए मुझकारन
बांधि पालव सों पालव, पाट बैठे दुलहा दुलहिन ।। की0 55/5
मंडल अंखड मे माड़वा , चौरी रोपे हैं चार ।
सो थंम थापे थिरकर , कंहू सो तिनको प्रकार ।। की0 55/7

इसी क्रम में महामति ने प्रेमी और प्रेमिका - दोनों के लौकिक और अलौकिक प्रेम एंव विवाह की सार्थक परिणति के साथ दाम्पत्य सूत्र बंधन को यत्र- तत्र प्रस्तुत किया है ।

अपनी अध्यात्मक चिन्तन क्रम को व्यवस्थित करते हुए महामति जारभाव की प्रेम विह्वलता को रखते हुये प्रेम को लोक स्वीकृत प्रदान करते हैं और पुनः चिन्मय धरातल पर प्रतिष्ठित करते है । इस यात्रा में अपनी भावांगना इन्द्रावती के माध्यम से महामति का समर्पण स्त्री सुलभ भाव से पुष्ट होकर समर्पित हो जाता है ।

महामति प्राणनाथ ने अपनी " किरंतन " पदावली में जिसे "ब्रह्मसृष्टि" {प्रेमिकायां अगना } कहते है उसमें प्रतिप्रता का भाव महत्वपूर्ण बताया है। सच्ची- प्रतिव्रता की भांति वह प्रियतम से कभी अलग नहीं होती ।अतः महामति कायही प्रिय का सानिध्य प्राप्त होने पर भी ऐसी अगना {इन्द्रावती} को लोक दायित्व से मुक्त नहीं रखा है । महामति का यही पातिव्रत्य लोक व्रत के सम्मुखीन करता है । उनका प्रेम ही विराट रूप ग्रहण करता है -

धनी मे अरधांग, अंदर मुझ मांही । का0 54/2

इसके अतिरिक्त महामति प्राणनाथ ने कीरंतन में उन वैष्णवों की भर्त्सना करते हैं जो भागवत विरुद्ध आचरण करते हैं । महामति सत्य को प्रकाशित करना चाहते थे, इसके लिये चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े । जो सच के संगी होंगें उन्हें सत के बान अवश्य ही विचलित करेंगें -

सत के साथी को सत के बान चूभसी ।

भक्तिकाल के अवसान एंव औरंगजेब के शासनारम्भ के साथ ही उत्तर भारत में राजनैतिक सामाजिक और धार्मिक संगठनों और संस्थानों का विघटन तेजी से शुरू हो गया था। सत्ताधारी के लिए लोक कल्याण जैसा कोई आग्रह न रह गया था । अत: महामति के जीवन का पूर्वांश राजनैतिक दुरभिसंधियों को देखते ही बीता था । मंगल वादशाह औरंगजेब का कट्टर इस्लाम धर्म भी जुगाए रखना भी आवश्यक था । उन्होंने उनके कुकृत्यों का स्पष्ट वर्णन भी किया है ।

हरद्वार ढहाए उठाए तपसी तीरथ, गौवध कै यों विघन ।
ऐसा जुलम हुंआ जाहेर जग में परकमर न वाधी किन ।।
प्रभु प्रतिमा रे गज पाउ बांधके , घसीट के खंडित कराए ।
फरस बंदी ताको करके, तापर खलक चलाए ।। की0 58/13-15

महामति प्राणनाथ ने अपनी वाणी में विभिन्न मतवादियों , सम्प्रदायों और कर्मकाण्डों को भी सम्मिलित किया हैं । जिसमें देवी देवता, नारदमुनि, गंधर्व , शुकव्यास नवधा भक्ति सांख्य के अनुयायी नवनाथ , गछ चौरासी चारों सम्प्रदाय के साधु, चार आश्रम, चार वर्ण, चार खूटों के सम्प्रदायी , अरहन्ती दसनामी, षष्ट दर्शन , वेदपंडित साकारी निरंकारी आदि सभी को आमंत्रित किया है । इस आरती प्रकरण में उन्होंने सबके मूल रूप का आहवान

किया है । उनका सफ्नों का भारत भी तुलसी के रामराज्य की तरह लगता है-

बाघ बकरी संग चरें ,कोइ न करे किसी सो वैर ।

पसु पंखी सुखें चरें चुगें , छूट गई सबको जेहेर ।।

महामति प्राणनाथ चूंकि गुजरात § सिंध§ क्षेत्र के निवासी थे इसलिये किरंतन के कतिपय प्रकरण उनकी भाव भाषा के अधिक निकट प्रतीत होते हैं । यद्यपि कीरंतन मूल रूप से हिन्दी के समर्थक महामति का तत्कालीन हिन्दी ग्रंथ है परन्तु उसमें गुजराती , पंजाबी खड़ी बोली, ब्रज उर्दू आदि बोलियों का तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव होने के कारण प्रचुर समावेश है । जिनका धार्मिक समन्वय की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान रहा है । इसमें संदेह नहीं कि महामति अपनी समस्त अवधारणाओं में समन्वयात्मक है । उनकी वाणी अपनी भाषा भाषा संरचना में भावात्मक होने के साथ ही ज्ञानात्मक §सूचना-त्मक § भी है । उनकी रचनाओं में अनर्गल भावुकता किशोर मानसिकता का कहीं परिचय नहीं मिलता । इसीलिये प्रेम के धरातल पर भी वह वुद्धिवादी या आत्म विवेक को सर्वाधिक महत्व देते हैं ।

लोक की समस्त पीड़ा , वंचना और अर्जना को महामति जैसे चेतना सम्पन्न प्रगतिशील , क्रान्तधर्मा युग पुरूष ने अपनी सदयता तथा तपश्चर्या से राष्ट्र को एक नया गौरव प्रदान किया । इसीलिये हिन्दू धर्म के अतिरिक्त इस्लाम ही नहीं अपितु सारे धर्म सम्प्रदाय की भाव धारा, चिन्तन पद्धति और भाषा संस्कृति में निहित मूल स्रोतों का विनियोजन किया । "कीरंतन" में अखिल विश्वधर्म की स्थापना का मुखर आग्रह उनके प्रबल राष्ट्र प्रेम से भी पुष्ट और प्रमाणित है । सम्पूर्ण विश्व मंच पर धर्म के सत्य रूप का अभिषेक करते हुये उन्होंने मातृभूमि § भरत खण्ड § में जन्म लेना मोक्ष के चार उपादानों में एक बताया है । तथा चार पदार्थों में इसे प्रमुख साधन बताया है।

इस प्रकार महामति ने कर्म, भक्ति और ज्ञान तीनों के समवाय पर बल दिया है । उन्होंने तीनों नीव की क्रमशः तीन कोटियों के पुरुषार्थ व्रत को भी इंगित किया है-

महामत कहें तिन वास्ते , ए तीनों है शामिल ।

करनी कृपा अंकूर वाके, छिपी रहे न अमल ।।

इस समस्त वैराट में व्याप्त सृष्टि के खेल को अज्ञान ज्ञान और विज्ञान की परिभाषा के अन्तर्गत नियोजित करतेहैं । महामति इस जीवात्मा-परमात्मा के बीच अनादि संघर्ष मानते हैं । इसकी इतिश्री जीवात्मा के समर्पण और आत्म बोध से ही है ।

वस्तुतः " कीर्तन " अपने मूल आशय में जागृत आत्मा के लिये योग्य आह्वान है । अपनी विविधता और व्यापकता में कीर्तन उनके अनुयायियों के लिये हमेशा पूज्य रहा है। निःसन्देह महामति की वाणी बदलते हुये युग की समस्याओं के समाधान के रूप में उपादेय सिद्ध हो सकेगी तथा जन कल्याण हेतु जागरण का संदेश देकर महत्वपूर्ण लक्ष्य की ओर प्रेरित करती रहेगी ?

::- ------ ::-

अध्याय- 1

ध्वनिग्रामिक अनुशीलन

ध्वनि ग्रामिक अनुशीलन

भाषा की लघुतम अर्थ भेदक इकाई को ध्वनिग्राम की संज्ञा दी जाती है । ध्वन्यात्म एवं ध्वनिग्रामिक परम्परा यथा बलाघात-सुराघात, मात्रा तुक , ध्वनि , पद- वाक्य के आधार पर " कीरतन " पदावली में लगभग 40 से अधिक ध्वनिग्रामों की स्थापना की जा सकती है । इसमें कुछ खंडीय ध्वनिग्राम भी है किन्तु खंडतर नहीं है । खण्डीय ध्वनिग्रामों के अन्तर्गत स्वर तथा व्यञ्जन ध्वनिग्राम मिलते है क्योंकि ये ध्वनियाँ स्वल्पान्तर युग्म में आकर अर्थ भेदक होती हैं अर्थात एक समान परिवेश में घटित होकर भी व्यतिरेकात्मक रहती हैं इसीलिए इन्हें ध्वनिग्रामों की संज्ञा दी जाती है ।

स्वरग्राम

मूल स्वर- अ आ इ ई उ ऊ

संयुक्त स्वर- ए ऐ ओ औ

→ ऐ (अ + ए) (ऐ)

औ (अ + ओ) (औ)

उपर्युक्त ध्वनि ग्रामों से ध्वनियों की ध्वन्यात्म प्रकृति उच्चारण, स्थान, प्रयत्न क्षेत्रीय प्रभाव के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। ध्वनिग्रामिक वितरण से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उपर्युक्त स्वर अल्पाधिक रूप से आधुनिक मानक हिन्दी के समान है अतः आधुनिक हिन्दी के संदर्भ में इन स्वरों को मानचित्र में निम्न-

लिखित रूप से चित्रित किया जा सकता है -
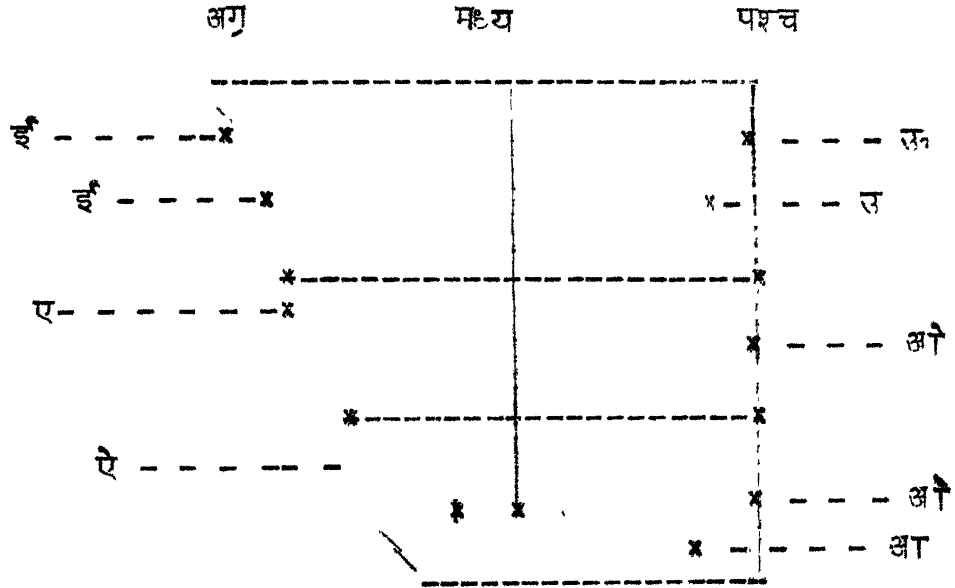
समान ध्वन्यात्मक परिवेश में घटित होने तथा स्वल्पान्तर युग्म अर्थभेदी गुण से समन्वित होने के कारण उपर्युक्त स्वरों की ध्वनिग्रामिक स्थिति आधुनिक मानक हिन्दी में सहज ही सिद्ध हो जाती है । अन्य आ० भा० आ० भाषाओं में भी इनकी यही स्थिति है । अतएव 18 वीं शताब्दी की भाषा में स्वल्पान्तर युग्मों के दृष्टान्त देकर इनकी ध्वनिग्रामिक स्थापना की जा सकती है किंतु विशेष आवश्यकता नहीं होती ।

प्राण नाथ की " कीरतन " पदावली में अनुस्वार विवृत गौण ध्वनिग्राम § *Secondary Phoneme* § के रूप में पाए जाते है। इनकी स्थापना स्वलपान्तर युग्मों के आधार पर सिद्ध ह लेती है ।

व्यज्जन ध्वनि ग्राम

17 वी शताब्दी में आने वाली व्यंजन ध्वनियों का क्रम तथा विवरण इस प्रकार है :-

स्पर्श –	क	ख	ग	घ	
	ट	ठ	ड्	ढ़	
	त	थ	द	ध	
	प	फ	ब	भ	
स्पर्श संघर्षी–		च	छ	ज	झ
अनुनासिक–	ङ	ण	न (न्ह)	म (म्ह)	
पार्श्विक–		ल (ल्ह)			
कुंठित –		र			
उत्क्षीप्त–		ड	ढ़		
संघर्षी–		स	ह		
अर्धस्वर–		य	व		

वर्ण क्रम में " घ " के पश्चात आने वाली ध्वनि "ङ" तथा "झ" के पश्चात आने वाली ध्वनि " " की स्थिति 17 वीं शताब्दी में स्पष्ट नहीं है कहीं कहीं उन प्राचीन लिपियों के स्थान पर अनुस्वार प्रयुक्त हुआ है । फिर भी ये ध्वनियाँ संस्वन के रूप में उच्चारित तो अवश्य होती है । क वर्ग के पूर्व " न " (ङ) के रूप में तथा चवर्ग के पूर्व " न " ध्वनि (ञ) सस्वन के रूप में सुनाई पड़ता है । ये दोनों ही सस्वंन शब्द के माध्यमिक स्थिति में ही प्रयुक्त होते हैं इसीलिये "ङ" तथा "ञ" ध्वनियाँ ध्वनिग्राम न मानी जाकर " न " के सस्वंवन रूप में ही स्वीकृत है । " कीरतन " में प्राप्त सामग्री के आधार पर भी यह सिद्ध हो जाता है ।

यथा –

पतंग–	पतङ्ग	34/9
अंग–	अङ्ग	72/18
संग–	सङ्ग	8/2
जंग–	जङ्ग	60/23

(2) इसी प्रकार मूर्धन्य स्पर्श " ड " तथा मूर्धन्य उत्क्षिप्त "ड" ध्वनियाँ भी आपस में परिपूरक वितरण में आती है । " ड " ध्वनि शब्द के आदि मध्य तथा अन्त्य तीनों स्थितियों में आती हैं जबकि " ड़ " ध्वनि शब्द के मध्य या अन्त्य या उपान्त स्थिति में ही प्रयुक्त होती है - शब्द की आदिम स्थिति में नहीं प्रयुक्त होती । प्रयोग की दृष्टि से " ड " ध्वनि का प्रयोग अधिक अधिक होने के कारण उसे ही ध्वनिग्राम मानगें तथा " ड " को (ड) ध्वनि ग्राम की संध्वनि के रूप में स्वीकार करना न्यायसंगत होगा - । ड़ । (ड)

(3) मूर्धन्य , स्पर्श " ढ " तथा मूर्धन्य अक्षिप्त (ढ़) ध्वनि भी आपस में परिपूरक वितरण में आती हैं । " ढ " ध्वनि शब्द की आदिम व मध्य स्थिति में प्रयुक्त होती हैं और " ढ़ " ध्वनि शब्द के मध्य व अंतिम स्थिति में आती है । इस प्रकार इसमें भी हमने " ढ़ " ध्वनि को ध्वनिग्राम और " ढ़ " को उसकी संध्वनि के रूप में स्वीकार किया है - । ढ । (ढ़)

• य् ज् , व् ब् , ण् न् , श् स् संदेह युग्म भी कहीं- कहीं मुक्त वितरण में आए हैं यथा -

मरयादा	16/4
मरजादा	30/2
वाणी	13/1
बानी	13/21
विसमय	5/1
बिसमय	3/1

प्राण	60/15
प्रान	48/5
चरण	70/13
चरन	4/6

महामति प्राणनाथ की "कीरतन" पदावली के उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृत के तत्सम शब्दों में कहीं- कहीं जिन स्थानों पर य, व, ण, न ध्वनियाँ शब्द के आदि या अन्त्य अथवा उपान्त स्थिति में प्रयुक्त हुई है, परन्तु अर्थ में कोई अन्तर नहीं उत्पन्न हुआ है । इन्हें हम तद्भव शब्द मान सकते हैं । उपर्युक्त सभी संदिग्ध ध्वनियाँ मुक्त वितरण के अन्तर्गत मानी जायेगी । मुक्त वितरण के अन्तर्गत आने वाली ध्वनियाँ एक ध्वनिग्राम के अन्तर्गत होती हैं इसलिये यहाँ पर इनमें से एक को ध्वनिग्राम तथा दूसरी को उसकी संध्वनि के रूप में स्वीकार करना चाहिये ।

यथा :- { ।य। {ज} ।व। {ब} ।ण। {न} ।श। {स} परन्तु ध्वनियाँ भिन्न-भिन्न ध्वनि ग्राम मानी जायेंगी क्योंकि ये सभी ध्वनियाँ भिन्नार्थक, स्वल्पान्तर युग्मों का निर्माण करने की क्षमता रखती हैं ।

मूर्धन्य "ष" ध्वनि का उच्चारण मध्याकाल में {17 वीं शती} महाप्राण कंठ्य ध्वनि "ख" के समान होने लगा था परन्तु मूर्धन्य "ष" का उच्चारण कंठ्य "ख" तथा "ष" दोनों ही रूपों में प्रचलित था । "कीरतन" में तो सर्वत्र "ष" और "श" स्थान पर "ख" {दोख} और "स" {पसु} का ही प्रयोग हुआ है। "ष" और

"ख" ये दोनों ध्वनियाँ एक दूसरे के परिपूरक रूप में ही आती हैं। इनमें अर्थभेदक क्षमता न होने के कारण प्रयोग वृत्तियों की दृष्टि से तालव्य "श" को ध्वनिग्राम और मूर्धन्य "ष" को उसकी संध्वनि के रूप में माना जा सकता है।

कवर्ग के पाँचों अक्षरों में "ङ" तथा चवर्ग के पाँचों अक्षरों में "ञ" ध्वनियाँ केवल शब्द की माध्यमिक स्थिति में ही प्रयुक्त होती हैं या अपने वर्ग के अक्षरों {व्यञ्जनों} के पूर्व संयुक्त रूप में आती हैं। "कीरतन" में दूसरी जगह "ण" और "न" ध्वनियाँ भी प्रयुक्त हुई हैं। "ण" ध्वनि शब्द की आदिम स्थिति में नहीं प्रयुक्त होती। इसी प्रकार "ङ" तथा "ञ" पञ्चमाक्षरों को "न" ध्वनिग्राम की संध्वनि के रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है। क्योंकि प्रयोग की दृष्टि से "न" ध्वनिग्राम का प्रयोग अधिकतर शब्दों में दृष्टि गोचर होता है।

सत्रहवीं शताब्दी के अन्य ग्रंथों की भाँति प्राणनाथ कृत "कीरतन" में भी "न" तथा "म" के महाप्राण रूप {न्ह} तथा {म्ह} भिन्नार्थक स्वल्पान्त युग्म में प्राप्त होते हैं यथा -

दीन-	{ दरसन }	22/8
दीन्हो-	{ आकार }	4/1
तुमारा-		13/5
तुम्हारा-		13/3

यहाँ पर महाप्राण "न्ह" तथा "म्ह" शब्द की माध्यमिक स्थिति में ही प्रयुक्त हुये हैं। "न" तथा "म" ध्वनि शब्द के आदि मध्य

तथा अन्तिम तीनों स्थितियों में प्रयुक्त होते हैं। अतः "न" , "न्ह" और "म" , "म्ह" को अलग- अलग ध्वनिग्रामों के रूप में भी रखा जा सकता है ।

पार्श्विक "ल" का महाप्राण रूप "ल्ह" का प्रयोग भी माध्यमिक स्थिति में होता है । "ल" व "ल्ह" ध्वनि भिन्नार्थक स्वल्पान्तर युग्म का निर्माण नहीं करता वरन् "ल" ध्वनि के परिपूरक वितरण में आता है । अतः "ल्ह" ध्वनि को "ल" ध्वनिग्राम की संध्वनि के रूप में स्वीकार करना उचित होगा। इस प्रकार - " कीरतन" में पाये जाने वाले व्यज्जनों को इस तालिका में स्पष्ट किया जा सकता है:-

	दन्त्योष्ठ्य	दन्त्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य	काकल्य
स्पर्श	प् ब्	त् द्		ट् ड्		क् ग्	
	फ् भ्	थ् ध्		ठ् ढ्		ख् घ्	
स्पर्श संघर्षी					च् ज् छ् झ्		
नासिक्य	म् (म्ह)		न् [न्ह]	ण्	(ञ)	(ङ)	
पार्श्विक			ल् (ल्ह)				
लुंठित			र्				
उत्क्षिप्त				(ड़) (ढ़)			
संघर्षी			स्				ह्
अर्धस्वर	व्				य्		

खंडेतर ध्वनिग्राम

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से इन्हे गौण ध्वनिग्राम भी कहा जा सकता है । ये ध्वनिगाम मूलखंडीय ध्वनि ग्रामों के ऊपर एक अतिरिक्त परत की भांति प्रयुक्त होते हैं ।

§1§ अनुस्वार तथा अनुनासिकता :-

कहा -	§क्रिया§	कहा, आये मौत का दिन	77/8
कहाँ -	§अव्यय§	बिदं उपज्या कहाँ थे	3/2
अधा -	§विशेषण§	अधनिन रहने न पावे	30/5
अंधा -	§ संज्ञा §	मद चढ़यो मोह अंधा	60/10
सत -	§विशेषण§	उपजे सत अलेखे	78/17
संत -	§संज्ञा§	संगत संत	129/14
बस -	§अव्यय§	सब अंगो बस आने	60/7
बंस -	§संज्ञा§	देखी राज बंस	50/5

हिन्दी भाषा में अनुस्वार और अनुनासिकता भी कहीं - कहीं भिन्न- भिन्न ध्वनिग्राम माने जा सकते हैं क्योंकि एक ही ध्वन्यात्मक परिवेश में आकर भी भिन्न- भिन्न अर्थ प्रगट करते हैं। प्रस्तुत संदर्भ में भी कहीं कहीं पर दोनों भिन्न ध्वनि ग्राम के रूप में स्वीकार किये गये हैं क्योंकि ये समान ध्वनियाँ भिन्नार्थक स्वल्पान्तर युग्म का निर्माण करने की क्षमता रखती हैं ।

यथा -

हंस -	§ हसना- क्रिया§	हंस चलतो	55/27
हंस -	§एक पक्षी विशेष§	कोई हंस परम	30/1

अंध	- (विशेषण)	60/10
अंधा	- (संज्ञा)	16/5
रस	- (संज्ञा)	12/4
रास	- (क्रिया)	13/19
दिन	- (संज्ञा) किस दिन	58/10
दीन	- (विशेषण) दीन इष्ट आचार	58/9

उपर्युक्त उदाहरणों से संकेत मिलता है कि कभी-कभी मात्रा के कारण भी अर्थ परिवर्तन हुआ है अतः मात्रा को भी एक गौण ध्वनिग्राम के रूप में ला सकते हैं किंतु यहाँ पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि "अ" और "आ" तथा "इ" और "ई" के बीच का अन्तर विशुद्ध मात्रा का ही नहीं बल्कि उनमें स्थान और संवृति के आधार पर भी अन्तर है।

प्रस्तुत संदर्भ में अनुस्वार तथा विवृत्ति जहाँ एक ही ध्वन्यात्मक परिवेश में आने पर व्यतिरेकात्मक होकर अर्थभेदक होते हैं वहीं उन्हें एक ध्वनिग्राम की संज्ञा दी जाएगी अन्यथा नहीं यही कारण है कि "कीरतन" में गौण ध्वनिग्राम कहा जा सकता है क्योंकि ये कभी व्यतिरेकात्म होते हैं कभी नहीं होते। अनुस्वार के निम्नलिखित छः सस्वन मिलते हैं -

(क) ङ् मिश्रित अनुनासिकता - जिसे कवर्गीय अनुनासिकता कहा जा सकता है।

यथा :-

संगी	-	सङ्गी	25/9
पंखी	-	पङ्खी	55/24

रंग	-	रङ्ग	25/8
अंग	-	अङ्ग	25/5
भंग	-	भङ्ग	34/10
पतंग	-	पतङ्ग	34/9

( ) "ञ" मिश्रित अनुनासिकता - यह चवर्गीय अनुनासिकता है ।

यथा :-

कंचन	-	कञ्चन	63/6
प्रपंच	-	प्रपञ्च	8/2
बंझा	-	बञ्झा	28/4
झांझुए	-	झाञ्झुए	25/2
संझा	-	सञ्झा	12/2

(ण) "ण" मिश्रित अनुनासिकता - यह मूर्धन्य अनुनासिकता है ।

यथा :-

इंड	-	इण्ड	65/18
पिंड	-	पिण्ड	73/11
अखंड	-	अखण्ड	73/11
ब्रहमांड	-	ब्रहमाण्ड	12/4

(न) "न" मिश्रित अनुनासिकता - यह दन्त्य अनुनासिकता है ।

यथा :-

इंद्र	-	इन्द्र	56/8
कंत	-	कन्त	14/11
नंद	-	नन्द	51/8

पंथ -	पन्थ	74/2
संत -	सन्त	11/10
अंत -	अन्त	14/8

(म) "म" मिश्रित अनुनासिकता - इसे पवर्गीय अनुनासिकता कहते हैं ।

यथा :-

सपंदा -	सम्पदा	56/12
पैगबंर -	पैगम्बर	61/13
जोगारंभ-	जोगारम्भ	15/9
प्रतिबिंब-	प्रतिविम्ब	25/2
थंभ -	थम्भ	56/9

(ँ) यह शुद्ध अनुनासिकता है जो उपर्युक्त ध्वन्यात्मक परिवेश के अतिरिक्त प्रयुक्त होती है ।

यथा:-

पयांल -	पयाँल	18/9
पांड -	पाँड	58/15
कां कांच -	काँच	107/1
सांच -	साँच	107/1
आंख -	आँख	60/5

संक्रामक अनुनासिकता - परवर्ती "न" "म" के प्रभाव से उनके पूर्व की ध्वनि अनुनासिक हो जाती है ।

यथा :-

काम -	काँम	66/11

बान	-	बाँन	10/1
नाम	-	नाँम	3/2
ठाम	-	ठाँम	5/8
रोम	-	रोँम	18/21

स्वर ध्वनिग्राम - वितरण

उपर्युक्त क्षेत्रीय स्वरध्वनिग्राम शब्द की आदिम, माध्यमिक और अन्तिम तीनों स्थितियों में मिलते हैं । सब सहध्वनियों § Allophones § सहित इनकी उपस्थिति के उदाहरण मिलते हैं -

स्वर	सहध्वनि	आदिम सदर्भ		माध्यमिक संदर्भ		अंतिम संदर्भ	
अ	अ -	अलत	3/3	निगम	3/2	कुटुम्ब	12/1
	अ -	अगम	5/12	कलस	56/16	दृष्ट	7/14
अं -		अंकूरी	52/19	रंग	5/10	+	

स्वर	सहध्वनि	आदिम सदर्भ		माध्यमिक संदर्भ		अंतिम स्थिति संदर्भ	
	आ -	आग	5/5	साधा	5/5	दवा	56/6
		आतम	7/13	पुकार	4/1	माया	6/1
	आँ -	आँटी	6/2	राँक	16/5	जुबाँ	55/27
	इ -	इल	7/15	तिमिर	56/15	रवि	5/10
		इलक	9/2	लौकिक	52/26	सृष्टि	9/3
	इं -	इन्दु	10/3	अँगिया	46/4		

ई -	ईश्वरी	57/2	प्रवीन	60/11	आरती	56/10
	ईष्ट	6/5	दीया	7/1	रई	3/8
ईं -	+		चींटी	81/9	नांही	3/8
उ -	उपाए	35/12	गुह्य	35/32	पिउ	18/6
	उतपन	35/22	पुरूष	21/6	गुरू	15/12
उं -	उंधाती	77/12	+		पाउं	8/8
ऊ -	ऊकट	20/4	सूर	16/5	हिंदू	55/19
	ऊमर	22/5	तरूण	22/7	त्राजूं	79/22
ऊं -	ऊंन	14/4	दूंदूं	7/9	लेऊं	55/16
ए -	ए	5/9	अनेक	44/3	धरमराएं	17/11
	एक	6/4	मैहेर	82/15	तले	22/5
एं -	+		+		गाएं	7/8
ऐ -	ऐन	63/14	नैन	8/5	लसै	28/1
	ऐला	73/33	रैन	63/7	प्रेमैं	80/1
ऐं -	+		+		हिरदैं	18/33
ओ -	§चहुं§ओर	75/12	लोंक	75/10	दूजो	55/8
	ओलखासी	13/15	झरोखे	76/16	समारो	13/9
ओं -	+		भेजोगा	111/3	लंघों	34/4
औ -	औगुन	77/7	गौरी	54/11	तौ गौ	15/4 14/18
	और	79/23	ठौर	79/2	वैष्नौ	13/6
औं -	+		+		लौं	28/1

ऋ - + मृतक 15/10 +

इन उपरोक्त उदाहरणों के विवेचन के द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं -

§1§ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ में से प्रत्येक स्वर के कम से कम दो सह ध्वनिग्राम अवश्य मिलते हैं, जिनमें से एक निर-अनुनासिक है और दूसरा सानुनासिक रूप है। दोनों एक दूसरे के परिपूरक रूप में आए हैं। क्योंकि दोनों कहीं भी भिन्नार्थक स्वल्पान्तर युग्मों का निर्माण करने की क्षमता नहीं रखते। जहाँ पर भिन्नार्थक स्वल्पान्तर युग्मों का निर्माण करते भी हैं वहाँ अनुस्वार एक खंडेतर ध्वनिग्राम के रूप में माना जायेगा।
यथा :- वंस - वस, अति - अंत, अंधा - अधा।

§2§ मूल स्वर ध्वनिग्रामों में "ड" ध्वनिग्राम की सहध्वनि "ड़" जपित और "ढ" ध्वनिग्राम की सहध्वनि "ढ़" की स्थापना ध्वनिग्रामिक गठन में तो सम्भव नहीं होती। 17वीं शताब्दी के ग्रंथों में "ए" का "अइ" रूप भी कहीं कहीं प्रयुक्त हुआ है। जैसे - सलैया § सलइया § रमैया §रमइया § यद्यपि ध्वनिग्राम "ए" ही इसमें प्रयुक्त है किंतु उच्चरण की दृष्टि से उसका उच्चारण निश्चित रूप से § अइ" ही है जैसे §भैया§ भइया। किंतु "किरतन" में ऐसे प्रयोग नहीं के बराबर है।

§3§ आधुनिक हिन्दी में मूलस्वर ऋ का उच्चारण प्राकृत अपभ्रंश काल में ही लुप्त हो चुका था इसका केवल 17 वीं शता० में सहलिपिग्राम ही मिलता है यथा - मृत्यु, मृतक - इस प्रकार

कुछ विरल शब्दों में ही इसकी कल्पना की जा सकती है । "ॠ" का प्रयोग "रि" में होता था ।

§4§ आधुनिक हिन्दी §खड़ी बोली§ आ॰भा॰आ॰ में "ऐ" "औ" दोनों संयुक्त स्वर के रूप में § अ ए § § अ ओ § उच्चारित होते हैं । किन्तु प्रस्तुत संदर्भ "कौरतन" में "ऐ" "औ" ही प्राप्त होते हैं परन्तु इनका उच्चारण संयुक्त स्वर "अ ए " और " अ ओ" ही माना जायेगा । इसके सानुनासिक निरनुनासिक दोनों ही रूप शब्द के आदि , मध्य और अन्त्य तीनों स्थितियों में मिले हैं ।

व्यञ्जन-वितरण

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से " कौरतन" की भाषा का विश्लेषण करने से यह संकेत मिलता है कि उनके काव्य की भाषा में प्रयुक्त हुए सभी व्यञ्जन ध्वनिग्राम शब्द या अक्षर के आदि मध्य में निश्चित रूप से विद्यमान है । अंतिम स्थिति में व्यञ्जनों की उपस्थिति §कुछ हलन्त् शब्दों को छोड़कर § बहुत निश्चित नहीं होती परन्तु आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की प्रकृति के अनुसार जहाँ अन्त में संयुक्त व्यञ्जन है, उनको छोड़कर सभी शब्द अ व्यञ्जनान्त होते हैं ।

व्यंजन ध्वनिग्राम	आदिम स्थिति	माध्यमिक स्थिति	अंतिम स्थिति
क	कलस 56/7	सकल 59/4	बीतक 52/14
	करन 88/8	नकल 42/3	कैतिक 46/5

व्यंजन ध्वनिग्रा०	आदिम स्थिति		माध्यमिक स्थिति		अंतिम स्थिति	
ख –	खबर	3/2	आखर	29/11	मुख	56/7
	खसम	76/2	अखंड	14/10	लाख	58/17
ग –	गोकुल	11/2	सागर	29/9	नाग	10/3
	गगन	29/9	कागद	55/11	जग	16/7
घ –	घर	1/2	विघन	58/18	बाघ	10/3
	घाट	8/8	संघार	54/8	उलंघ	8/7
च –	चरचा	105/13	विचार	106/12	वीच	118/9
	चरन	112/5	विचल	26/4	सुंच	106/1
छ –	छल	21/4	उछव	13/13	गछ	21/2
	छाया	28/15	पछताप	20/11	मदछा	20/9
ज –	जम	25/5	अजपा	12/5	गज	58/15
	जहान	73/34	नजर	60/3	रोज	72/19
झ –	झूठा	73/45	झांझुए	25/2	दाझ	34/20
	झाल	34/18	झांझर	38/5	बोझ	30/2
ट –	टूट	75/10	नाटक	31/3	निपट	63/10
	टीका	14/14	नटवा	7/5	वैराट	7/5
ठ –	ठाम	5/8	अठार	12/1	पीठ	60/3
	ठाट	52/26	उठाए	58/13	जूठ	13/14

ड –	डर	60/20	खडग	58/2	इंड	60/10
	डाल	7/2	मंडप	5/9	पिंड	5/8
ड़ –	+		पड़ओ	8/2	पेड़	3/4
ढ –	ढहाए	58/13	ढढेंरा	58/6	+	
ढ़ –	+		वाढ़ओ	58/12	दूढ़े	35/10
			पढ़त	57/6	बूढ़	59/8
त –	तरपन	12/2	आतमा	28/21	चित	26/1
	तपसी	58/13	सीतल	27/3	पतित	16/5
थ –	थाल	58/5	अथाने	57/4	समरथ	25/9
	थिर	28/13	पृथम	60/8	तीरथ	58/13
द –	दारूण	54/7	नीदर	25/5	मद	24/6
	दरद	60/20	दुदंभी	57/8	आद	29/9
ध –	धनुर्ष	54/11	अधम	13/18	दूध	51/1
	धन	51/9	विधना	51/2	सुधा	54/5
न –	नर	29/12	वनजारे	6/1	मान	60/8
	नाद	51/8	सिनगार	54/19	सान	60/9
प –	पवन	48/5	निपट	63/10	गोप	51/9
	पार	51/10	अपार	51/5	कूप	27/6
फ –	फरस	58/15	गफलत	34/16	कुलफ	61/5
	फल	69/5	+		+	

	ब –	बाग	34/8	नौबत	56/4	साहेब	42/4
		बकरी	55/20	डूबत	58/19	गरीब	56/16
	भ –	भजन	53/4	सुभग	119/5	लोभ	118/5
		भगवान	27/2	अभंग	76/6	लाभ	92/13
	म –	मगन	29/7	अमर	12/8	स्याम	25/9
		मंगल	55/4	कमला	29/8	भरम	25/7
	य –	या	34/13	कायर	77/13	कोय	34/14
		यमुना	83/13	कायम	77/9	तुरिया	31/10
	र –	राजा	59/6	मरम	20/4	दीदार	58/7
		राई	54/11	पूरन	29/1	सागर	29/9
	ल –	लीला	54/15	जलत	23/2	जल	23/2
		लाखों	58/17	तलवार	53/4	ताल	35/4
	व –	वतन	29/1	अवनी	24/5	जीव	73/16
		विद्या	29/12	दिवस	69/4	भव	21/9
	स –	सत	6/8	असल	73/14	दिल	58/12
		सोभा	76/7	सलाम	76/1	रास	57/7
{श}							
	श –	श्री	57/1	आश्रम	112/3	–	
	ष –	–		कृष्ण	13/19		
ह	ह –	हजार	11/6	महंत	11/1	मोह	29/12
		हकीकत	61/6	कहत	11/2	सनेह	18/19

त्र - त्रिगुन 73/1 शास्त्रन 73/12 सहस्त्र 53/1

ज्ञ -§ग्य§ ग्यान 101/4 विग्यान 107/5 सर्वग्य 59/4

स्वर ग्राम क्रम-§ स्वर संयोग या स्वर गुच्छ §-

जब दो या दो से अधिक स्वर एक ही अनुक्रम में इस प्रकार घटित हों कि उनके मध्य एक- अल्प विवृत के अतिरिक्त अन्य ध्वनि न हो तो ऐसे संयोग को स्वर संयोग की संज्ञा दी जाती है । "कीरतन" में अधिक से अधिक 3 स्वर एक साथ प्रयुक्त हुये हैं। तीन स्वरों का संयोग केवल एक बार तीनों स्थितियों में दो प्रकार के स्वर गुच्छ § स्वर-संयोग § केवल दो बार अंतिम स्थिति में तथा 2 स्वरों के स्वर गुच्छ या स्वर संयोग § 25 प्रकार के स्वर संयोग§ में चार §4§ प्रकार के तीनों स्थितियों में, 7 प्रकार के माध्यमिक स्थिति में तथा 14 प्रकार के स्वर संयोग शब्द के अंतिम स्थिति में मिलते हैं । इस प्रकार "कीरतन" में कुल मिलाकर 28 प्रकार के § 1 + 2 + 4 + 7 + 14 § संयोग प्रयुक्त हुये हैं इनका विवरण इस प्रकार है %-

तीन स्वरों के स्वर संयोग :-§ तीनों स्थितियोंमें - §
-1 बार

	आदिम स्थिति	माध्यमिक स्थिति	अंतिम स्थिति
1-	आइए 60/4	पाइएत 6/7	पाइए 33/10
	आ+इ+ए	आ+इ+ए	आ+इ+ए

तीन स्वरों के संयोग - अंतिम स्थिति में { 3 बार }

	स्वर संयोग	उदाहरण	संदर्भ
1-	आ + इ + ए	पछताइए	30/1
2-	आ + इ + आ	समझाइआ	109/10
3-	ओ + इ + ए	होइए	9/18

दो स्वरों के स्वर संयोग -{तीनों स्थितियों में 4 प्रकार }

स्वर गुच्छ	आदिम संदर्भ		माध्यमिक संदर्भ		अंतिम संदर्भ	
1- आ ए	आए	14/5	ल्याएगा	118/19	अझाए	29/15
2- आ ई	आई	18/24	भाईयों	20/7	देखाई	9/4
3- आ इ	आइआ	18/16	पाइआ	20/10	उठाइ	61/21
4- आ ओ	आओ	19/1	पाओगे	2/4	जलाओ	15/3
5- आ ऊं	+		उठाऊंगी	42/9	चढ़ाऊं	101/9
6- ओ ऊं	+		रोऊंगी	75/4	होऊं	22/8
7- ओ ए	+		होएगी	25/5	होए	9/2
8- ए ओ	+		देओगे	58/10	देओ	89/5
9- उ ई	+		हुईआ	78/10	+	
10- ओ इ	+		रोइआ	75/7	+	
11- ओ ई	+		+		रोई	20/4
12- ऊ ई	+		+		हुई	28/8
13- अ ई	+		+		भई	22/3
14- ई अ	+		+		धनीअ	99/5

15-	इ उ	+	+	पिउ	55/22
16-	ई ए	+	+	दधीए	51/1
17-	इ ए	+	+	भूलिए	15/11
18-	आ उ	+	+	पाउ	5/2
19-	उ आ	+	+	हुआ	55/6
20-	इ आ	+	+	पिआ	29/18
21-	ए ऐ	+	+	जैए	89/1
22-	ए उँ	+	+	देउँ	18/10

संयुक्त व्यंजन या व्यंजन संयोग -

जब दो या दो से अधिक व्यंजन ध्वनिग्राम एक ही अनुक्रम में इसप्रकार संयुक्त हों कि उनके मध्य में कोई स्वर न हो तो उसे संयुक्त व्यंजन या व्यंजन गुच्छ की संज्ञा दी जाती है । "कीर्तन" में कम से कम दो व्यंजनों का ही संयोग मिलता है । अधिकांश व्यज्जन संयोग शब्द की आदिम तथा माध्यमिक स्थिति में पाए जाते हैं । शब्दान्त में व्यंजन संयोग की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि प्रत्येक व्यंजन संयोग के पश्चात किसी न किसी प्रकार स्वर का आना अनिवार्य है । अतएव संयुक्त व्यंजनान्त होने वाले शब्द सदैव स्वरान्त ही होते हैं । व्यंजन गुच्छों को निम्नलिखित दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

(1)- एक रूप या भिन्न वर्गीय व्यंजन संयोग

(2)- भिन्न रूप या भिन्न वर्गीय व्यजन संयोग

1- एक वर्गीय व्यंजन संयोग :-

जब एक व्यंजन ध्वनिग्राम दो बार एक ही अनुक्रम में आता है तब ऐसे व्यंजन संयोग को व्यंजन द्वित्व भी कहते हैं। द्वित्व व्यंजनों में एक ही व्यंजन का दो बार उच्चारण नहीं होता बल्कि एक ही व्यंजन की मध्य की स्थिति या अवरोध की स्थिति प्रलम्बित या दीर्घ हो जाती है। प्रथम अर्थात स्पर्श और अंतिम § उन्मोचन § में कोई अन्तर नहीं आता है। महाप्राणों का इस प्रकार का द्वित्व सम्भव नहीं है। उनमें से प्रथम का उच्चारण अल्पप्राण सम होगा - अतएव ख्ख्, घ्घ्, छ्छ्- उच्चारण में क्ख, ग्घ, च्छ सुनाई पड़ेगा। "कीरतन" में निम्नलिखित व्यंजन द्वित्व मिलते हैं -

स्पर्श व्यञ्जन - द्वित्व :-

क् क्	ककयों	22/9
ट् ट्	मिट्टी	108/29
द् द्	उद्दोत	57/9
त् त्	बत्तीस	58/17
" "	सत्ता	30/5

स्पर्श संघर्षी व्यंजन द्वित्व :-

ज् ज्	हुज्जत	72/18
" "	दज्जाल	60/6

अनुनासिक - व्यंजन- द्वित्व:-

म् म्	मुहम्मद	66/22

पार्श्विक व्यंजन द्वित्व:-

ल् ल्	किल्ली	61/5
ल् ल्	अल्ला	61/7

2- भिन्न वर्गीय संयोग:-

जब भिन्न भिन्न व्यंजन ध्वनिग्राम एक ही अनुक्रम में संयुक्त होते हैं तो ऐसे व्यंजन ध्वनिग्राम को भिन्न रूपीय या भिन्न वर्गीय व्यंजन संयोग कहते हैं।

आदिम स्थिति में व्यंजन संयोग -

संयोग के दूसरे सदस्य के रूप में अधिकांशतः य्, व् , र् आते हैं - (व्यंजन + य, व, र) आदिम स्थिति में संयोग- (व्यञ्जन + य, व, र):-

व्यंजन + य

क् य्	क्यों	16/5
ग् य्	ग्यान	32/1
	ग्यारह	47/6
ज् य्	ज्यों	76/15
त् य्	त्यों	76/15
त् य्	त्याग	64/19
ध् य्	ध्यान	53/1
न् य्	न्यारा	30/8

प्	य्	प्यारा	30/8
व्	य्	व्यास	14/2
व	य	व्याहौ	55/9
ल्	य्	ल्याइया	14/6
स	य	स्याना	24/1

व्यञ्जन + व

ख़्	व्	ख़्वाब	61/13
ग्	व्	ग्वालों	13/14
स्	व्	स्वाद	41/1
द्	व्	द्वादस	15/5
,,	,,	द्वापर	14/8

व्यंजन + र

क्	र्	क्रोध	55/21
,,,	,,	क्रिसन	64/7
ग्	र्	ग्रहिबे	106/2
त्	र्	त्रिलोकी	61/20
प्	र्	प्रमान	30/9
स्	र्	श्रवन	31/2
भ्	र्	भ्रम	5/8
ब्	र्	ब्रज	68/8
म्	र्	मृग	34/2

माध्यमिक स्थिति में व्यंजन संयोग -

माध्यमिक स्थिति में प्रायः सभी व्यंजन संयोग मिल जाते हैं। यहाँ भी दूसरे सदस्य के रूप में अर्धस्वर य् का ही आधिक्य है। प्रथम सदस्य के रूप में य् व् नहीं मिलते।

माध्यमिक स्थिति में -

व्यंजन + य् -

क्	य्	एक्यासी	79/6
ख्	य्	साख्यात्	62/17
,,	,,	देख्या	14/2
ग्	य्	अग्यौर	71/15
,,	,,	लाग्यो	76/20
च्	य्	रच्यो	60/8
ज्	य्	सेज्या	76/7
ट्	य्	प्रगट्या	79/13
ठ्	य्	नाठ्या	20/10
ड्	य्	पकड्यो	25/2
ढ्	य्	ढढ्यो	35/13
त्	य्	जीत्या	16/11
द्	य्	विद्या	28/12
ध्	य्	बाध्यो	39/1
न्	य्	जान्यो	24/1
प्	य्	ढाप्या	60/3

म्	य्	दरम्यान	59/4
र्	य्	डार्या	19/3
ल्	य्	चल्या	76/19
स्	य्	वर्स्या	53/5
ह्	य्	कह्या	14/8

व्यंजन + व -

त्	व्	तत्व	74/8
स्	व्	अस्वार	53/10
द्	व्	हरिद्वार	53/4
ध्	व्	मोरध्वज	55/15

व्यंजन + र -

क्	र्	चक्र	35/15
,,	,,	परिक्रमा	20/3
ग्	र्	संग्राम	59/3
,,	,,	अग्राह	40/2
द्	र्	इन्द्र	12/4
व्	र्	पतिव्रता	36/3
म्	र्	अमृत	20/3

अल्पप्राण + महाप्राण -

क्	ख्	सारख्यात्§साक्खात्§	61/1
च्	छ	अच्छर	3/3
द्	ध्	बुद्धि	77/1

च्	छ्	वृच्छ	68/22

संघर्षी + मूर्धन्य -

ष्	ट्	अष्ट	28/9
		इष्ट	31/8
		सृष्टि	57/2
		गोष्ट	27/7
		कष्ट	101/2

संघर्षी + दन्त्य -

स्	त्	अस्त	34/5
		वस्त	11/4
		भिस्त	79/18
		दोस्त	61/8
स्	थ्	अवस्था	26/3

संघर्षी + नासिक्य -

स् + न्		विस्नु	8/6
स्	न्	अस्नान्	15/4

अन्य व्यंजन संयोग -

क्	त्	मुक्ति	82/4
प्	त्	सप्त	56/5
व्	द्	सव्द	30/11

व ध प्रालब्धा 32/8

न् त अन्तर 35/18

अक्षर

अक्षर एक या अनेक ध्वनियों की वह पूर्ण लघुतम इकाई है जिसका उच्चारण एक झटके या आघात के द्वारा हो सके। एकअक्षर में मुखरता § Sonority § गहवर § Vally § से युक्त या रहित एक शीर्ष § Peak § का होना अनिवार्य है। कुछ अपवादों को छोड़कर व्यावहरिक रूप से किसी शब्द में जितने स्वर होते हैं अतएव उतने ही अक्षर होते हैं या शीर्ष होते हैं। प्रस्तुत संदर्भ "कीर्तन" की भाषा का प्रत्यक्ष उच्चरित रूप नहीं बल्कि लिखित रूप ही दृष्टि गोचर होता है। इसीलिये अक्षर संरचना का पूर्ण वैज्ञानिक विवेचन करने में कुछ कठिनाई प्रतीत होती है। अतः आधुनिक मानक हिन्दी के संदर्भ में- स्वर ध्वनिग्रामों को शीर्ष मानकर निम्नलिखित रूप से अक्षर का स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है -

: स- स्वर , : ब - व्यञ्जन

§1§ केवल एक स्वर ध्वनिग्राम § एक अक्षर का निर्माण कर सकता है।

यथा:-

§1§ - §स§- § आदि§ स्वर

अ/गि/नि 77/8

अ/के/ली 32/5

अ / धम	13/16
आ/ सर	18/13
आ/या	11/2
इ/ हां	16/9
ई/मान	74/37
उ/जास	29/14
ऊं /चा	60/2
ए/	11/10
ऐ/सी	75/14
ओ /	10/4
औ/गुन	77/7

स+व = स्वर+ व्यंजन

अन्/ हद्	15/9
अध्/खिन	30/5
आप/सी	30/4
आद/	28/5
इन/का	16/10
ईस/	61/8
उप/निषद	52/10
उन /	15/4
एह/	30/7
ऐन्/	63/14

3- स व व = स्वर+संयुक्त व्यंजन का प्रथम व्यंजन -

उत् / तम	15/4

4- व स = व्यंजन + स्वर

सा/ गर	10/4
सां/ चा	13/9
नि/सा/नि/यां	77/14
इं/द्रि/यां	82/18
जे/	34/114
के /	34/16
जै/सा	14/14
तै/सा	14/14
सौं/	15/5
गौं/पद	14/18

5- व स व = व्यंजन + स्वर + व्यंजन -

पार/	8/1
नाम/	80/1
जीव/	22/4
गुझ/	31/11
कूप/	27/6
भेख/	27/3
मोह/	75/12
ठौर/	22/5

6- व व स = संयुक्त -व्यंजन + स्वर

क्रि/या	32/3
क्रि/पा	57/1
क्या/	42/15
क्यों/	22/6
द्वा/दस	15/8
व्या/पक	22/6
श्रु/ति	32/2
ग्या/न	73/16

7- व व स व - संयुक्त व्यंजन + स्वर + व्यंजन -

द्वार/	72/2
श्वास /	14/2
स्वांग/	7/6
ब्रोध/	53/2
प्रीत/	77/5
प्रान/	17/1
ग्यान/	32/1
त्रास/	60/6

8- व व व स = तीन व्यंजन संयोग + स्वर -

स/ह/स्त्र	54/13
इ/न्द्री	7/7

****-----****

अध्याय- 2

पदग्राम विचार

पदग्राम विचार

भाषा की लघुतम अर्थवान इकाई को पदग्राम की संज्ञा दी जाती है । " एक पदग्राम के अनेक सहपद होते हैं । ये सहपद परिपूरक वितरण में होते हैं । पदग्राम को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है -

1- आबद्ध पदग्राम

2- मुक्त पदग्राम

पदग्राम पर विचार करने के लिये सर्वप्रथम प्रत्यय प्रक्रिया को जानना आवश्यक होगा -

प्रत्यय प्रक्रिया :-

किसी भाषा के पदात्मक गठन में प्रत्यय विशेष महत्त्व रखते है ।अतः प्रत्यय वह आबद्ध पदग्राम है जो मुक्त पदग्राम से जुड़कर उसके अर्थ को परिवर्तित कर सार्थक हो पाते हैं । प्रत्यय की अपनी स्वतन्त्र सत्ता नहीं होती । इसी लिये स्वतन्त्र रूप से सार्थक न होने के कारण प्रत्यय अमूर्त कहे जाते हैं । कार्य व्यापार की दृष्टि से प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं :-

1- व्युत्पादक प्रत्यय

2- विभक्ति प्रत्यय

व्युत्पादक प्रत्यय-

ये प्रत्यय किसी धातु अथवा प्रातिपादिक के पूर्व या पश्चात् जुड़कर दूसरी धातु अथवा प्रातिपदिक की संरचना करते हैं ।

विभक्ति प्रत्यय

वह प्रत्यय है जो किसी प्रातिपादिक के अन्त में जुड़कर व्याकरणिक रूप को प्रकट करते हैं। विभक्ति प्रत्यय के बाद फिर कोई प्रत्यय नहीं जुड़ता। अतएव इन प्रत्ययों को चरम प्रत्यय कहा जा सकता है। व्युत्पादक प्रत्ययों के साथ विभक्ति प्रत्यय तो आ सकते है किन्तु विभक्ति प्रत्यय के बाद व्युत्पादक प्रत्यय नही आ सकते हैं।

व्युत्पादक प्रत्यय { पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग }

प्रस्तुत सन्दर्भ " कीर्तन" में सभी प्रकार के तत्सम, तद्भव, देशी, तथा विदेशी उपसर्ग मिलते है जिनका विवेचन प्रस्तुत सन्दर्भ " कीर्तन " में निम्नलिखित है :-

1- अ- निषेध- सूचक { तत्सम उपसर्ग }

अ	+ गम	=	अगम	3/2
अ	+ लखं	=	अलखं	2/4
अ	+ सत	=	असत	3/4
अ	+ जान	=	अजान	4/4
अ	+ पार	=	अपार	8/1
अ	+ गाध	=	अगाध	8/4
अ	+ थाह	=	अथाह	14/18
अ	+ नाद	=	अनाद	28/6
अ	+ जपा	=	अजपा	15/9

अ	+	वरन	=	अवरन	28/12

2- अन- (निषेध सूचक) तत्सम उपसर्ग -)

अन्	+	अंत	=	अनत	15/9
अन	+	हद	=	अनहद	15/12
अन	+	अरथ	=	अनरथ	14/12
अन	+	मिलती	=	अनमिलती	35/30
अनु	+	दिन	=	अनुदिन	126/54

3- निर- निषेध सूचक (तत्सम उपसर्ग-)

निर	+	आधार	=	निराधार	12/8
निर	+	आकार	=	निराकार	8/7
निर्	+	विकार	=	निरविकार	54/4
निर्	+	पल	=	निरपल	68/7
निर	+	मल	=	निरमल	9/1
निर	+	आस	=	निरास	18/9
निर	+	गुन	=	निरगुन	22/3

4- नि- निषेध सूचक) तत्सम)

नि	+	गम	=	निगम	3/2
नि	+	संक	=	निसंक	5/3
नि	+	लज	=	निलज	19/2
नि	+	घात	=	निघात	14/19

5- निस्- निषेध सूचक(तत्सम उपसर्ग)

निस + दिन = निसदिन 106/2

6- निह- निषेध सूचक(तत्सम उपसर्ग)

निह + करम = निहकरम 126/121

निह + कलंक = निहकलंक 96/37

7- वि- निषेध सूचक (तद्भव उपसर्ग)

वि + छोह = विछोह 18/8

वि + वाद = विवाद 2/7

वि + रागी = विरागी 27/3

वि + चली = विचली 26/2

वि + राजती = विराजती 56/3

वि + विध = विविध 15/7

वि + देही = विदेही 30/13

8- स- सहित अर्थ द्योतक (तत्सम प्रत्यय)

स + रूप = सरूप 22/7

स + कुंडल = सकुंडल 55/26

स + कुमार = सकुमार 55/26

9- सु- श्रेष्ठता अर्थ द्योतक (तत्सम प्रत्यय)

सु + गम = सुगम 82/15

सु	+	बुध	=	सुबुध	79/8
सु	+	हागिन	=	सुहागिन §सुभागिन§	78/14

10- अप्- हीनता अर्थ द्योतक § तत्सम उपसर्ग §

अप	+	अंग	=	अपंग	99/11
अप	+	आसरे	=	अपआसरे	31/7

11- औ- हीनता अर्थ द्योतक § तद्भव उपसर्ग §

औ	+	गुन	=	औगुन	77/7

12- कु- हीनता अर्थ द्योतक§ तत्सम उपसर्ग §

कु	+	टिल	=	कुटिल	13/17
कु	+	मत	=	कुमत	81/12
कु	+	चल	=	कुचल	119/4
कु	+	करम	=	कुकरम	13/17

13- दु- हीनता अर्थ द्योतक § तत्सम उपसर्ग §

दु	+	काल	=	दुकाल	126/10

14- दुर् - हीनता अर्थ द्योतक § तत्सम उपसर्ग §

दुर्	+	मत	=	दुरमत	14/1
दुर	+	जन	=	दुरजन	46/3

15- भर- पूर्णता बोधक § तद्भव उप सर्ग §

भर	+	पूर	=	भरपूर	52/29

16- प्र- विशेषता बोधक §तत्सम उपसर्ग §

प्र	+	पंच	=	प्रपंच	10/7
प्र	+	मोध	=	प्रमोध	63/8
प्र	+	मान	=	प्रमान	14/4
प्र	+	भु	=	प्रभु	58/15
प्र	+	ताप	=	प्रताप	

17- प्रति- प्रत्येक तथा विलोम बोधक § तत्सम उपसर्ग §

प्रति	+	बिंब	=	प्रतिबिंब	25/2

18- ना- निषेध सूचक § विदेशी उपसर्ग §

ना	+	बूद	=	नाबूद	85/2

19- सन्§सं§- सहित अर्थ बोधक§ तत्सम उपसर्ग §

सं	+	योग	=	सयोग	126/120
सन्	+	मुख	=	सनमुख	7/12
सन्	+	तोष	=	सन्तोष	13/12
सन्	+	कूल	=	सनकूल	78/9

20- बे- निषेध सूचक § विदेशी उपसर्ग §

बे	+	हद	=	बेहद	7/16
बे	+	सुध	=	बेसुध	21/1
बे	+	मुख	=	बेमुख	18/25
बे	+	शक	=	बेशक	108/45
बे	+	सहूर	=	बेसहूर	108/15

21- दूर- निषेध सूचक§ विदेशी उपसर्ग §

दर	+	म्यान	=	दरम्यान	52/25
दर	+	गाह	=	दरगाह	61/9
दर	+	सन	=	दरसन	96/1

22- पर्- प्र-बोधक उपसर्ग §अन्यता बोधक §

पर	+	ब्रम्ह	=	परब्रम्ह	27/7
पर	+	वश	=	परवश	126/91
पर	+	देश	=	परेदश	

23- सत् उत्तम अर्थ§ तदभव उपसर्ग §

सत्	+	गुरू	=	सतगुरू	6/7

व्युत्पादक पर प्रत्यय

यह प्रत्यय किसी संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया प्रातिपदिक में जुड़कर अन्य संज्ञा, विशेषण एवं क्रिया प्रातिपदिक का निर्माण करते है। प्रस्तुत संदर्भ में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से चार प्रकार के प्रत्यय मिलते है :- §1§ तत्सम §2§ तद्भव §3§ देशी §4§ विदेशी

§क§ संज्ञा पर प्रत्यय

§I§ -आ §तद्भव प्रत्यय §

संज्ञा + आ -

मनु	+	आ	=	मनुआ	6/10
विषय	+	आ	=	विषया	60/9
सबद	+	आ	=	सबदा	6/8
कलिंग	+	आ	=	कलिंगा	54/8
कुंलवधू	+	आ	=	कलबधुआ	50/2

§II§ -ओ § तद्भव §

संज्ञा + ओ -

सुपना	+	ओ	=	सुपनो	16/12

विशेषण + ओ -

प्यारा	+	ओ	=	प्यारो	18/4

§III§ -ई § तद्भव §

संज्ञा + ई -

गरीब	+	ई	=	गरीबी	102/12
महन्त	+	ई	=	महन्ती	56/13
वेदान्त	+	ई	=	वेदान्ती	56/13
अर्थव वेद	+	ई	=	अर्थववेदी	56/14
बुजरग	+	ई	=	बुजरगी	62/9
साहेब	+	ई	=	साहेबी	62/2
कैद	+	ई	=	कैदी	56/14

क्रिया + ई -

करना	+	ई	=	करनी	42/1

विशेषण + ई -

बड़ा	+	ई	=	बड़ाई	6/10
भला	+	ई	=	भलाई	6/4
अंधार	+	ई	=	अंधारी	11/8
महाबल	+	ई	=	महाबली	62/2
चतुर	+	ई	=	चातुरी	62/4

§ § अन् § तद्भव §

विशेषण + अन् -

सर्वज्ञ	+	अन्	=	सर्वज्ञन	59/4

क्रिया + अन् -

दरस	+	अन्	=	दरसन	58/10
सुमिर	+	अन्	=	सुमिरन	76/23

{V} आई { तद्भव }

संज्ञा + आई

लोक	+	आई =	लोकाई	19/4
असुर	+	आई =	असुराई	73/30

विशेषण + आई

चतुर	+	आई =	चतुराई	6/6
ठाकुर	+	आई =	ठकुराई	101/6
झूठ	+	आई =	झुठाई	6/3
दुष्ट	+	आई =	दुष्टाई	87/19

क्रिया + आई

देख	+	आई =	देखाई	6/8
रीझ	+	आई =	रिझाई	6/11
उरझ	+	आई =	उरझाई	6/1

{Vi} -ता { तद्भव }

विशेषण + ता

शीतल	+	ता	=	सीतलता	90/10
सुन्दर	+	ता	=	सुन्दरता	93/17

{Vii} -पन { तद्भव }

संज्ञा + पन -

लड़का	+	पन	=	लड़कपन	97/9

विशेषण + पन -

बूढ़ा + पन = बूढ़ापन 59/5

क्रिया + पन -

सीख + पन = सिखावन 63/24

§viii§ - पौ § तद्भव §

§ ix § -आर§ तद्भव §

यह संज्ञा प्रातिपदिक में जुड़कर अन्य प्रातिपदिक का निर्माण करते है जिससे कार्य करने वाला , स्थान का रहने वाला आदि का बोध होता हैं :-

संज्ञा + आर -

दाता + आर = दातार 51/9

गांव + आर = गवांर 4/7

भंडा + आर = भंडार 51/9

§ x § आरी§ तद्भव §

विशेषण + आरी-

अंध + आरी= अधारी 11/8

§ *i § -आस् § तद्भव §

विशेषण + आस -

मीठा + आस = मिठास 18/23

§ ख § विशेषण बोधक प्रत्यय

§ i § - ई § तद्भव §

संज्ञा + ई -

संसार + ई = संसारी 11/9
प्रकास + ई = प्रकासी 52/20
वैराग + ई = वैरागी 103/1
परख + ई = पारखी 15/5
अनुभव + ई = अनुभवी 56/9
दरसन + ई = दरसनी 57/3
उपासना + ई = उपासनी 56/13
महाबली + ई = महाबली 60/19

§ ii § - इत § तद्भव §

खंड + इत = खंडित 58/15

§ iii § § तद्भव §

संज्ञा + वन्त

कुल + वन्त = कुलवन्त 126/6
धन + वन्त = धनवन्त 13/10

विशेषण + वन्त -

बुध	+	वन्त	=	बुधवन्त	14/8

§ iv § -वत् § तद्भव §

संज्ञा + वत् -

नट	+	वत	=	नटवत	7/5

§ v § -सा § तद्भव §

संज्ञा + सा -

मन	+	सा	=	मनसा	8/9

§ vi § -सौ § तद्भव §

सर्व + सौ -

आप	+	सौ	=	आपसौ	61/17

§ vii § - ता § तद्भव §

क्रिया + ता

दा	+	ता	=	दाता	51/9
कर	+	ता	=	करता	86/4

§ viii § - वट § तद्भव §

विशेषण + वट -

नील	+	वट	=	नीलवट	114/3
रज	+	वट	=	रजवट	17/7

(ix) - वटी (तद्भव)

विशेषण + वटी -

हर + वटी = हरवटी 112/3

(x) अवर (तद्भव)

विशेषण + अवर

जोर + अवर = जोरावर 1866

(xi) - हार (तद्भव)

क्रिया + हार -

रचन + हार = रचनहार 13/5

नाचन + हार = नाचनहार 57/6

(xii) - दार (तद्भव)

संज्ञा + दार

सिर + दार = सिरदार 57/2

-- कारी आज्ञा + कारी = आज्ञाकारी 60/15

- वर (विदेशी प्र०)

दिल + वर = दिलवर 52/3

लघुता वाचक संज्ञा :-

(i) - इया - (तद्भव)

संज्ञा + इया-

निगम + इया = निगमिया 126/57

भ्रमर	+	इया	=	भ्रमरिया	74/2

विशे -- इया-

बुजरब	+	इया	=	बुर्जरिगिया	72/4
झलहल	+	इया	=	झलहलिया	56/5

{ii} संज्ञा + ई

रैन	+	ई	=	रैनी	34/9

{iii} रा { तद्‌भव प्रत्यय }

संज्ञा + रा

जीव	+	रा	=	जीवरा	2/1

{iv} र { तद्‌भव प्रत्यय }

संज्ञा + र

नींद	+	र	=	नींदर	25/5

{v} ड़ा { तद्‌भव प्रत्यय }

संज्ञा + ड़ा -

मोह	+	ड़ा	=	मोहड़ा	34/17
जीव	+	ड़ा	=	जीवड़ा	15/4
सुख	+	ड़ा	=	सुखड़ा	35/30

विशे 0 + ड़ा

मीठ	+	ड़ा	=	मीठड़ा	34/17
पापी	+	ड़ा	=	पापीड़ा	54/5

§Vi § तद्भव प्र० §

संज्ञा + ड़ी

रात	+	ड़ी	=	रातड़ी	14/6

विशे० + ड़ी

मोठ	+	ड़ी	=	मोठड़ी	35/17
प्रीत	+	ड़ी	=	प्रीतड़ी	43/1

§Vii§ -ड़े § तद्भव §

संज्ञा + ड़े -

दुख	+	ड़े	=	दुखड़े	35/6
फूल	+	ड़े	=	फूलड़े	* 35/2
वैरी	+	ड़े	=	वैरीड़े	35/4

§Viii§ -इका § तद्भव §

संज्ञा + इका -

प्रनाली	+	इका	=	प्रनालिका	73/6

§IX§ -क § तद्भव §

विशेषण + क -

रंच	+	क	=	रंचक	14/8

:::---- :::

अध्याय- 3

संज्ञा

संज्ञा

पदग्रामिक सरंचना की दृष्टि से " कीरतन " में दो प्रकार के संज्ञा प्रातिपदिक मिलते हैं ।

1- मूल संज्ञा प्रातिपदिक

2- व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिक

<u>मूल संज्ञा प्रतिपदिक :-</u>

वे पद जिनमें कोई संज्ञा वाचक व्युत्पन्न प्रत्यय नहीं जुड़ता अर्थात अपने मूल रूप में ही वे सं ज्ञा (पदतालिका) के अन्तर्गत आते हैं ।

यथा - राम, काम, भरम, नाम ।

<u>व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिक :-</u>

वे पद जिनका एक या एक से अधिक संज्ञा वाचक व्युत्पन्न प्रत्यय जोड़कर संज्ञा प्रातिपदिक का निर्माण किया जाता है ।" कीरतन" में संज्ञा, विशेषण क्रि-या पदों में आ - ई - आई - इया - ता- अन आर -रा- ड़ा - क इत्यादि व्युत्पादक प्रत्यय जोड़कर व्युत्पन्न संज्ञा प्रतिपदिकों को निर्मित किया गया है ।

यथा - ठकुराई, संसारी, सबदा आदि । इनके संबंध में विस्तृत विवेचन पिछले अध्याय (प्रत्यय प्रक्रि0) में किया जा चुका है ।

<u>अन्त्य ध्वनिग्राम के अनुसार संज्ञा प्रातिपदिकों का वर्गीकरण :-</u>

संज्ञा- सर्वनाम, विशेषण और क्रिया पदों के अन्त में विभक्ति प्रत्यय लगकर व्याकरणिक संबंधों का बोध कराते है । जिन

भी महत्वपूर्ण होती है । अतएव प्रस्तुत संदर्भ में अन्त्य ध्वनि ग्राम के अनुसार संज्ञा प्रातिपदिकों का वर्गीकरण प्रस्तुत करना समुचित होगा। " कीरतन " में जिन पदों के अन्त में संयुक्त व्यंजन व ध्वनि अथवा जिस पद के उपान्त में अनुस्वार युक्त पद आया है उस पद को स्वरान्त ही माना गया है शेष पद जिनका अन्त संयुक्त व्यंजन में नहीं हुआ है उन्हें अधिकांशत: व्यंजनान्त माना गया है ।

पदान्त में प्रयुक्त स्वर ध्वनिग्रामों की दृष्टि से "कीरतन" में प्राय: प्रत्येक स्वर में अन्त होने वाले प्रातिपदिक निम्नलिखित है -

अकारान्त प्रातिपदिक

अन्त्य स्वर	प्राति0	सन्दर्भ
अ	अंग	15/13
	रंग	5/6
	कंस	14/11
	बंध	6/2
	कुंड	12/2
	सिंध	3/1
	पंथ	8/8
	असंग	29/5
व्युत्पन्न	अखंड	14/10
	अनन्द	80/7
	प्रपंच	8/2

आकारान्त	संज्ञा प्राति०	सन्दर्भ
आ-	ब्रह्मा	13/14
	विरला	8/1
	देवता	113/5
	तमासा	5/1
व्युत्पन्न -	अजपा	12/5
	सबदा	4/3
	मनुआ	7/14

इकारान्त	संज्ञा प्राति०	संदर्भ
इ -	मुक्ति	12/6
	दृष्टि	8/3
	सृष्टि	3/4
व्युत्पन्न-	प्रकृति	~~3/4~~ 22/2
	जगपति	~~22/2~~ 16/6
	(जगपति)	

ईकारान्त	संज्ञा प्राति०	सन्दर्भ
ई-	बानी	13/3
	सांची	6/11
	साईं	5/3
व्युत्पन्न -	अजाड़ी	34/17
	अनमिलती	35/30
	बिछोही	40/4
	भागवंती	9/3

अन्त्य स्वर	संज्ञा प्राति०	सन्दर्भ
उकारान्त-		
उ	पिउ	18/6
	पाँउ	8/8
	गुरू	7/17
	अजु	13/20
व्युत्पन्न -	महाविष्नु	74/24
	सतगुरू	52/1
ऊकारान्त-		
ऊ -	हिन्दू	58/4
	दारू	18/1
	तराजू	79/26
व्युत्पन्न-	भोगवंसू	126/23

अन्त्य स्वर	संज्ञा प्राति०	संदर्भ
एकारान्त		
ए-	ताले	17/3
	हैडे	42/7
	बनजारे	6/1
व्युत्पन्न-	मनुए	7/1
	महापुले	14/8
	सुकें	14/3

ऐकारान्त-	संज्ञा प्राति०	सन्दर्भ
ऐ-	ससै	2/3
	हिरदै	23/3
व्युत्पन्न -	द्वैते	30/12
	प्रेमै	5/13
	संदेसै	14/6

ओकारान्त	संज्ञा प्राति०	सन्दर्भ
ओ-	साधो	5/1
	गिरो-§गिरोह §	121/13
व्युत्पन्न-	सुपनो	16/12

औकारान्त	संज्ञा प्राति०	संदर्भ
औ -	वैस्नौ	13/6
	गौ	14/18

<u>व्यञ्जनान्त प्रातिपदिक</u>

§ कीरतंन " में निम्नलिखित व्यञ्जनांत प्रातिपदिक मिलते हैं —

अन्त्य व्यंजन	स०प्रतिपदिक	सन्दर्भ
- क	पलक	5/2
	नाटक	8/7
	बीतक	29/16
- च	कांच	56/9

{56}

-ट	वैराट	7/5
	प्रगट	7/13
	नट	5/3
-त	असत्	3/3
	पात	7/2
	साख्यात	3/5
	जात	12/1
-प	ताप	11/11
	सरूप	3/18
	स्यानप	18/32
-ख	अलख	2/1
	साख	6/3
	दुख	18/6
-छ	[illegible]	
	गछ	४०/7
-ठ	जूठ	13/14
	झूठ	6/3
-थ	तीरथ	12/2
	पदारथ	18/11
-फ	कुलफ	[illegible]
	मुसाफ	108/19

-ग	बाग	34/8
	खाग	10/3
	जुग	14/4
-ज	कारज	10/6
	आचरज	14/4
	अकाज	18/17
- ड	+	
- द	सबद	24/5
	रबद	7/8
	बेहद	7/1
-ब	कतेब	3/2
	हबीब	18/3
	हिसाब	61/19
-घ	बाघ	10/3
-झ	बोझ	5/1
	गुझ	35/32
-ढ	+	+
-ध	सिध	8/4
	साध	8/4
	अगाध	8/4
	जुध	16/9
-भ	थोभ	5/9
	गरभ	13/21

-ल	गोकुल	11/2
	पल	4/1
	खेल	3/2
-र	अंकूर	29/18
	संसार	11/10
	नर	28/12
-ड़	कमाड़	93/7
	दारूड़	63/5
-ढ़	मूढ़	4/9
	हढ़	25/9
-स	आस	8/9
	विलास	14/10
	फाँस	18/9
-ह	अथाह	14/18
	सदेंह	30/7
-य	विसमय	4/1
	भय	31/7
-व	दानव	28/11
	उछव	13/13
- न	सुपन	3/4
	भजन	5/3
	ज्ञान	7/2
	गन	7/8

-म	निगाम	3/2
	गाम	5/8
	मरम	5/4
-न्ह	चीन्ह	15/11

लिंग

सम्पूर्ण सृष्टि में जड़ और चेतन दो प्रकार के पदार्थ पाए जाते हैं। लिंग की दृष्टि से चेतन पदार्थों के तीन भेद होते है - पुलिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसक लिंग । नपुंसक लिंग मध्यकाल के पूर्व ही प्राचीन में लुप्त हो चुका था हिन्दी में लिंग निर्णय दो प्रकार से किया जा सकता है :-

《1》 शब्द के अर्थ से ।

《2》 शब्द के रूप से ।

बहुधा प्राणि वाचक शब्दों का लिंग के अनुसार और अप्राणि-वाचक शब्दों का लिंग रूप के अनुसार निश्चित करते हैं । संज्ञा प्राति-पदिक पुलिंग या स्त्रीलिंग के रूप में आते हैं । जिन प्राणिवाचक संज्ञाओं से जोड़े का ज्ञान होता है उसमें पुरूष बोधक संज्ञाएं से जोड़े का ज्ञान होता है उसमें पुरूष बोधक संज्ञाएं 《 पुलिंग 》 और स्त्री-बोधक संज्ञाएं 《 स्त्रीलिंग 》 होती है, जैसे :- पुरूष, घोड़ा , मोर पुलिंग है और स्त्री, घोड़ी , मोरिनी इत्यादि शब्द स्त्रीलिंग हैं।

स्वरान्त पुलिंग प्रातिपदिक

अन्त्य स्वर	प्रातिपदिक	सन्दर्भ

अन्त्य स्वर	प्रातिपदिक	सन्दर्भ
	बंधा	5/4
	अंधा	10/7
-आ	ब्रहमा	7/5
	देवता	113/5
	पिया	60/3
-इ	रवि	5/10
	शशि	5/10
	दधीचि	55/15
-ई	साईं	5/3
	ग्यानी	8/3
-उ	विष्नु	8/6
	गुरू	3/7
	पाँउ	8/8
-ऊ	हिन्दू	58/4
	तराजू	79/26
	पसू	55/24
-ए	मनुए	7/1
	बनजारे	6/1
	पोते	7/4
-ऐ	हेडै	42/7
	ससै	5/6
	ढेतै	30/12

अन्त्य स्वर	प्रातिपदिक	सन्दर्भ
-ओ	सोधो	5/12
	पैड़ो	6/7
-औ	बैस्नौ	13/6

<u>व्यज्जनान्त पुंलिंग प्रातिपदिक</u>

अन्त्य व्यंजन	प्रातिपदिक	सन्दर्भ
-क	सेवक	7/10
	आसक	7/10
	हक	94/6
-च्	सांच	2/3
	नाच	7/3
-ट्	ठाट	55/8
-त्	सत	6/8
	अक्षरातीत	3/10
	महामत	59/8
-ख्	अलख	2/3
	अन्तरीख	2/3
-छ्	मगरमच्छ	74/1
	गछ	82/5
-प्	मंडप	11/11
	जप	12/3

-ठ्	झूठ	6/3
	पीठ	42/2
-थ्	नाथ	15/7
	अरथ	7/11
-प्	कुलप्	60/8
-ग्	नाग	34/8
	मृग	3/7
	जग	
-ज्	बृज	14/11
	सूरज	30/7
-द्	प्रहलाद	55/15
	कागद	55/4
	मरद	20/8
	वेद	3/2
-ब्	साहेब	18/30
	महबूब	37/4
-घ्	बाघ	10/3
-झ	बोझ	5/1
	बुझ	31/11
- ड्	+	+
-ध्	बुध	7/13
	साध	5/7

-भ्	बल्लभ	13/11
	लाभ	89/10
-ल्	खेल	3/3
	मंडल	3/3
	काल	22/7
-र्	युधिष्ठर	55/15
	पार	8/1
	पत्थर	25/4
-ड़्	पेड़	3/4
	पहाड़	5/10
-ढ़्	मूढ़	4/9
-स	व्यास	7/5
	रास	55/8
	सीस	55/9
-ह्	सनेह	18/19
	देह	19/19
-य्	उपाय	न 6/10
-व्	देव	28/11
	सिव	7/13
	पालव	54/5
-न्	चरन	4/6
	नयन	8/5

-म्	नाम	14/15
	ठाम	5/3
	भरम	6/5
-ण्	ब्राह्मण	51/7
	पुराण	126/14
	प्राण	51/7
-न्ह्	चीन्ह	15/11
-म्ह्	ब्रह्म	51/10

स्वरान्त स्त्रीलिंग प्रातिपदिक

अन्त्य स्वर	प्रातिपदिक	सन्दर्भ
-अ	अधांग	74/35
	बरंग	76/15
-आ	अबला	9/1
	माया	6/1
	दया	59/7
-इ	सक्ति	29/11
	भक्ति	13/15
	मुक्ति	12/6
-ई	रूई	7/1
	साँची	6/11
	जोगिनी	28/3
-उ	वस्तु	125/11

-ए	आग्रे	60/5
	लहेरे	60/17
	कटाक्षे	93/15
-ऐ	+	+
-ओ	+	+
-औ	गौ	58/13
	लौ	48/5

<u>व्यञ्जनान्त स्त्रीलिंग प्रातिपदिक</u>

अन्त्य स्वर	प्रातिपदिक	सन्दर्भ
-क्	बीतक	52/14
	~~के~~ विवेक	29/16
-च्	लालच	82/20
-ट्	बाट	20/4
-त्	प्रीत	45/1
	रीत	16/2
	रात	14/7
-ध्	सुध	11/4
	बुध	73/8
	व्याध	60/10
-ख्	आँख	20/9
	रेख	28/5
-छ्	+	+

-ठ्	गाँठ	126/73
	पीठ	42/2
-थ्	मनोरथ	52/15
-प्	-/-	-/-
-ग्	तरंग	31/5
	आग	4/2
- ज्	लाज	126/102
	सेज	35/2
-ड़्	खाड़	128/31
	हाड़	128/31
-द्	नींद	2/4
	मरजाद	60/17
-ब्	किताब	108/42
-ध्	-/-	-/-
-झ्	बाँझ	34/20
	दाझ	77/8
-ढ्	-/-	-/-
-भ्	-/-	-/-
-ल्	मूल	52/12
-न्	अगिन	34/20
	दुलहिन	42/16
-म्	भीम	75/10

-र्	नीर	74/13
	नार	54/4
	खबर	3/2
-स्	आस	8/9
	दिस	60/9
-ह्	रूह	111/1
	राह	63/3
-य्	विषय	60/9
- व्	सेव	29/8

स्त्रीलिंग प्रत्यय-

महामति प्राणनाथ की " कीरतन" पदावली में निम्नलिखित स्त्रीलिंग प्रत्यय मिलते हैं :-

प्रत्यय	मूल प्रातिपदिक		प्रत्यय		व्युत्पन्न स्त्रीलिंग प्रा0	संदर्भ
-ई	लड़का	+	ई	=	लड़की	108/44
	झूठा	+	ई	=	झूठी	73/19
	दीवाना	+	ई	=	दीवानी	20/2
	अजान	+	ई	=	अजानी	34/17
	अधार	+	ई	=	अधारी	11/8
	अलाप	+	ई	=	अलापी	15/6
-नी	मोह	+	नी	=	मोहनी	4/20

	काम	+	नी	=	कामनी	26/2
	जोग	+	नी	=	जोगनी	2/3
-इन	दुलहा	+	इन	=	दुलहिन	24/16
	सुहाग	+	इन	=	सुहागिन	84/7
-इनी	सुहाग	+	इनी	=	सुहागिनी	74/30
-इया	अग	+	इया	=	अगिया	46/4
-इका	प्रनाली	+	इका	=	प्रनालिका	73/6
-आ	स्याम	+	आ	=	स्यामा	57/1

बचन-

संज्ञा विभक्ति- वहुवचन बोधक विभक्ति प्रत्यय:-

संज्ञा के मूल रूप एक बचन में बहुबचन प्रत्यय लगाकर मूल रूप तथा विकृत रूप बहुबचन के रूप निर्मित किये जाते हैं। कीरतन में बहुवचन बोधक निम्नलिखित प्रत्यय प्राप्त होते हैं :-

मूल रूप बहुबचन बोधक प्रत्यय -

1- प्रत्यय {शून्य}

∅	पण्डित	+ ∅	=	पण्डित	=	पण्डित {सुनैं}	8/3
,,	भवन	+ ∅	=	भवन	=	भवन {चौदे}	10/8
,,	अवगुन	+ ∅	=	अवगुन	=	{कोट} अवगुन	42/10
,,	खेल	+ ∅	=	खेल	=	खेल {अनेक}	31/14
,,	माला	+ ∅	=	माला	=	{सौ} माला	15/5
,,	जीव	+ ∅	=	जीव	=	{चौरासी} जीव	28/13
,,	तत्व	+ ∅	=	तत्व	=	{पाँचो} तत्व	8/2

स्त्रीलिंग व्यज्जनान्त संज्ञा प्रातिपदिक में "ए" जोड़कर बहुबचन के रूप निर्मित होते हैं :-

- ऐं	चौट	+	ऐं	=	इन चौटैं अगिन लगाईं	16/12
	जुग	+	ऐं	=	जुगै लिए सब जीत	60/13
	बात	+	ऐं	=	ए बातैं सब पूर्वक	13/10

पुलिंग आकारान्त रूपों में ए- ऐ प्रत्यय लगाकर बहुवचन के रूप निर्मित होते हैं :-

-ए	अन्धा	+	ए	=	अंधे	=	अंधे अग्यानी भरमये भूले	9/2
	ताला	+	ए	=	ताले	=	ए दोउ ताले	11/9
	दरवाजा	+	ए	=	दरवाजा	=	दोउ दरवाजे	11/9
	बेटा	+	ए	=	वेटे	=	बेटे चले जायं	31/6

आकारान्त विशेषण तथा क्रिया में बहुबचन का बोध कराने के लिये अधिकांशत: यही {ए} प्रत्यय प्रयुक्त होता है :-

क्रिया में बहुबचन बोधक प्रत्यय :-

-ए	गया	+	ए	=	गये	गये कलकत्ते नरनार	4/8
	भया	+	ए	=	भये	सो तीनों रोसन भये	79/19
	मिला	+	ए	=	मिले	सब आए मिले	61/16
	उडा	+	ए	=	उड़े	मोह अहं सवै उड़े	22/3

विशेषण में बहुबचन का बोध :-

- ए	झूठा	+	ए	=	झूठे	होत हैं झूठे तमासे	30/4

न्यारा + ए = न्यारे न्यारे होत है तीन देह 32/8

उजियारा + ए = उजियारे जो खेलत है उजियारे 7/12

-ओं § अनुस्वार § -

बड़का -- ए = बड़कों का ए हाल 31/5

स्त्रीलिंग इकारान्त रूपों में § आं § इंया प्रत्यय जुड़ता है -

- यथा-

- ओं -	गोपी + §ओं§	= गोपियों	33/9
- आं -	जाली + §आं§	= जलियां छज्जे ग्वास	34/4
- इयां -	लाड़ली + इया	= लाड़लियां लाहूत की	71/1

विकृत रूप बहुबचन बोधक प्रत्यय -

" कीरतन " में मूलरूप एक वचन के रूपों में निम्नलिखित प्रत्यय प्रयुक्त हुए है जो पुलिंग तथा स्त्रीलिंग शब्दों में विकृत रूप वहुवचन का वोध कराते है यथा :-

प्रत्यय

पु० अन्	शिष्य + अन	= शिष्यन	शिष्यन सहित	27/6
	पतित + अन	= पतितन	मै पतितन को पातसाह	16/4
	और + अन	= औरन	औरन को निदे	71/8
	बात + अन	= वातन	बातन मोहोल रचे	32/1
	हिन्दू + अन	= हिन्दअन	किताबे हिन्दुअन की	97/15

(स्त्री0)	गली	+	अन	=	गलियन	गलियन देखे दुरजन	44/3
	सखी	+	अन	=	सखियन	सूरा तन सखियन का	90/27
	इन्द्री	+	अन	=	इन्द्रियन	इन इन्द्रियन की	42/4
- आं	बात	+	आं	=	बातां	बातां करसी	71/3
	आख	+	आं	=	आखां	आखां खोल	111/1
-ओं	लोक	+	ओं	=	लोकों	चौदह लोकों	57/8
	बात	+	ओं	=	बातों	ए विमल बातों	4/3
	नैन	+	ओं	=	नैनों	नैनों नींद न आवे	26/3
	भाई	+	ओं	=	भाइयों	कहे सब भाइयों	75/7

केवल अनुस्वार (ं) :-

चरें	+	ं	=	चरें	वाघ बकरी सब सग चरें	55/20
खेलें	+	ं	=	खेलें	खेलें पिउ गोपीजन	14/6
लेहेरें	+	ं	=	लेहेरें	लेहेरें पड़ियां	~~35~~ 34/4
लोभें	+	ं	=	लोभें	लोभें लज्जा लिये	88/12

संज्ञा रूपों में कुछ विशिष्ट शब्द जोड़कर भी बहुवचन का बोध कराया जाता है ।

संज्ञा- शब्द

- जन	गुणी	+	जन	=	गुणी जन आए	51/7
	गोपी	+	जन	=	खेलें पिउ गोपीजन	14/6
	साधू	+	जन	=	आए साधू जन	56/12

कारक रचना-

संज्ञा § सर्वनाम, विशेषण § पद वाक्य में अन्य पद ग्रामों से सम्बंध प्रगट करने के लिए जो रूप ग्रहण करता है । उस रूप को कारक की संज्ञा दी जाती है । संस्कृत काल में एक संज्ञा पद के 24 भिन्न - भिन्न रूप बनते थे, प्राकृत काल में इन रूपों की संख्या 13 और अपभ्रंश काल में 5 यए 6 ही रह गयी । आधुनिक भरतीय भाषाओं के विकास के साथ ही साथ केवल दो रूप मिलने लगे । संस्कृत काल से लेकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल तक भाषा अपने प्राचीन साश्लिष्ट रूप के स स्थान पर विश्लेषणात्मक रूप धारण करती गई । इसके पीछे सरली- करण की प्रवृत्ति प्रेरक रूप में रही है । अब संज्ञा पद के दो ही रूप मिलते हैं -

§1§ मूल रूप या निर्विभक्ति रूप अथवा शून्य प्रत्यय युक्त रूप जो प्राचीन कर्ता कारक में प्रयुक्त होता रहा।

§2§ विकृत रूप या § विकारी रूप § जिसमें अन्य कारकों की विभक्तियाँ लगाई जाती थीं ।

कारक रचना की दृष्टि से " कीरतन " की भाषा में दो पद्धतियाँ मिलती है :-

1- सयोगी कारक विभक्ति की पद्धति

2- वियोगी कारक विभक्ति पद्धति

कारक विभक्ति

1- निर्विभक्तिक या संयोगी विभक्ति-

-कर्ता- विभक्ति प्रत्यय					उदाहरण	सन्दर्भ
§ संज्ञा + शून्य §						
सतगुरू	+	∅	=	सतगुरू	- सो सतगुरू दिया बताय	35/23
कमला	+	∅	=	कमला	- करत कमला जाकी सेव	29/8
जीव	+	∅	=	जीव	- माया जीव न जाने कोय	18/24
पिया	+	∅	=	पिया	- महामत यामें खेलत पिया संग	23/8
साईं	+	∅	=	साईं	- दोस देवे साईं	
साधू	+	∅	=	साधू	- अपनी मत ले साधू बोले	21/6
§ सर्वनाम + शून्य §						
जो	+	∅	=	जो	- सतगुरू जो वतन बतावे	21/6
सो	+	∅	=	सो	- सो जिन संग लियो हमारा	19/2
जिन	+	∅	=	जिन	- जिन पीठ दई पर आतम	18/2
मैं	+	∅	=	मैं	- मैं छोड़ी दुनिया की राह	16/4
मैं	+	∅	=	मैं	- मै डारया घर जारया हसते	19/3
जिनहूँ	+	∅	=	जिनहूँ	- जिनहूँ जैसा चाहया	
किनहूँ	+	∅	=	किनहूँ	- मन को किनहूँ दीठा	47/5
हम	+	∅	=	हम	- सो हम माहे बैठके	61/5
हम	+	∅	=	हम	- हम छोड़े सुख सुपन के	88/9

मूलरूप + ए या ऐ :- जब सकर्मक क्रिया भूतकालिक कृदन्तीय रूप के साथ कर्मणि प्रयोग में रहती है तब मूल संज्ञा प्रातिपदिक में विकृति रूप बोधक संयोगी -ए- ऐ विभक्ति जोड़ दी जाती है जैसे आधुनिक हिन्दी में - ने परसर्ग जोड़ दिया

विभक्ति प्रत्यय					उदाहरण	सन्दर्भ
कबीर	+	ऐ	=	कबीरै -	कै दरवाजे कबिरै खोजे	30/10
सुक	+	ऐ	=	सुकै -	अधिक अमृत सुकै सीचिंया	14/3
रसूल	+	ऐ	=	रसूलैं -	कै विधि बताई रसूलैं	118/10
हक	+	ऐ	=	हकै -	हकै जगाए मोम न	118/7
भेष	+	ए	=	भेषे -	भेषे बिगाड्यो वैराग	27/3
कुल	+	ए	=	कुलिए -	कुलिएं छंकाए रे	58/3
मुझ	+	ए	=	मुझे -	मुझे पैठाई हक	

2- कर्म सम्प्रदान :-

सयोंगी विभक्ति :-

प्रत्यय	सिद्धपद	उदाहरण	सन्दर्भ
शून्य प्रत्यय	भेख + = भेख	बाहेर भेख देख भुलाने	11/7
	वेद + = वेद	ऋषि मुनि वेद पढ़त हैं	57/6
	सुख + = सुख	नैहेचल सुख दी खो जे ताए	14/19
	सांची + = सांची	झूठी छूटैं सांची पाइए	6/11
ए-	सदेस + ए = सदेसैं	उद्धव सदेसै किन पर लाइया	14/6
	सुख + ए = सुखैं	सो सुखैं तुम कैसे पाओगे	14/16
	विवस्था + ए = विवस्थै	तोड़ी मरयाद विगड्या विवस्थै	16/4
	विवाद + ए = विवादे	जिन जानो विवादे पूछे	30/2

3- करण - अपादान :

संयोगी विभक्ति :-

प्रत्यय	सिद्धपद	उदाहरण	सन्दर्भ

	अंधार	+	ø	=	अंधारी-	कोई निकसो इन अंधारी	11/8
	मोहनी	+	ø	=	मोहनी-	सब मोहे इन मोहनी	34/20
ए-	परसाद	+	ए	=	परसादे-	गुरू परसादे नाटक पेख्या	7/17
	प्यार	+	ए	=	प्यारे-	प्यारे मिलूं प्यारे पिउ से	62/20
	जुबा	+	ए	=	जुवाए -	जो प्रगट होत जुवाए	62/7
	नरक	+	ए	=	नरकै -	ए तो पिंड नरकै भरयो	106/13
	सग	+	ए	=	सँगें -	सतगुर सगें मै ए द्वार पाया	19/7

सम्बंध कारक :

संयोगी विभक्ति :-

प्रत्यय	सिद्धपद					उदाहरण	सन्दर्भ
+0-	आतम	+	ø	=	आतम-	जब आतम दृष्टि जुड़ी परआतम	9/3
	प्रेम	+	ø	=	प्रेम -	प्रेम बिना सुख पार को नहीं	9/6
+एं	जुगत	+	ए	=	जुगतें -	आतम जुगतें जगाई	16/8
	थल	+	ए	=	थलिएं-	विन थलिएं विवाह हुआ	55/6

4-अधिकरण कारक :

संयोगी विभक्ति :-

प्रत्यय	सिद्धपद					उदाहरण	सन्दर्भ
+0-	रग	+	ø	=	रंग	जा रंग राची लोकाई	19/4
	हिरदे	+	ø	=	हिरदे	तो हिरदे रहयो रे अंधकार	14/13

+ ए - चरण + ए = चरणै मैं अहनिस चरणै रहूँ 52/11

वैभव + ए = वैभैं तुम वैभैं लगे रहे 14/20

ताल + ए = ताले तुम ताले लिख्या नूर तजल्या 65/1

पातल +ए = पातलिए पातलिए ढालो परसाद 13/13

+ हीं - इत + ही = इतही - ए सोभा इतहीं छाजती 56/3

वियोगात्मक कारक विभक्ति (कारक परसर्ग)

कारक परसर्ग -

उपर्युक्त अनुच्छेद में सयोगी विभक्ति के विवेचन से यह परि-लक्षित होता है कि कर्ता कारक के अतिरिक्त अन्य धारकीय रूपों में अहि या ही या उसके विकसित रूप ए- ऐं ए की एकरूपता मिलती है। इस एक रूपता के कारण भी कारकों के अर्थ को अलग-अलग स्पष्ट रूप से समझने में उलझन पैदा होने लगी होगी सम्भवत: इसी उलझन को दूर करने के लिए अपभ्रंश काल से ही कारक परसर्ग जोड़े जाने लगे होंगे । " कीरतन" पदावली में बहुत से ऐसे संज्ञा परसर्गों का प्रयोग हुआ है ।

कर्ता कारक परसर्ग :-

आधुनिक हिन्दी में सप्रत्यय कर्ता का प्रयोग सकर्मक क्रिया के भूत निश्चयार्थक रूप के साथ संज्ञा के विकृत रूप में " ने " परसर्ग प्रयोग करके होता है । " कीरतन " में कर्ता कारक परसर्ग " ने " का प्रयोग कम मिलता है ।

1- कर्ताकारक-

वियोगी विभक्ति :-

प्रत्यय	सिद्धपद	उदाहरण	सन्दर्भ
+ 0	जिन + 0 = जिन	जिन प्रगट प्रकास जो कीन्हो	4/1
+ ने	कर्ता + ने	साख पुराई वेद ने	65/16
		वड़ी वुधवालों ने जाग	18/18
		तो दुख सारों ने भाग्या	18/18
		मोहे जगाई पिया ने	52/14

2- कर्म सम्प्रदान

वियोगी विभक्ति :-

प्रत्यय		उदाहरण	सन्दर्भ
+ को	§कर्म§	तुम झूठ को साजो समारो	13/9
		ग्वालो को चल्यू न कराया	13/14
		जो चाहत हैं सुख को	18/13
	§कर्म सम्प्र0§	नेहेचल राज धनी को	60/3
		या विध सबको अगम	29/3
		सब दौड़े अखंड सुख को	14/16
	§कर्म§	करत सवों को पानी	13/1
		धनी को न देवे देखने	62/9
+	§सम्प्र0§	देखन को हम आए री दुनिया	10/7
+ खातर	§सम्प्र0§	बाहोत पुकार करूं किस खातर	7/16
+ वास्ते	§ ,, §	खासी गिरो के वास्ते	111/11
+ कारन	§ ,, §	ए जिन कारन किया है कारज	10/6

\+ ने- (को) (कर्म) बात ने सुनीरे वुंदेल छत्रसाल ने 58/20

सेवा ने लेइरे सारी सिर मोव के 58/20

विशेष -

" कीरतन " में कहीं- कहीं पंजावी कारक परसर्ग " ने " (को) का भी प्रयोग कर्म सम्प्रदान में मिलता है ।

3- करण अपादान :

वियोगी कारक :-

\+ से जिन से उपजे सो कछुवे नाही 7/3

इन सुपने के दुख से जिन डरो 17/10

राह जुदी दोउ पेड़ से 63/2

\+ सों महामत खेलें अपने लाल सों 17/12

झूठी दृष्टि जो वांधी झूठ सों 21/3

\+ सूं जे सूं मूल न डाल प्रकासू 64/2

(गुजराती) +- ते कौन तुम कहां ते आए 13/5

इन सुख ते होत अकाज 18/17

\+ थे इन झूठे दुख थें भाग के 17/5

कहा भयोम जो मुख थे कहयो 10/1

+- पें कौन मै, कहां को, कहां थे विछरयो 21/4

दुख धनी पें मागें 18/7

4- सम्बंध कारक

वियोगी विभक्ति:-

+ का	पात्र होय पूरा प्रेम का	35/31
	याविध मेला पिउ का	35/28
+ को	एं तो अधमिन को अवसर	4/2
	सब समझत माया को मरम	14/15
+ के	तुम पांच के बाधे पांच देखत	17/5
	इन आतम के करत अंग साक्ष्यात	82/13
+ केरो	दोस नहीं इन वानी केरो	13/18
+ की	भरम की बाजी रची विस्तारी	3/3
	सुध न लेवे धाम धनी की	60/18

5- अधिकरण

वियोगी विभक्ति :-

+ में	सास्त्रों में सवे सुध पाइए	4/5
	जल में मीन होय आया	13/4
	या मे विधिविध के प्रकास	13/19
+ मे	दौड़े एक दूजे में लेन	63/1
+ पर	महामत कहे इन दुलहे पर वारी	42/16
	लाग्या रे हिन्दुओं पर जजिया	58/16
+ मिने	आए पांचों प्रलय मिने	35/20
	कोई मिने चौदह भवन मिने	60/21
	वरना वरन कर मिने व्याख्या	60/16

+ ऊपर	वोहीत मैहेर करी मुझ ऊपर	74/16
+ मा	महा प्रलय मां तत्व लेवासे	64/6
	पुरूष जे रम्या माया मां	64/14
+ माहें	महामत कहे माहें पुर खोजोगे	2/5
	गर्भ माहें क्यों न गलया	13/21
+ मांही	देखन को तन सागर मांही	10/4
	रहे धनी के जमाने मांही	78/7
+ मांझ	सो गवांवत मांझ नींदर	4/2

6- सम्बोधन कारक

वियोगी कारक विभक्ति :-

+ रे	सिंध में बिंद समाया रे साधो !	2/1
	वैष्णव की गति देखो रे वैष्णवों !	9/1
+ री	सांचा री ! साहेब साच सों	9/7
+ हो	हो भाई ! मेरे वैष्णव किहिए	9/1
	हो मेरो धनी धाम	42/1
+ हा	हा रे ! वाला	27/1
+ ओ	ओ ! अंधे अग्यानी	11/8

----xx ----

अध्याय- 4

सर्वनाम

सर्वनाम

सर्वनाम संज्ञा के प्रमुख प्रतिनिधि पद है " कीरतन " में संज्ञा की भाँति सर्वनामों में लिंगभेद रूपात्मक स्तर पर नहीं पाया जाता। यह वाक्यात्मक स्तर पर क्रिया के द्वारा ही होता है । सर्वनाम में वचन और कारक सम्बंधी परिवर्तन सम्भव है । कारक रचना की दृष्टि से सर्वनामित पदों में भी मुख्यत: दो ही " वचन " और " कारक " (मूलरूप , विकृत रूप) पाए जाते हैं । वचनों की स्थिति रूपात्मक आधार पर निश्चित नहीं हो पाती। वचन के रूप प्रयोग के आधार पर ही निश्चित किए जा सकते हैं । "संयोगी " एंव " वियोगी " दोनों ही रूपों में कारक पद्धतियाँ उपलब्ध होती है किन्तु प्रधानता केवल वियोगात्मक पद्धति के रूपों की है । रूप, अर्थ, प्रयोग की दृष्टि से सार्वनामिक रूपों के निम्नलिखित आठ भेद मिलते हैं :-

1- पुरुष वाचक

2- निश्चय वाचक

3- सम्बंध वाचक

4- प्रश्न वाचक

5- अनिश्चय वाचक

6- निज वाचक

7- सार्वनामिक विशेषण

8- सार्वनामिक क्रिया विशेषण

" कीरतन " की भाषा में विभिन्न सर्वनामों के रूप तथा प्रयोग निम्नलिखित है :-

1- पुरूष वाचक सर्वनाम

उत्तम पुरूष

मूलरूप एक वचन :-

मै-	मैं-	5/1
	मैं -	54/2
	मैं -	3/1
§स्त्रीलिंग §	मैं § हुई§-	35/1
हम-	हम -	5/1
	हम -	81/4
§ आदरार्थ §	हम -	92/1

मूलरूप वहुवचन :-

	हम § गिरोकी §	81/5
	हम § सब §	18/6
§स्त्री0§	हम §सखियाँ को §	77/6
	हम	92/1

विशेष :-

" कीरतन" में " मैं " पद अधिक प्रयुक्त हुआ है अतः यहाँ पर "मैं" पदग्राम है तथा अन्य सभी सहपद ग्राम के अन्तर्गत आते हैं ।

उत्तम पुरूष

विकृत रूप: एक वचन :-

मुझ -	मुझ	20/1
	मुझ	65/17
	मुझ	74/16
हम -	हम (संग)	5/1
	हम (छोड़े)	88/9
मों -	मों	84/6

संयोगात्मक रूप -

कर्म रूप :-

मुझे -	मुझे	74/20
मोहे -	मोहे	62/14
मोही-	मोही	10/6
मोंको	मोंको	9/6
मोसों	मोसों	109/10

" कीरतन" में " मो " का प्रयोग संयोगात्मक रूप में अधिक हुआ है अतएव यहाँ पर " मो " पदग्राम है । और मुझ, हम सहपद ग्राम हैं ।

सम्बंध कारक रूप :-

एक वचन :-

मेरी	35/8
मेरा	17/3
मेरे	17/3
मेरो	46/5
मारा	78/12
मारो	64/9

विकृत रूप वहुवचन :-

हम	96/34
हम {आदरार्थ}	81/1

सम्बंध कारक रूप :-

वहुवचन :-

हमारी	10/7
हमारे	81/3
हमारा	19/2
हमारो	18/5

विशेष :-

यहाँ पर " हम" का प्रयोग पदग्राम के रूप में सयोगी वि विभक्ति के साथ सर्वत्र प्रयुक्त है । अन्य सभी सहपद ग्राम है।

मध्यम पुरूष -

मूल रूप : एक वचन :-

तू -	तू	8/1
	तूँ	9/7
	तूँ	110/1
(आदरार्थ)	तुम	2/3

मूलरूप वहुवचन :-

तुम -	तुम(सकल)	7/15
	तुम (सब)	14/16

मध्यम पुरूष

विकृत रूप एक वचन :-

तुझ -	तुझ	61/1

सयोगात्मक (कर्मरूप) :-

+ ए	तुमैं	98/2
	तुमै	35/4
	तोहै	17/2
	तोकौ	3/4

मध्यम पुरूष

सम्बंध कारक रूप एक वचन :-

	तेरा	25/8

मेरे	8/8
मेरो	48/1

सम्बंध कारक रूप : वहुवचन :-

तुम्हारा	13/3
तुम्हारी	11/2
तुमारे	79/1
तुमारो	61/12
तुमारा	62/20
तुमारी	13/20

विशेष :-

" तू " की प्रधानता अधिक होने के कारण " कीरतन " में "तू " पदग्राम हैं तथा तुम, तो आदि सहपद ग्राम के रूप में प्रयुक्त है ।

2- निश्चय वाचक- (निकटवर्ती)

मूलरूप: एक वचन :-

एक	11/8
ए	65/12
एह	71/18
एह	86/13
एही	16/10
एही	42/4

मूलरूप : वहुवचन :-

ए	(सवै)	29/2
ए	(सब लोग)	7/14
एह	(सब एह)	28/18

विशेष :-

प्रस्तुत संदर्भ में " ए " पदग्राम तथा एह, एही आदि सहपद ग्राम के रूप में पाए गये हैं ।

निश्चयवाचक -(निकटवर्ती)

विकृत रूप एक वचन :-

या -	14/4
या -	17/8
इस -	7/15
इसी -	72/14
याही - (में)	12/8

सयोंगात्मक रूप -

याही	4/8
याकी	106/1
याकौ	35/13
यासों	34/13

विकृत रूप वहुवचन

इन	5/13
इन	6/7

संयोगात्मक रूप-

इने	18/8
इने (आदरार्थ)	54/5
इनों	19/4
इनो	63/20

विशेष :-

यहाँ पर " इन " पदग्राम की प्रधानता है अन्य सभी (या, इस) सह पदग्राम है ।

निश्चय वाचक (दूरवर्ती)

मूलरूप : एक वचन :-

	वह -	17/8
(स्त्रीलिंग)	वह -	17/11
	ओ -	3/5
	ओ -	19/5
	सो -	3/8
(स्त्रीलिंग)-	सो (नार) -	10/8
	सोइ -	82/19

मूलरूप : वहुवचन :-

वे -	6/1
वे -	62/11
ते -	27/4

विशेष : -

यहाँ पर " वह " पदग्राम है तथा ते, सो सोइ वे आदि सहपद है ।

निश्चय वाचक (दूरवर्ती)

विकृत रूप : एक वचन :-

उस-	71/19
ता -	17/7
वा -	82/6
वाही -	
ताही -	24/2

संयोगात्मक रूप :-

वाही -	82/6
वाको -	27/5
वाकी -	27/7
ताए -	20/19
ताही -	24/2
ताकी -	109/22
ताको -	14/14
ताथैं -	18/29
तामें -	58/4
तापर -	27/4

विकृत रूप : वहुवचन :-

उन -	18/8
उन -	93/27
तिन-	6/8
तिन -	79/31

विशेष :-

प्रस्तुत संदर्भ में " ता " पदग्राम है तथा वा, उन ,तिन आदि सहपद है ।

3- सम्बंध वाचक सर्वनाम :-

मूलरूप :- एक वचन वहुवचन :-

जो -	80/8
जो -	82/10
जे -	34/3
जे -	35/14

विकृत रूप: एक वचन :-

जा -	52/6
जेह -	28/17
जाही	20/1

सयोंगात्मक रूप :-

जामें -	112/5

	जाकी -	76/1
	जाको -	34/9
	जासों -	84/26
आदरार्थ -	जिन § चरचा §	14/4
	जिन §दया §	62/13

विकृत रूप : वहुवचन :-

	जिन-	10/8
	जिन-	63/1
सयोगात्मक -	जिनों -	74/4
,,	जिनों -	108/20
,,	जिनहूँ -	57/7

विशेष :-

प्रस्तुत संदर्भ में " जो " पदग्राम है तथा जे, जिन जिन आदि सहपदग्राम है ।

सह सम्बंधी या नित्य संबंधी -

मूलरूप एक वचन :-

§ जो § -	सो -	13/6
§ जो § -	सो -	14/12
§ जोकछु§ -	सो -	73/4
§ वह § -	जसै -	17/11

(जोइ)-	सोई -	82/1
(जो) -	सोइ -	15/11

मूलरूप वहुवचन :-

(जो) -	सो -	77/12
(जे) -	ते -	34/3

सह सम्बंधी वाचक या नित्य सम्बंधी -

विकृत रूप एक वचन :-

(जा)-	ता -	52/6
(जा) -	सोई -	11/4

विकृत रूप वहुबचन:-

(जिन)-	तिन -	6/8
(जे) -	तिन -	34/14

4- प्रश्न वाचक-(प्राणिवाचक)

मूल रूप : एक वचन :-

कौन	2/1
कौन	19/5
को	22/6
के	14/12

मूलरूप : वहुवचन :-

को- को	74/24

विशेष :-

प्रश्न वाचक सर्वनाम की दृष्टि से " कीर्तन " में " कौन " पदग्राम तथा को, का, के सहपद ग्रामों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

प्रश्न वाचक सर्वनाम - अप्राणिवाचक ﴿

मूलरूप :-

क्या	31/4
क्या	16/7
कहा	15/2

विकृत रूप एक वचन :-

कौन ﴾ विकहुं﴿ -	84/11
किस -	58/10
किस ही -	55/20
किसी -	60/16
कासों -	34/20

सयोगी रूप - ﴾ किसका, किसकी, किसके ﴿

विकृत रूप वहुवचन :-

किन -	14/8
किन -	111/13
किने -	52/8
किने -	11/2
किनहुं -	33/8

5- निज वाचक सर्वनाम -

	आप	3/5
	आप	66/11
	आपै	11/6
	आपे	2/1
	निज	8/1
	निज	63/16
	आपही	25/8
	अपना	66/22
	आपन	11/3
	अपनो	2/1
	अपने	17/10
	अपनी	14/17
§बाधित बह§	आपको आपै	5/4
	आपसी	42/15

प्रस्तुत संदर्भ में " आप " पदग्राम है तथा अन्य सभी-§ निज, आपे , आपन § सह पदग्राम है ।

6- अनिश्चय वाचक सर्वनाम -

मूलरूप :-

कोई -	कोई	5/5
	कोई	6/10

कोय -	कोय	13/2
	कोय	32/2
कछु -	कुछ	12/8
	कछु	28/20
कछू -	कछू	5/8
	कछू	20/5
कछुए -	कछुए	26/4
	कछुए	20/11
कछुक -	कछुक	14/1
	कछुक	96/18
कोइक -	कोइक	10/2

विशेष :-

यहाँ पर " कोई " पदग्राम तथा कोय , कछू आदि सहपद ग्राम के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

अनिश्चय वाचक -

विकृत रूप एक वचन :-

किसी - {कोई न किसी सों बैर}	19/3
किस ही -	58/10
काहू - {काहू न रूचे}	14/1

विकृत रूप- बहुवचन :-

किनंहू	-	65/8
किनंहू	-	71/16

अन्य सर्वनाम :-

उपर्युक्त सार्वनामिक पदग्रामों के अतिरिक्त कीरतन में निम्नलिखित पद प्रयुक्त होते है ।

सब	-	4/5
सवै	-	6/9
सवों	-	31/1
सबही	-	52/5
सबन	-	29/4
सब जन	-	25/24
सारे	-	38/19
सारों-	§ ने §	18/18
सकल	- § थैन्यारा §	6/7
और	-	14/11
औरों	-	10/5
औरन	-	17/4

प्रस्तुत संदर्भ में " सब " पदग्राम अधिक प्रयुक्त हुआ है और, सकल आदि सहपद हैं।

7- सार्वनामिक विशेषण -

अनेक सार्वनामिक पदग्राम संज्ञा के पूर्व आकर विशेषण का कार्य करते है जिन्हें सार्वनामिक विशेषण की संज्ञा दी जाती है । इनकी रचना

दो प्रकार से होती है - 1 - मूल सर्वनाम पदग्राम ही संज्ञा के पूर्व आकर विशेषण का कार्य करते हैं यथा - निजवाचक, अनि० वाचक, सम्बंध वाचक, प्रश्नवाचक / सार्वनामिक पदग्राम संकेत वाचक विशेषण का निर्माण करते हैं। इनका विश्लेषण विशेषण के प्रकरण में किया गया है । 2- वे सार्वनामिक विशेषण जो मूल सार्वनामिक पदग्रामों में अन्य प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं । इनके दो वर्ग हैं -

1- गुण वैशेषिक

2- परिणाम वोधक

(अ) गुण या प्रणाली बोधक सार्वनामिक विशेषण -

(मूल सर्वनाम पद + प्रत्यय):-

							संदर्भ
ऐसा-	इस- (इ > ऐ)	ऐस्	+	आ	=	ऐसा	11/1
ऐसो-	इस- (इ > ऐ)	ऐस्	+	ओ	=	ऐसो	60/18
ऐसे -	इस- (इ > ऐ)	ऐस्	+	ए	=	ऐसे	5/10
ऐसी-	इस- (इ > ऐ)	ऐस्	+	ई	=	ऐसी	16/12
जैसा-	जिस-(इ > ऐ)	जैस्	+	आ	=	जैसा	13/14
जैसे -	जिस-(इ > ऐ)	जैस्	+	ए	=	जैसे	9/5
जैसी-	जिस-(इ > ए)	जैस	+	ई	=	जैसी	101/1
कैसा-	किस-(इ > ए)	कैस	+	आ	=	कैसा	96/1
कैसो-	किस-(इ > ए)	कैस	+	ओ	=	कैसो	13/8
कैसी-	किस-(इ > ए)	कैस	+	ई	=	कैसी	9/4
तैसा-	तिस-(इ > ए)	तैस	+	आ	=	तैसा	108/33
तैसी-	तिस-(इ > ए)	तैस	+	ई	=	तैसी	87/12

{आ} परिणाम बोधक सार्वनामिक विशेषण :-

कित	-	कितने	13/17
		केते	89/4
के केत	-	केता	14/20
		केताक	92/11
		कैतिक	122/3
		केती	82/3
केत	-	केतो	106/8
ऐत	-	ऐसी	21/4
		ऐते	102/9
		एता	98/1
		जेती	82/13
		तेती	82/13
जे जेत	-	जेता	55/18

8- सार्वनामिक क्रिया विशेषण-

सार्वनामिक पदग्रामों में प्रत्यय जोड़कर अनेक { काल वा०, स्थान वा०, रीति वा० } पदग्रामों की रचना की जाती है । ये भी प्रतिनिधि पदग्राम है । मूलतः इन्हें सर्वनाम ही कहना चाहिये किन्तु अर्थ की दृष्टि से ये पद क्रिया की विशेषता बताते है अतएव इनका विवेचन क्रिया विशेषण खंड के पृष्ठों में किया जायगा ।

संयुक्त सर्वनाम -

सम्बंध + अनिश्चय -

जो कोई -	जो कोई -	अनेक उपाय करे जो कोई	3/7
		जो कोई हंस को परम	30/1
	जो कछु -	जो कछु सुना जीव को	73/8

अनिश्चय + एक -

कोई एक -	कोई एक कुली में काही	6/7
कोई विरला-	कोई विरला साधु निवाहे	17/6

अनिश्चय + और

कोई और -	कोई और न मेरे सक	65/14
	दे न सके कोई और	65/13

सर्वनाम वत विशेषण +अनिश्चय §सब§

सबकोई -	सब कोई देखे यामें	7/15
	ए सब कोई है स्याना	24/1

और + अनिश्चय

और कोई-	और कोई तुम जैसा न देखा	20/9
	लागी वाली और कछु न देखे	10/4

निश्चय वाचक सर्वनाम + सब -

ए+ सब-	ए सब माया मोह	31/3
	ए सबै सुपन	29/7
	ए सकल	13/9

सब+-एह-   दमो दिसा सब एह   28/17

निश्चय वाचक +सम्बंध

ए जो -   ए जो खेल खेलायो   83/2

सोई जो-   सतगुर सोई जो वतन वतावे   21/6

अध्याय- 5

विशेषण

विशेषण

विशेषण वह पद अथवा विकारी शब्द है, जो संज्ञापद (सर्वनाम, विशेषण) की व्याप्ति को मर्यादित या सीमित करता है। संज्ञापद तो किसी समूचे वर्ग का बोध कराता है किन्तु उसकी विशेषताओं का बोध कराकर विशेषण पद उसे एक विशिष्ट वर्ग बना देता है ।

अर्थ की दृष्टि से विशेषण के निम्न वर्ग बन सकते हैं :-

(1) सार्वनामिक विशेषण

(2) गुण बोधक विशेषण

(3) परिणाम बोधक विशेषण

(4) संकेत वाचक विशेषण

(5) तुलनात्मक विशेषण

(6) संख्या बोधक विशेषण

(1) सार्वनामिक विशेषण :- रचना की दृष्टि से सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के होते हैं ।

1- मूल सार्वनामिक विशेषण

2- यौगिक सार्वनामिक विशेषण

इनका उल्लेख सर्वनाम प्रकरण के अन्तर्गत पहले किया जा चुका है ।

(2) गुण बोधक विशेषण :- महामति प्राणनाथ की कीर्तन पदावली में निम्नलिखित गुणवाचक विशेषणात्मक पदग्राम मिलते हैं ।

अथाह	(जल)	14/2
अखंड	(सुख)	14/1
अनूप	(रूप)	76/3

असत	(मण्डल)	3/3
अधम	(शिष्य)	13/18
आड़ी	(माया)	31/12
उत्तम	(पुरूष)	29/7
उजले	(अस्वार)	53/10
ऊँच	(कुल)	13/1
कायर	(मै)	20/10
करड़ी	(कसौटी)	34/14
कटुक	(बचन)	89/13
खारा	(मन)	47/5
खराब	(दिन)	41/2
गुनी	(साधु)	8/3
गलित	(गात)	63/11
घोर	(तिमिर)	54/7
चतुर	(मुख)	48/7
चाण्डाल	(मै)	101/1
छोटा	(मन)	40/4
झूठा	(भवजल)	14/18
झूठी	(देह)	85/12
झूठ	(सुपन)	85/8
ढीठ	(मै)	42/2
तीखो	(मन)	92/15

	तुच्छ	(अकल)	73/26
	दुष्ट	(कोय)	13/2
	दारूण	(जुद्ध)	54/7
	दरदी	(विरहा)	80/13
	धीर	(साधु)	23/11
	निरमल	(आतम)	9/1
	नरम	(मोमन)	95/10
	नीच	(करम)	9/1
	नेक	(हाल)	63/4
	नवले	(रंग)	14/9
	पतिव्रता	(नारी)	64/19
	पागल	(मन)	23/11
	परम	(हंस)	30/1
	प्यारी	(दुख)	18/6
	विरला	(साधु)	17/4
	बुरा	(शिष्य)	13/18
कहे	वावरा	(मोही)	19/5
	बंके	(नैन)	93/15
	बड़ी	(बड़ाई)	71/1
	बड़ा	(अम्मा)	85/11
	भले	(स्याम)	57/1
	के भला	(दुख)	17/6

भारी	§ साहेबी §	61/1
मलीन	§ मत §	73/33
मीठे	§ बोल §	80/1
मोटी	§ मत §	77/33
मस्ताना	§ मद §	24/6
मूढ़	§ मति §	4/9
मैला	§ मन §	47/5
सीतल	§ सुख §	34/18
सीधा	§ सबद §	26/1
सैतान	§ सो §	94/35
सुबुध	§ चेलो §	19/5
सुन्दर	§ साथ जी §	81/1
हल्का	§ मन §	47/4

§3§ परिमाण बोधक :-

अति	§ सुन्दर §	13/4
अधिक	§ अमृत §	14/3
कछुक	§ पेहेचान भई §	96/18
रंचक	§ दिलासा §	87/3
पूरा	§ प्रेम §	29/16
थोड़े से	§ दिन में §	55/25
ज्यादा	§ जी तया-माया §	86/3

कम	§ सवद §	86/2
भारी	§ मन §	47/4
हल्का	§ मन §	47/4

§4§ संकेत वाचक:-

निश्चय वाचक, संबंध वाचक प्रश्न वाचक तथा अनिश्चय वाचक सार्वनामिक पद जब किसी संज्ञा पद के पूर्व आकर - विशेषण की भांति

ए-	ए दरद काहूँ न बाटिया	96/15
	ए वानी उत्तम चढ़ावे ऊँचे	13/17
	ए माया आद अनाद की	65/1
	ए धूतारी को न धीरिये	34/19
	नीके जानिऐ ए भूलवनी	34/14
एह-	ताथैं एह माया उतपन	52/21
	सो केते कहूँ मुख इन ज़ुवान	89/4
या-	धंन धंन सो या मन्दर	35/33

§5§ तुलनात्मक विशेषण :-

सर्व श्रेष्ठता का बोध कराने के लिये तुलनात्मक बोधक कारक पर सर्ग- ते, से जोड़ा जाता है। इसे तुलनात्मक पद्धति भी कहते हैं ।

विशेष + ते, से, थे + विशेषण -

ते- घट प्रमान से ब्रह्म है न्यारा 32/4

ते-	देखी ते वैष्णव अति सुन्दर	14/4
से-	इनमें से नाम्या में निसंक कागर	20/10
से-	नेहेचल न्यारा सबन से	22/9
से-	सो नार हमसे रहत है न्यारी	10/8

समानता अर्थ द्योतक -

समानता का बोध कराने वाले - जैसे, सन, सों आदि शब्द जोड़े जाते हैं।

समान-	न आवे इतके किन समान	78/2
समान-	होय रहे तुम रेन समान	89/11
जैसा-	सीत जूठ को ब्रहमा जैसा	13/14
जैसे-	सुन्न थें जैसे जल बतासा	8/6

§6§ संख्या वाचक विशेषण - पूर्ण

एक-	54/12
एके	65/11
दो-	52/17
दोए-	29/5
तीन-	28/1
चार-	15/3
पांच-	28/144
छट-	30/6
सात-	15/4

आठ-	79/18
अष्ट-	28/9
नवसर-	46/6
दस-	15/5
दसो-	31/3
दसम-	33/4
एकादस-	54/2
द्वादस-	15/5
चौदह-	34/3
चौदे-	18/1
चौबीस-	54/4
तीसे-	54/16
पचास-	28/9
चौरासी-	28/13
सौ-	15/5
कोड-	18/14

संख्या -क्रमबोधक :-

प्रथम-	60/8
पेहेले-	2/1
दूसरी-	62/18
दूसरे-	66/13
दूजा-	7/10

तीसरी-	62/13
तीसरो-	79/13
चौथे-	55/10
पांचमी-	30/13
छठी-	30/13
अग्यारहीं	66/15

संख्या समुदाय वाचक-

दोउ -	52/26
तीनों-	22/2
चारों-	26/2
पाचों -	35/22
दसों-	प 60/9
चौदे-	61/19
आठों	99/1

संख्या वाचक - अपूर्ण -

पाउ-	28/24
आधा-	68/13
अध -{ बीच }-	34/11
अध- { छिन }-	30/5

विशेषण संख्या -गुनाबोधक :-

दो बेर-	52/17

चार बेर-	15/3
सात बेर-	15/4
कोट बेर-	25/4

विशेषण -संख्या- अनिश्चित-

वोहोतों-	35/13
वहु-	8/5
वहुत-	13/2
सकल-	23/7
सारा-	75/9
सारी-	30/10
अधिक-	14/3
अनेक-	3/7
अनन्त-	127/2
विविध-	7/4
कोतक-(वार)	46/5

x-------x

अध्याय- 6

क्रिया

क्रिया

क्रिया वह पद है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति वस्तु और स्थान के विषय में विधान किया जाता है। यह विधान प्रधानतया करने, होने से सम्बन्धित है। क्रिया पद ही वाक्य का शीर्ष है। बिना क्रिया के कोई वाक्य पूर्ण नहीं हो सकता।

हिन्दी आदि आ० भा० आ० भाषाओं की काल रचना में सहायक क्रिया व कृदन्तों का प्रमुख स्थान है अतएव प्रस्तुत अध्याय में सर्वप्रथम सहायक क्रिया फिर कृदन्त और इसके पश्चात् काल रचना का अध्ययन प्रस्तुत किया जायगा।

सहायक क्रिया-

17 वीं शताब्दी की खड़ी बोली क्रिया रचना में सहायक क्रिया का विशेष रूप से महत्त्व है। कीर्तन में होना, रहना क्रिया रूपों का प्रयोग संस्कृत काल रचना में सहायक क्रिया की भाँति प्रयुक्त हुआ है। इन क्रियाओं के तिगड़ुत रूपों में लिंग परिवर्तन नहीं होता और कृदंतीय रूपों में लिंग परिवर्तन होता है।

" होना "

(1) वर्तमान निश्चयार्थ (सहायक क्रिया)

उत्तम पुरूष - एक वचन :-

- हो -	(केहेती) हों -	89/10
- हों -	(मै पूछत) हों -	30/1
-हों -	(मैं देखत) हों-	19/4
- हूं -	(जरैं पर वार) हूँ	90/25

वहुवचन :-

	- हैं -	॥ हम सब धाम चलत ॥ हैं ।	92/1

प्रधान क्रियावत प्रयोग-

एक वचन-	- हूँ-	॥ कुल वधुवा नारी ॥ हूँ	50/2
	- हों -	॥ न्यारी ॥ हों	52/22
	- हैं -	॥ हम ही ॥ हैं	66/10
वहुवचन-	- हैं -	॥ हम सब तो व्रह्मसृष्ट ॥ हैं	18/6
	- हैं-	॥ हम धाम के ॥ हैं	105/12

मध्यम पुरूष

एक वचन :-

- हो -	॥ तुम अखंड कहत ॥ हो	11/2
- हो -	॥ क्यों नहीं देखत ॥ हो	105/5
- है -	॥ तू ही परदा करत ॥ है	132/5

वहुवच-न :-

- हैं-	॥ मासूक करे हैं तुम सब ॥	62/16
- हूजो-	॥ तुम हूजो सवे हसियार ॥	92/1

प्रधान क्रियावत प्रयोग:-

- है -	॥ कहां है तुम्हारा घर ॥	13/5
- है-	॥ तेरा है सनमंध ॥	25/8

अन्य पुरूष -

एक वचन :-

- है -	§ ए सब खेल करत § है-	7/14
- है -	§ मार सेहेता § है-	54/5
- हैं -	§ अक्षरातीत ले चले § हैं -	46/7

वहुबचन :-

- हैं -	§ सब साधा चलत § हैं -	16/2
- हैं -	§ जो देत § हैं-	17/6
- हैं -	§ जो बेचत § हैं -	27/4

प्रधान क्रियावत प्रयोग :-

एक बचन :-

- है -	§ वह नेक § है-	88/7
है	§ साई न्यारा § है-	33/2

वहुबचन

- है-	§ शास्त्रों में सब कुछ § है -	73/26
- है-	§ सब नरक § है -	106/3

विशेष-

वर्तमान कालिक सहायक क्रिया रूपों में खड़ी बोली की प्रधानता है ।

§2§ भूत निश्चयार्थ - सहायक क्रिया-

उत्तम पुरूष - एक बचन :-

- थी-	§ मै तो कछु न जानती § थी-	96/6

-थी- § मैं एसी क्यों भई § थी- 97/19

-हुई- § ले प्रेम न मढ़ी § हुई- 97/19

वहुबचन :- × ---------- × ----------

मध्यम पुरूष -

- रहे- § तुम लगे § - रहे - 14/20

- था - § जो तुम भाग्या § था- 55/27

- हुए- § आप जुदे § हुए - 96/14

अन्य पुरूष-

- था - § बैठा § था- 54/6

- थी- § जो फरमाई § थी- 82/24

- थे - § लिये खड़े § थे- 90/20

- थे - § वैठे § थे - 120/10

स्त्री लि० - थी- § आयी न § थी - 111/8

- हते- § बैठे § हते- 73/41

- हुआ- § झंडा खड़ा § हुआ- 118/11

- हुए- § सो गुम § हुए - 119/9

प्रधान क्रिया की भांति प्रयुक्त-

- थी- § अब मैं लड़कपन § थी- 96/9

- हुती- § लड़कपने सुध न § हुती- 90/20

- थे- § हम दोउ बन्दे § थे- 122/2

- हुते- § अक्षर पार द्वार जो § हुते- 97/9

स्वतंत्र क्रिया की भांति प्रयुक्त-

- था-	(भरोसा न) था-	82/2
- थी-	(दिल में सक) थी-	82/5
- थे-	(त्रिगुन हम ही) थे-	32/4
- हुती -	(परदेश मैं) हुती-	92/9
- हुते-	(पतित) हुते-	16/6
-हुआ-	(दिवाना) हुआ-	24/6
- हुओ-	(मन को) हुओ-	59/4
- हुये-	(सब सर्वग्यन) हुये-	59/4
- हुई -	(अंधेरी चौदे भवन) हुई-	22/2
- भया-	(भवसागर गोपद वच्छ) भया-	62/8
- भयो-	(आतम निवेद) भयो-	9/3
- भये-	(सब एक रस) भये-	55/21
- भई-	(मैं सुहागिन) भई-	74/30
- रहया-	(अंग लोहू रहयान) रहया-	76/22
- रहे-	(हिन्दू पर्वतों) रहे -	58/12
- रही-	(देह सुपन) रही-रही-	86/11

वर्तमान सम्भावनार्थ - सहायक क्रिया-

- होवे-	(क्योंकर मोल) होवे-	18/27
- होवे-	(तो टीका भग) होवे-रे	14/9

होई-	§ विन पुरान प्रकास न § होई-	33/5
होई-	§ तो व्रह्माण्ड भग न§ होई-	36/6
होत-	§ तो माया को नास § होत-	18/23
पड़ता-	§ जानो पड़ता अम्बर पकड़सी§	34/2

प्रधान क्रियावत प्रयुक्त-

-होवे-	§ जो कोई व्रहमसृष्ट का§ होवे-	86/17
- होई-	§ सकल को एक अरथ § होई-	33/5
-होय-	§ सो दुनै से § होय -	18/10

भूत सम्भावनार्थ -सहायक क्रिया-

- होता -	§ जो तुम अरथ पाया § होता-	14/14
- होत-	§ तो अंधेर को नास § होत-	14/14
" होता -	§ ए जो बल खुल्या§ होता-	30/7

प्रधान क्रियावत प्रयुक्त-

होता-	§ अंखड साईं जो यामें § होता-	33/6
होती -	§ जो यामें ब्रह्म सत्ता न§ होती-	30/5

§3§ भविष्य निश्चयार्थ -सहायक क्रिया-

उत्तम पुरुष : -

§स्त्री लि0§ -रहूंगी-	§क्यों रहूंगी तुम विगर§	96/12
- होऊं-	§ ज्यो होऊं सनकूल §	101/8
होय-	§ पर सो मुझसे न होय§	94/25

मध्यम पुरूष :-

हो- § तुम हूजो सवै हुसीयार § 92/1

अन्य पुरूष :-

होयगा- § वेहद बनज का होयगा साथी § 7/16

§स्त्री लि0§

- होयगी- § वासना होयगी वेहद की § 25/5

होसी- § वैराट होसी नेहेचल § 31/15

होसी- § सब जाहेर होसी § 31/15

होसी- § दीदार होसी सब जहान § 72/34

प्रधान क्रियावत प्रयोग -

होयसी- § दया तिनकर न होयसी § 79/23

होवही- § सवों सिरदार एक होवहीं§ 95/16

भविष्य सम्भावनार्थ -सहायक क्रिया-

होय-§गा§-§ जो वैष्णव होय सो बचन मानसी§ 13/21

होवेगा- § जो होवेगा पातसाह§ 95/15

वर्तमान आज्ञार्थ- सहायक क्रिया-

-रहूँ- § चरनो तले रहूँ § 101/2

-होउ- § तुम अमर होउ § 12/8

होइए- § पूरन होइए§ 33/11

-रहो- § सौ वरस रहे साथ में § 79/29

-होइयो- § सावचेत होइयो§ 6/11

हूजो- § तुम हूजो सवै हुसियार § 92/1

होइयो- § जो न आओ सो जुदा होइयो§ 88/8

" रहना "

भूत निश्चयार्थ-

उत्तम पुरूष :-

-रहूँ- § मैं अहनिस चरणे रहूँ § 62/19

- रहे- § हम ही रहे सब में व्याप§ 32/4

-रहीं- § सुध ना रही सरीर § 26/3

मध्यम पुरूष :-

-रहे- § झूठी सों तुम लग रहे § 118/12

-रहो- § ताही से रहो लपटाना § 24/5

-रहियो- § होए रहियो तुम रेन समान § 89/11

अन्य पुरूष:-

-रहा- § रोम रोम बिच रम रहा§ 91/17

रहया- § सकल में रहया समाई § 19/6

रही- § सुध रही जो आप § 89/6

रहे- § साचे छिपे ना रहे § 90/13

रहया - § जाए रहया अन्तर ठौर § 75/12

प्रधान क्रियावत प्रयोग-

रहे- § रहे न पिंड ब्रहमाण्ड § 76/24

रहे-	{ सो रहे ना नींद विगर }	25/4
रहयो-	{ हिरदे रहयो रे अंधकार }	14/13
रहियो-	{ तुम रहियो माहे करन }	88/8
रहा-	{ न जगा रहा तिकार }	61/21
रही-	{ बोलन की कछु ना रही }	109/14

वर्तमान सम्भावनार्थ -{ सहायक क्रिया }

अन्य पुरूष :-

होय-	{ जाको मोल न काहू होय	71/3
होय-	जागा सो वैठा होय	86/18
होवे-	होवे करनी तैसी ताही	79/2

प्रधान क्रियावत प्रयोग-

होय-	{ हुकमें सब कुछ होय }	78/15
होवें-	{ ऐसे कोट ब्रहमाण्ड होवे पल में }	32/9

" सकना "

भूतनिश्चयार्थ -

उत्तम पुरूष :-

संकू-	गोप ना रह संकू माढे	129/26
सकौं-	मै ना रह सकौं तुम बिन	94/3
{स्त्रीलिंग सकी-	धनी मै क्यों न सकी लेह	97/13

मध्यम पुरूष :-

सको-	दौड़ सको तो दौड़ियो	80/2

सकौं- चेत सकौ तौ चेतियो 104/13

अन्य पुरूष:-

सके- रह ना सके एक खिन 92/9

सके- कोई ना कर सके 118/5

§स्त्री0§ सकी- उमर खोइन सकी चल 100/9

सकें- जुदा होय न सकें एक पल 91/18

सकें- दुनिया जीव न दे सकें 118/14

कृदन्त

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में काल चरना की दृष्टि से कृदन्तीय रूपों का प्रयोग महत्वपूर्ण है । कृदन्त संज्ञा विशेषण अथवा क्रिया विशेषण की भांति प्रयुक्त होते है। वर्तमान, भूतकालिक कृदन्तीय रूपों की सहायता से विभिन्न कालों की रचना की जाती है। तथा सभी कृदन्तों से सभी क्रियाओं का निर्माण होता है । प्रस्तुत 6" कीरतन" में निम्नलिखित कृदन्तीय रूप मिलते है ।

§1§ वर्तमान कालिक कृदन्त -

धातु		प्रत्यय	सिद्धपद	संदर्भ
कर	+	ता §त+आ§=	करता §जाय§	125/28
चल	+	ता=	चलता §लिये§	60/20
दौड़	+	ता=	दौड़ता §आवे§	54/13
पुकार	+	ता=	पुकारता §फिरे§	58/6
बढ़	+	ती §+ई§=	बढ़ती §प्रीत§	83/6

जा	+	तो	=	जाती §देखे §	35/8
कर	+	तो	=	करती आविये	51/5
ऊंध	+	तो	=	उंधाती उठो	77/12
भटक	+	अत	=	भटकत फिरत	1/1
खोज	+	अत	=	खोजत फिरत	3/1
देख	+	अत	=	देखत दौड़त	20/9
उठ	+	अत	=	उठत बैठत	16/12
पीव	+	अत	=	पीवत आवत	117/4
कह	+	अन्त	=	कहत चलत	127/1
हंस	+	ते	=	हंसते§ आरया §	19/3
बढ़त	+	तो	=	बढ़ती-बढ़ती प्रीत	83/6

प्रस्तुत संदर्भ कीर्तन में +- ता, +- अत, +- अन्त सह पदों में +- ता वर्तमान कालिक कृदन्त का बोध कराने के लिय पदग्राम की भांति प्रयुक्त हुआ है ।

§2§ <u>भूत कालिक कृदन्त</u> -

धातु		प्रत्यय	सिद्धपद	संदर्भ
जाग	+	आ	जागा§ हुआ §	86/18
बैठ	+	ई	बैठी§ हई §	10/8
भाग	+	ई	भागी§ फिरे §	18/28
भर	+	ई	भरी § चारोखान §	28/13
समझ	+	ए	समझे § साध §	5/5
भाग	--	ए	भागे § फिरे सब §	17/4

धातु	+	प्रत्यय	सिद्धपद	संदर्भ
भूल	+	ए	भूले (फिरै)	7/9
बैठ	+	ए	बैठे(देखो)	10/7
बंधे	+	ए	बंधे(हुए)	29/10
त्याग	+	ओ	त्यागो (धन)	13/13

(3) क्रियार्थक संज्ञा

धातु		प्रत्यय	सिद्धपद	संदर्भ
कह	+	ना	कहना	14/1
मिल	+	ना	मिलना	18/10
हो	+	ना	होना	86/7
रेह	+	ना	रेहना	92/5
उरझ	+	ना	उरझना	24/4
पी	+	वना	पीवना	18/15
पा	+	वने	पावने	79/25
कर	+	नी	करनी	42/1
कहे	+	नी	केहेनी	73/13
मिल	+	अन	मिलन	18/6
देख	+	अन	देखन	10/6
खोल	+	अन	खोलन	66/7
भाग	+	वा	भागवा+ए=भागवे	20/5

प्रस्तुत संदर्भ में क्रियार्थक संज्ञा के क्रिया रूपों में ब्रज भाषा के क्रिया रूप अत्यधिक मिलते हैं ।

॥4॥ कर्तृ वाचक कृदन्त-॥ संज्ञारूप ॥

क्रियार्थक संज्ञा के विकृत विकृत रूप के अन्त में " वाला " " हारा" आदि प्रत्यय लगाने पर कृत वाचक ॥ संज्ञारूप ॥ कृदंत का रूप बनता है।

धातु		प्रत्यय		सिद्धपद	संदर्भ
खोज	+	ई	=	खोजी	3/5
परख	+	ई	=	पारखी	72/4
निवेद	+	ई	=	निवेदी	13/20
कर	+	ता	=	करता	14/12
दा	+	ता	=	दाता	51/9
देखन	+	हार	=	देखनहार	31/12
मांगन	+	हार	=	मांगनहार	51/7
नाचन	+	हार	=	नाचनहार	57/6
रचन	+	हार	=	रचनहार	23/5
वेद	+	अन्ती	=	वेदान्ती	56/13
भूल	+	वनी	=	भूलवनी	34/14

यहाँ पर भी किया रूपों में ब्रजभाषा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टि-गोचर है।

॥5॥ पूर्वकालिक कृदन्त

धातु +		प्रत्यय	सिद्धपद	संदर्भ
धातु शून्य	+	॥ शून्य	ले खड़ा	5/3
छोड़	+	,,	छोड़ चले	11/3
जानबूझ	+	,,	जान-बूझ	78/1

उठ	+	ø शून्य		उठ॥बैठे॥	83/14
धातु	+	प्रत्यय		सिद्धपद	संदर्भ
होना	+	य		होय	17/8
चढ़	+	इ		चढ़ि	83/13
विचार इ	+	इ		विचारी	14/5
जा	+	ए		जाए	5/7

॥ के, कर, करि ॥

पा ए	+	के	=	पायके	4/2
बैठ	+	के	=	बैठके	61/5
जाग	+	के	=	जागके	35/12
उल्टाव	+	के	=	उल्टाय के	5/11
चल	+	के	=	चल के	108/37
वैठ	+	ए+के	=	बैठाय के	83/7
पढ़	+	कर	=	पढ़कर	108/40
चाह	+	कर	=	चाहकर	18/30
नेहेचे	+	कर	=	नेहेचेकर	65/13
जोगारम्भ	+	कर	=	जोगारम्भकर	55/17
एक	+	कर	=	एककर	33/3
विचार	+	करके	=	विचार करके	28/1
रब्द	+	करके	=	रब्द करके	77/3
प्यार	+	करके	=	प्यार करके	35/4
प्रलय	+	करके	=	प्रलय करके	66/19

आद	+	करके	=	आद करके §अवलौं§	35/24
याद	+	कर-कर	=	याद करकर §रोऊं§	75/1

पूर्व कालिक कृदन्तों के रूप को प्रगट करने के लिये "कीरतन" में शून्य, के , कर, करके आदि प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है। प्रयोग की दृष्टि से कर तथा करके प्रत्यय की प्रधानता है।

§6§ वर्तमान क्रिया द्योतक

वर्तमान का० कृ० + ए -§ विकृत रूप §

धातु	+	प्रत्यय		उदाहरण	संदर्भ
हंसत	+	ए	=	हंसते चलैं	62/2
देत	+	ए	=	देते सकुंचे	118/14
खेलत	+	ए	=	खेलते चलिए	80/7
मारत	+	ए	=	मारते ले जासी	27/5
विछड़त	+	ए	=	विछड़ते लागी	35/1
करत	+	ए	=	करते §दिन जाय§	77/5
चढ़त	+	ए	=	चढ़ते§ हुये §	113/2
गावत	+	ए	=	गावते आए	56/212
चलत	+	ए	=	चलते चले	99/10

§7§ भूत क्रिया द्योतक

धातु	+	प्रत्यय		उदाहरण	संदर्भ
भूत कालिक कृ०	+	ए-ए	=	बैठे देखें प्रपंच	10/7
"	+	"		सब बंधे आवे	29/10
"	+	"		चतुराई लिये जात है	24/3

+	ए–ए=	महामत कहें बैठे ही	3/10
+	ए–ए=	हम भेजे आए	73/21
+	ए–ए=	भूले फिरें भरम में	7/9
+	ए–ए=	आगनी खड़े हुए	108/36
+	ए–ए=	छूटे §हुए दिन§	94/27
+	ए–ए=	दुनिया सब भागी फिरे	18/28

§8§ तात्कालिक कृदन्त

अपूर्ण क्रिया द्योतक + ही-

धातु	+	प्रत्यय		उदाहरण	संदर्भ
जीवत	+	शून्य	=	जीवत§ही§सुख पाया	16/13
देखत	+	ø	=	देखत काल पछाड़त	20/9
सुनते	+	ø	=	सुनते उड़ जासी	25/5
सूते	+	ही	=	सूते ही पटकावही	34/12
जनमत	+	ही	=	जनमत ही मिट जाय	48/1
ज्यों	+	ही	=	ज्यों ही पैदा त्यों ही-पतन	107/8
देखत	+	ही	=	देखत ही चलि जात	48/1

17वीं शताब्दी की भाषा यद्यपि कई भाषाओं का मिश्रण है तथापि सभी भाषाओं का मूलाधार खड़ी बोली होने पर भी उनकी अपनी अलग सत्ता थी। अतएव सभी गुजराती- मराठी, पंजाबी, उर्दू आदि का प्रभाव कीरतन में होने के साथ- 2 ब्रज भाषा अत्याधिक प्रयोग हुआ है।

काल रचना-

क्रिया का विवेचन किसी व्याकरणिक कोटि को मूल आधार मानकर निश्चित करना कठिन है अतएव काल को मूलाधार मानकर ही क्रिया का विवेचन वैज्ञानिक तथा उपयुक्त माना जाता है। इसी काल रचना के अन्तर्गत क्रिया की अवस्थायें तथा अर्थ विचार भी सन्निहित होते हैं। इसी व्यवहारिकता की दृष्टि से क्रिया के विवेचन को काल रचना कह दिया जाता है। काल रचना दो प्रकार से होती है।

1- मूलकाल§ सामान्य काल §- जिसमें क्रिया केवल एक प्रधान धातु से निर्मित होती है।

2- संयुक्त काल§ यौगिक§- जिसमें क्रिया रूप एक प्रधान क्रिया+ सहायक क्रिया से निर्मित होता है।

§1§ साधारण काल या मूलकाल -

कीर्तन पदावली में मूलकालों की रचना दो प्रकार से होती है -

§1§ प्राचीन तिङन्त रूप से विकसित तिङन्त तद्भव क्रिया रूप;

§11§ प्राचीन कृदन्तों से विकसित कृदन्त तद्भव रूप। इन क्रिया रूपों में काल अर्थ, अवस्था, पुरुष, लिंग, बचन, वाच्य प्रयोग संबंधी सभी विकार होते हैं।

वर्तमान निश्चयार्थ-

इस काल में लिंग संबंधी विकार नहीं होता है।

वर्तमान निश्चयार्थ

उत्तम पुरूष :-

55	+	ओ-	मै §खोजो§	29/15
	+	औं-	पूछौं	29/1
	+	औं-	करौं	30/2
	+	उँ-	§मै§ देउँ§जार§	75/6
	+	उँ	§ मैं § मांगू	18/11
			कहूँ	19/7
			करुँ	20/2
			देखाउँ	7/12
	+	अत-	§मै§ चाहत § नाही§	19/4
	+	अत	जानत§ हौं §	33/7
	+	अत	आवत	30/6
	+	ती-	जानती	96/6

कीरतन में "ओं " तथा उँ में अन्त होने वाले क्रिया रूप उत्तम पु० में पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं।

वर्तमान निश्चयार्थ -

मध्यम पुरूष :-

प्रत्यय		संदर्भ
+ ए -	§तू§ करे	98/8
+ ए -	देखे	8/2
+ अत-	§तुम§ देखत	65/18

+	अत-	§ तुम § करत §अनरथ	14/12
+	अत-	खोवत § निधा§	13/11
+	ही-	§ तू § न देनही	46/3
+	ही-	§ तू नेह न § बूझही	47/1
+	ही-	होवही	87/2
+	एत-	पाइएत	87/2

वर्तमान निश्चयार्थ

अन्य पुरूष एक बचन :-

+	तां	जातां	58/1
+	ता	छोड़ता	55/19
+	ती	करती	123/1
+	एत	रेहेत	91/14
+	अत	बकबत	78/5
+	अत	खोवत	78/6
+	अत	नाचत	7/13
+	अत	कहियत	107/7
+	वत	केहेवत	103/3
+	ए	राखे	19/16
+	ए	पेहेचाने	2/5
अदरार्थ +	एं	करें	3/9
+	वे	परचावें	3/9

	+ वै	पावैं	8/3
	+ वें	वतावैं	73/3
	+ वें	उड़ावैं	3/9
	+ हीं	विलसहीं	35/33
	+ वही	कैहवहीं	73/3
	+ ही	जार्नेहीं	18/25

प्रस्तुत संदर्भ में " अत " से अन्त होने वाले क्रिया रूप अधिक मिलते हैं ।

वर्तमान निश्चयार्थ

अन्य पुरूष - वहु बचन :-

	+ ते	चलते	55/19
	+ अत	§सकल§ उपपत	10/3
	+ अत	परखत	2/5
	+ अत	§सव§ दौड़त	19/3
	+ अत	आवत	73/6
आदरार्थ	+ एं	खेलें	14/6
वहुवचन	+ एं	सूझें	15/10
	+ एं	सीखें	8/3
	+ एं	देखें	5/4
	+ वें	गावें	5/7
	+ वें	खावें	20/7
	+ वें	बतावें	73/3

+	हौं	चलहौं	22/8
+	हौं	लेवहौं	29/1
+	हौं	खोजहौं	35/26
+	हौं	होवहौं	35/27
+	अंत	वदंत	127/3
+	अंत	कथंत	127/4

वर्तमान आज्ञार्थ

उत्तम पुरुष एक वचन :-

+	ऊँ	बनाऊँ	16/11
		मिलाऊँ	16/11
		चलाऊँ	16/11
		पोहोचाऊँ	73/12
		बोलूँ	73/14
+	औं	करौं	92/2
		वारौं	90/24

+ वे (हम क्यों) देवें (आ०प०व) 91/4

वहुवचन- (आदरार्थ)

+ हो (हम सब न) देखहौं 88/14

वर्तमान आज्ञार्थ के रूप भी प्राचीन तिङ·तं रूपों से विकसित हुए है अतएव यहाँ लिंग संबंधी विकास सम्भव नहीं है । उत्तम पुरुष का वर्तमान आज्ञार्थ वस्तुतः वर्तमान निश्चयार्थ की भाँति ही प्रयुक्त होता है । अतः आज्ञा अधिकांशतः मध्यम पुरुष में ही होती है । अतएव उसी पुरुष में इसके रूप दिये जाते है -

वर्तमान आज्ञार्थ -

मध्यम पुरूष एक बचन :-

+		§तू§ पूछ	87/6
+		§तू§देख	8/7
+	उ	होउ	12/8
+	औ	छोड़ौ	88/4
		पूछौ	17/6
		निकसौ	11/8
		मानौ	30/1
		चलौ	74/12
		खोजौ	3/1
+	इयौ	§ सावचेत§ होइयौ	6/11
+		§यों तैयारी § कीजियौ	86/19

वहुबचन :-

+	औ-	सीखौ § सबै ᵍ संस्कृत	15/9
		§तुम सकल§ मिलौ संसार	7/15
+	औ-	तुम हूजौ सर्वै हुसियार	92/1

आदरार्थ : आज्ञा § या कर्म वाच्य §

-	इये	लीजिये	18/12
		रहिये	35/32
		कीजिये	46/1
		भूलिये	78/1
		जागिये	86/17

		देखिये	89/2
		परमोधिये	24/4
		जानिये	34/14
		पाइए	66/10
-	इयो	होइयो	80/1
		रहियो	88/8
		लीजियो	66/1
		कीजियो	86/19
-	ए	दीजे	14/20
		कीजे	6/9
		सके	65/13

कीरतंन में आदरार्थ आज्ञा के क्रिया रूपों में " ए " "इयो " की अपेक्षा " इए " का अधिक प्रयोगम मिलता है ।

वर्तमान आज्ञार्थ

अन्य पुरूष : एक बचन :-

+	ए	§ कोई § कहे	29/4
		करे	27/6
		खोले	72/2
		किये	78/9
		रहे	22/3
		सूझे	23/5
+	य	खाय	17/4

अन्य पुरूष बहुवचन :-

+ एं	चलें§ सबमिल §	92/10
	लावे§ मारीनर§	28/12
	पढ़े § सब §	73/12
	खेलें	77/4
	कथै	21/4
	दिखावें	78/12

प्रस्तुत कीर्तन के क्रियारूपों में वर्तमान आज्ञार्थ अन्य पुरूष में आदरार्थ बहुबचन § एं § का प्रयोग अधिक है ।

वर्तमान सम्भावनार्थ -

वर्तमान सम्भावनार्थ के रूप भी प्राचीन तिङ्त रूपों के तद्भव रूप हैं। अतएव इनमें लिंग परिवर्तन नहीं होता है। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से भिन्नता होने पर भी रूप रचना की दृष्टि से वर्तमान निश्चयार्थ और वर्तमान सम्भावनार्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं होता। प्राणनाथ की कीर्तन पदावली वली में प्रयोगवृति की दृष्टि से वर्तमान सम्भावनार्थ के कतिपय रूपों का प्रयोग हुआ है।

देउं हरप, हरप, की आयतें	~~72/2~~
जो खोले हादिये खोले द्वार ।	72/2
जब सत सुख हिरदें में आवे	
तबहिं अरवा निकस के जावे ।	76/21
सो रोउं मैं यादकर	
जो मारे हेत के बान ।	75/1

जो देख जीव को प्यारो लगै

तो उपजे सत सनेह । 18/19

ज्यों ज्यों साध में होत है प्रीत

त्यों त्यों मोही को होत है सुख 89/14

भूतनिश्चयार्थ

भूतनिश्चयार्थ प्राचीन संस्कृत कृदन्तीय रूपों से विकसित तद्भव रूप है अतएव प्राचीन संस्कृत कृदन्तों की भान्ति इसमें भी कारक लिंग परिवर्तन से क्रिया का लिंग परिवर्तन हो जाता है । 17वीं शताब्दी की भारतीय भाषाओं के मध्यकालीन अवस्था की भान्ति कीरतन पदावली में कृदन्तों के बने काल पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं।

भूत नि-श्चयार्थ

उत्तम पुरूष - एक बचन :-

धातु		प्रत्यय		
भ	+	या	भया ॥मै॥	5/1
पा	+	या	॥मै॥पाया ॥घर॥	19/7
ले	+	या	॥मै॥ लिया	85/4
जीत	+	या	॥मै॥ जीत्या॥जुआ॥	16/10
			॥मै॥ चाहया ॥सुख॥	18/29
भूल	+	यो	भूल्यो	3/3
पा	+	यो	पायो	20/4
बरज	+	यो	बरज्यो	46/5
देख	+	इया-	देखिया	18/26

उत्तम पुरुष बहुवचन :-

धातु	+	प्रत्यय		
देख	+	ए	देखे	5/7
पैठ	+	ए	पैठे (हम सब)	92/3
दौड़	+	ए (हम) दौड़े (सबै)		88/9
चल	+	ए	चले	93/1

आदरार्थ बहुवचन - खेलें (हम) 54/15

आए (हम भी) 74/11

उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग :-

-ई -

(मैं) भई (सुहागिन)	74/4
(मैं) कही	85/3
(हम) सुनी	96/20
(मैं) खोई (उमर)	20/4
(मैं) तोड़ी (मरयाद)	16/4
(मैं) आई (धाम)	35/9
(मैं) छोड़ी (दुनिया)	16/4
(मैं) करी (इरासत)	55/25
(मैं) लई (सिखावन)	94/4

भूत निश्चयार्थ

मध्यम पुरुष :-

धातु + प्रत्यय

भूल	+	इया (तुम)	भूलिया (वचन)	89/6
जगा	+	इया	जगाइया	77/8
मांग	+	या	मांग्या (तुम)	74/12
पेख	+	या	पेख्या (तुम)	33/1
देख	+	या	देख्या (तुम)	33/1
परच	+	या	परच्या (तुम)	33/2
राख	+	यो	राख्यो (तुम)	35/4
पा	+	यो (तुम)	पायो (अनुभव)	33/3
भ	+	ए (तुम)	भये (ग्यानी)	33/7
लग	+	(तुम)	लगे (वैभवे)	14/20

स्त्रीलिंग:-

ई-	(तुम)	जानी (नाही)	35/6
	(तुम आकड़ी न) पाई		14/20
	(तुम बैंकुठन) देखी		33/3
	(तुम नही) पेहेचानी		35/6
		कीन्ही	11/7
		लीनी	11/7

भूत निश्चयार्थ

अन्य पुरूष - एक वचन :-

आ	+	इया	आइया	75/2
आ	+	इया	जानिया	108/26
जान	+	इया	विचारिया	86/8

विचार + इया		विचारिया	86/8
पड़ + इया		पड़िया	30/1
पा + इया		पाइया	22/10
उड़ा + इया		उड़ाइया	42/3
मिल + इया		मिलिया	34/4
फूल + इया		फूलिया	34/7
समार + इया		समारिया	34/4
गल + इया		गलिया	13/21
ढाप + इया		ढापिया	35/25
देख + इया		देखिया	53/4

अनियमित

ग + या		गया	70/11
प + या		पाया	3/4
समा + या		समाया	3/1
मिटा + या		मिटाया	65/15
कर + या		किया	54/18
फिर + या		फिरया	24/6
लग + या		लग्या	75/2
प्रगट + या		प्रगटया	51/1
रो + या =		रोया	75/8
पड़ा + या		पड़्या	75/10
कह + या		कह्या	77/8
रह + यो		रह्यो	76/23
उड़ + यो		उड़्यो	75/11

दे	+	यो	दियो	74/14
टाल	+	यो	टाल्यो	63/21
खोल	+	यो	खोल्यो	63/22
पसर	+	यो	पसर्यो	90/5
रच	+	यो	रच्यो	22/3
भ	+	यो	भयो	53/1
काढ़	+	यो	काढ़्यो	53/8
बीत	+	आ	बीता	53/1
हु	+	आ	हुआ	53/6
जर	+	आ	जरा	78/15
बैठ	+	आ	बैठा	86/18
उपज	+	आ	उपजा	24/7
हु	+	ओ	हुओ {मन को}	59/4
आ	+	ए	आये	74/12
पेख	+	ए	पेखे	76/17
मार	+	ए	मारे	75/1
मिल	+	ए	मिले	25/3
छोड़	+	ए	छोड़े	25/5
उरझ	+	ए	उरझे	23/5
चल	+	ए	चले	23/6
उपज	+	ए	उपजे	23/6
समा	+	ना	समाना	3/4
उरझ	+	ना	उरझाना	47/1

भरम	+	ना	भरमाना	3/6
लखा	+	नो	लखानो	2/4
रचा	+	नो	रचानो	2/4
दीन्ह	+	ओ	दीन्हो	4/1
भीग	+	ल	भीगल	80/1

अन्य पुरुष बहुबचन:-

भज	+	इया	भजिया	54/11
~~बैठ~~	~~+~~	~~बैठ्या~~	~~77/2~~	
बैठ	+	"	बैठ्या	77/2
रो	+	§सब§	रोइया	73/25
आ	+	§सबै§	आइया	75/5
खो	+		खोइयां	84/7

अनियमित-

खो	+	या § कैयों§	खोया	78/7
कह	+	या §वेदो ने§	कहया	73/32
लिख	+	या	लिखा	55/4
भ	+	या	भया§ सकल में §	54/12
वरस	+	या	वरष्या § अंगार§	53/5
दे	+	यो	दियो § सब §	60/8
उदय	+	यो	उदयो §लोभ §	60/9
उड़	+	यो	उड़्यो §सब अग्यान§	54/16
हु	+	ए	हुये § सब सर्वग्यन §	59/6
पि	+	ए	पिएँ § शसिसूर §	74/6
बैठ	+	ए	बैठे§ दुलहा दुलहिन §	55/5

रो	+	ए	रोए (पहाण)	75/9
पड़	+	ए	पड़े (सब गम)	23/7

अन्य पुरुष स्त्रीलिंग :-

ई-	रोई (भोम)	75/10
	खोई (सान)	60/9
	आई (सृष्टि)	73/24
	उठी (आग)	75/4
	करी (पैहचान)	52/25
	हुई (गोत)	14/20
	पुगटी	18/5
	लिखी	73/38
	रची	55/8
	समझी	74/21
	छिपी	95/17
	बाढ़ी (व्याधि)	60/10
	बगई	58/11
	भई (भोर)	59/5
	पिराई	60/8
	लगाई	60/9
	भूली (सुधा)	60/15
	टली (रात)	60/24

भूत सम्भावनार्थ

+	होता-	जो तुम पाया होता	14/10
		तुमको जो बल खुल्या होता	14/15
		अखंड साईं जो यामें होता	33/6
+	करते-	मेरी सेवा जो करते साथी ड़े	35/2
+	होती-	जो यामें ब्रह्म सत्ता न होती	30/5

विशेष- उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि क्रिया किसी बोली या भाषा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाक्षणिक विशेषता है। क्रियाओं में भूत निश्चयार्थ पुलिंग, एक बचन, अन्य पुरूष के रूप मध्य-कालीन साहित्यक खड़ी बोली, ब्रज कि अवधी तथा भोजपुरी से भिन्न होते हैं। अतः किसी भाषा या ग्रंथ में जिसमें बोलियों का मिश्रण दिखाई पड़ता हो भू0 नि0 एक बचन, पुलिंग, अन्य पुरूषों के रूपों की दृष्टि से मूलाधार खड़ी बोली के रूपों का संकेत मिलता है। तत्कालीन अवस्था से प्रभावित 17वीं का ग्रंथ कीरतन यद्यपि मूल भाषा खड़ी बोली होने पर भी भूतनिश्चयार्थ क्रिया रूपों में ब्रज भाषा के क्रिया रूपों की अत्यधिक प्रयुक्ति हुई है।

भविष्य भविष्य निश्चयार्थ

उत्तम पुरूष - एक बचन :-

+ गा

लिखूं	+	गा	{मैं} लिखूंगा	111/4
भेजों	+	गा	{मैं} भेजोंगा	111/3
बोल	+	हूँ	{मैंन} बोलहूँ	94/10

स्त्रीलिंग -

कहू	+	गी	कहूंगी	52/16
रोउं	+	गी	रोउंगी	75/4
होय	+	सी	होयसी	94/28

आदरार्थ बहुबचन -

जा	+	सी	जासी § हम चल §	90/11
हो	+	सी	होसी § हम §	93/5

भविष्य निश्चयार्थ

मध्यम पुरूष एक बचन :-

+ गै

चीन्हो	+	गै-	चीन्होगै	2/1
ढूढो	+	गै-	ढूढ़ोगै	13/7
पाओ	+	गै-	पाओगै	13/5
उतरो	+	गै	उतरोगै	33/2

+ गा

करे	+	गा	करेगो	46/4
पाए	+	गा	पाएगो	58/9

बहुबचन:-

देखो	+	गै	तुम§ सव § देखोगै	55/25
			करोगै	58/9
			§कैसे§ पाओगै	14/17
कर	+	सी	§क्यो § करसी §गान §	26/4

देओ	+	गै	देओगै	58/10
वैठ	+	सी	बैठसी	66/19
पोहोंचा	+	सी	पोहोंचावसी	73/230
लेवो	+	गै	सब लेओंगै	86/6

भविष्य निश्चयार्थ

भविष्य निश्चयार्थ

अन्य पुरूष - एक बचन :-

+ गा

मारे	+	गा	मारेगा	96/28
आवे	+	गा	आवेगा	108/19
ल्यावे	+	गा	ल्यावेगा	118/19
देखे	+	गा	देखेगा	122/8

+ सी

कर	+	सी	करसी	54/14
जल	+	सी	जलसी	34/16
खोल	+	सी	खोलसी	66/17
चलाव	+	सी	चलावसी	73/38
सेहे	+	सी	सेहेसी	34/15

{आदरार्थ व० व०}

मिले	+	गैं	मिलेगैं	25/8
भूलें	+	गै	भूलेगै	25/9
देय	+	गै	देयगैं	54/17

पीवे + गा पीवेगा 54/16

प्रस्तुत संदर्भ में भविष्य निश्चयार्थ के क्रिया रूपों में खड़ी बोली की प्रधानता लेते हुये भी पंजाबी भविष्य क्रियाओं की भी अधिकता है।

अन्य पुरूष बहुवचन :-

+ सी —

कर	+	सी	करसी (सवै)	52/19
हो	+	सी	होसी (सब पना)	28/6
कैहे	+	सी	कैहेसी (सब)	95/19
गाव	+	सी	गावसी (सब)	55/10
आव	+	सी	आवसी (सब कोई)	53/7

+ करि हैं

सबमिल करिहैं सही 55/10

स्त्रीलिंग :-

+ गी

होय	+	गी	होयगी	25/5
पड़े	+	गी	पड़ेगी	24/26
समझे	+	गी	समझेगी	109/27

भविष्य आज्ञार्थ

+ ना

पीवना प्रेम पर मगन न होना 10/5

इस दोय दिन का लाभ जो लैना 89/13

+ इयो ॥ आदरार्थ ॥

तुम होय रहियो रेन समान 89/11

धनी भेजा बुलवाने फुरमान

कहया - आइयो सरत इत दिन 89/7

भविष्य सम्भावनार्थ

+ गा

आखिर आवेगा सुख दाए 108/8

आधीन तिनके होयसी

जो होवेगा पति साह 95/15

+ सी

जब करसी तब होसी फना 94/23

जो न आओ सो जुदा ओइयो

ना तो होसी बड़ी जलन 88/8

तलफ - तलफ जीव जायसी

जिन जानों यामें सक 88/6

विशेष -

उपयुक्त विवेचन से यह ज्ञात होता है कि बहुवचन पुल्लिंग व स्त्रीलिंग रूपों में बहुरूपता नहीं मिलती है। केवल एक वचन में ही अनेक रूपता दिखाई देती है। कुछ तो बोली की विभिन्नता का संकेत मिलता है। + स भविष्यत् का प्रयोग प्रस्तुत संदर्भ में असीमित मात्रा में हुआ है। आधुनिक हिन्दी में अब यह लुप्त हो चुका है किन्तु आधुनिक पंजाबी में ये प्रयोग अभी चल रहे हैं अतएव इसे पंजाबी का प्रभाव कहा जा सकता

है जो   है जो कई भाषाओं से मिश्रण तत्कालीन {मध्यकालीन} अवस्था से पूर्णतः प्रभावित होने के कारण है । 17वी शताब्दी की भाषा का मूलाधार खड़ी बोली होने के कारण कीर्त्तन में मूलतः + गा भविष्य की ही प्रधानता है ।

2- संयुक्त काल -

संयुक्त काल में एक प्रधान कृदन्ती क्रिया और " होना " सहायक क्रिया के संयोग से काल रचना होती है । संयुक्त काल आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की आधुनिक अवस्था की प्रमुख विशेषता है । संयुक्त काल दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

{1} वर्तमान कालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

{2} भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

प्रथम वर्ग

{1} अपूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ -{ वर्तमान कालिक कृ० + स० क्रिया }

उत्तम पुरुष - एक बचन :-

पुलिंग-	{ मै } डरता हूँ	94/22
	{ मैं} जानत हौं	86/6
	देखत हौं	19/4
	पूछत हौं	30/1
	चलत हौं	16/4
	देत हौं	108/5

स्त्रीलिंग- § मैं § केहेती हों 89/10

§ मैं§ मांगत हों § मेरे दुलहा § 92/1

§ मैं§ खेवत हों § तोबा§ 101/5

§ मैं तो § रोवत हों 97/18

§ मै हेत § करत हों 62/12

आदरार्थ व0व0-

हम श्याम चलत हैं 92/1

मध्यम पुरूष-

पुलिंग- § तुम § कहत हो 11/2

तुम पांव देखत हो 13/7

स्त्री0- तू ही परदा करत है 132/5

तू न्यारी होत है 132/5

अन्य पुरूष एक बचन :-

पुलिंग- करता §है § § जग § 60/23

सेहेता है § मार § 54/5

चाहत है 18/13

खांत है 18/15

करत है 7/14

होत है 89/13

आदरार्थ- खेलत हैं 7/12

गावत हैं § महामत § 59/8

जात है § अकेले §

होत हैं § एकाकार § 58/9

	सेवत हैं § दिन रैन §	63/7
	दौड़त है § ए §	63/21
	कहत हैं	65/14
	बहत हैं § न्यारे §	32/10
स्त्रीलिंग-	बरती है	55/13
	उतारती §है §	56/1
	§ लीला § होती रहे	52/24
	§ सो नार § रहत है § न्यारी §	10/8

अन्य पुरुष - एक बहुबचन :-

पुर्लिंग -	§ रिसि मुनि वेद § पढ़त है	57/6
	§ झूठे तमासे § होत हैं	30/4
	§ क्षत्रियों से§ छूटत हैं	59/8
	§ जो § देत हैं	16/6
	§ सब § करत हैं	7/10
	§ दुनिया सकल § चलत है	16/3
	§ जिन§कहिऐत हैं	73/15
	§ इन § पाइएत हैं	78/6
	कहत हौं	65/14
	फिरत हैं	65/1
	§ दोऊ § लड़त हैं	102/7
	लेवत हैं	108/5

(सब)	उड़त हैं	108/36
	खोवत हैं	108/35
	चलते हैं	55/19
स्त्रीलिंग- (सूरत)	विराजती (हैं)	56/3
(सेना)	भागती (है)	56/4

<u>अपूर्ण भूत निश्चयार्थ :-</u>

पुर्लिंग-	छोड़ता (था)	55/19
	लड़ते (थे)	55/19
स्त्रीलिंग-	जानती (थी)	96/6

<u>द्वितीय वर्ग</u>

(2) <u>पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ</u>.-(भूतकालिक कृदन्त + स० क्रिया)

उत्तम पुरुष - एक वचन :-

पुर्लिंग - (मैं)	पढ़्या हों	94/28
(मैं)	आया हों	108/8
(मैं)	लियो है (बुलाए)	17/1
आदरार्थ- (जो मैं)	किये हैं	16/1
स्त्रीलिंग-	करी है (मै)	55/25
	मै तो खाक हुई	35/1
	मै तो हो गई (सुपना)	35/6

<u>मध्यम पुरुष:-</u>

मासूक करे हैं तुम	62/16
तुम जान पाया	11/1

स्त्रीलिंग-	तुम करी है पैहैचान	86/6
	असनिस तू भेली रहे	132/3

अन्य पुरूष एक बचन :-

पुर्लिंग -	किया है	10/6
	लिन्या है	11/2
	मिला है	6/11
	हुआ है	55/12
	रच्यो है	25/6
	कियो है	55/14
आदरार्थ- ⟨अक्षरातीत⟩	चले हैं	46/ 77
	वाधे है	55/6
	किये हैं	111/5
बहुबचन- ⟨ जिन ⟩	तजे हैं	30/15
⟨ बचन ⟩	लिखे हैं	121/3
⟨ सब ⟩	हुये हैं	83/4
	पिये हैं	83/14
	घुरे हैं	55/13
स्त्रीलिंग-	हुई है	83/6
	प्रगटी है	55/4
	दई है	71/13
	बैठी ⟨ है ⟩	42/5

(2) पूर्ण भूतनिश्चयार्थ

उत्तम पुरूष-	x ------ x -------- x -------	
मध्यम पुरूष-	जो तुम मांग्या था	55/27
अन्य पुरूष एक बचन :-		
पुर्लिंग-	बैठा था	54/6
	पसरयो हुतो	92/10
बहुवचन -	रहे थे	55/3
	वैठे थे	120/10
	लड़े थे	90/20
स्त्रीलिंग-	पुरमाई थी	82/24
	करी थी	86/12
	ढांपी हती	32/25
(रूहें)	बाई न थी	111/8

विशेष - प्रस्तुत संदर्भ में संयुक्त काल के पूर्णभूत निश्चयार्थ उत्तम पुरूष, मध्यम पुरुष की अपेक्षा अन्य पुरूष के क्रिया रूपों की प्रधानता है उत्तम पुरूष पू0भू0 नि0 क्रिया की प्रयुक्ति लगभग नहीं के बराबर है । संयुक्त काल रचना के क्रिया रूपों में भी अन्य भाषाओं का प्रभाव होने पर भी खड़ी बोली की मुख्यता है ।

प्रेरणार्थक क्रिया

प्रेरणार्थ क्रिया वह क्रिया है जिससे यह संकेत मिलता है कि इस क्रिया के कर्ता को क्रिया करने के लिये प्रेरित किया गया है कीरतन पदावली में दो श्रेणियों के प्रेरणार्थक रूप मिलते हैं :-

1- धातु + आ - प्रथम प्रेरणार्थक - इस " आ " प्रत्यय के जुड़ने से अकर्मक क्रिया सकर्मक हो जाती है ।

2- धातु + अव - द्वितीय प्रेरणार्थक ।

प्रथम प्रेरणार्थक विभक्ति + आ :-

लिख	+	आ	लिखा	+	या	लिखाया	3/4
धर	+	आ	धरा	+	या	धराया	2/3
देख	+	आ	देखा	+	या	देखाया	4/4
ढंप	+	आ	ढंपा	+	या	ढपाया	3/4
पोहच	+	आ	पोंहोचा	+	या	पाहौंचाया	75/3
जाग	+	आ	जगा	+	इया	जगाइया	77/14
कर	+	आ	करा	ई	कर ई	कराई	74/14
जाग	+	आ	जगा	+	ई	जगाई	74/17
उपज	+	आ	उप ज ा	+	ए	उपजाए	28/14
देख	+	आ	देखा	+	ए	देखाए	77/9
उरझ	+	आ	उरझा	+	ना	उरझाना	24/4
भूल	+	आ	भूला	+	ना	भुलाना	24/2
कहे	+	आ	कैह	+	ला+या	कैहेलाया	16/3

द्वितीय प्रेरणार्थक:+ अब :-

कह	+	आ + अब	+	ओ	कहाओ	13/3
धर	+	आ + अब	+	ओ	धराओ	13/10
पूजा	+	अब +	+	ओ	पूजाओ	11/5
कहे	+	वा + अब	+	ओ	कैहेवाओ	44/1

परख + आ + अब + ए परखाने 21/6

चिन्ह + आ + अब + ए चिन्हाते 15/11

देख + ला + अव + ए देखलावे 17/11

कहे + बा + अब + ए कैहवाऐ 68/15

देख + आ + अव + हीं देखावहीं 78/14

कर + आ + अव + ही करावहीं 79/24

कह + आ + अब + हीं कहावहीं 107/7

चल + आ + अव + अत चलावत 60/7

नच + आ + अव + अत नचावत 7/5

कह + आ + अव + अत कहावत 28/3

बिछ + आ + अव + ने बिछावने 35/2

उपज + आ + अव + ने उपजावने 74/36

जग + आ + अव + न जगावन 88/11

बुल + आ + अव + न बुलावन 74/12

वाच्य

वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे यह जाना जाता है कि वाक्य में कर्ता प्रधान है अथवा कर्म या भाव / कीरतन में दोनों भाव प्रयुक्त हुए हैं ।

कर्मवाच्य -

कर्म वाच्य क्रिया का वह रूप है जिसमें कर्म की प्रधानता रहती है । कीरतन में कर्मवाच्य दो पद्धतियों से निर्मित किया गया है ।

1- प्राचीन पद्धति या संयोगात्मक पद्धति -- इए जोड़कर

2- नवीन पद्धति या वियोगात्मक पद्धति -क्रिया के भूत-कालिक कृदन्ती रूप में जाना क्रिया के रूप जोड़कर

§1§ संयोगात्मक पद्धति :- [प्राचीन पधति]

सतगुरू साधौ वालो कहिये	5/12
आकार अपुस किये कहा होय	18/8
धरमराज कैसे कही जे	58/7
कहा भयो जो मुख थे कहयो	10/1

§2§ वियोगात्मक पद्धति:- [नवीन पद्धति]

कठिन पंथ चढ़ाय नहि उँचै	6/7
धनी न जाय किनको धूत्यो	15/1
मोल किये न जाय	34/18
सो मुख कहयो न जाई	9/12
पर अलख न देवे लखाई	6/5
प्रतिबिम्ब पकड़्यो न जाई	84/12
पर सोने लगत न स्याही	13/18
इन पैड़ो में पाइएत नाही	6/7

भाववाच्य -

अब तो ढांपी न जाई	14/19
ए अर्थ प्रगट कहयो न जाए	16/12
अब हम रहयो न जाई	88/3
या मुख बरन्यो न जाय	65/15
अब हम चल्यो न जाए	96/13

झूठा दुख छोड़्या न जाए	76/19
सो मैं जाय न कहो	109/1
हम भी छोड़ी न जाय	81/1
सो मैं छोड़्यो क्योंकर जाय	17/1

प्रयोग -

प्रयोग मानक हिन्दी की प्रमुख विशेषता है । वाच्य और प्रयोग एक नहीं होते प्रयोग का संबंध क्रिया और कर्ता कर्म के ﴾ लिंग बचन सम्बन्धी ﴾ अन्नवय ﴾ प्रयोग सम्बन्ध ﴾ से है । इस दृष्टि से मानक हिन्दी में तीन प्रयोग है :- ﴾ 1﴾ कर्तरि ﴾2﴾ कर्मणि ﴾ ﴾3﴾ भावे प्रयोग ।

कर्तरि प्रयोग :-

कर्तरि प्रयोग में क्रिया का लिंग वचन सदैव कर्ता की भांति होता है ।

मैं तो सुपना हो गई	35/6
मुई मारेगी बड़ी सरम	42/9
वैराट वरतो है आन	55/13
गावत है महामत	59/8
नवखंड धुरे है निसान	55/13
डर धरता बुध जी का	60/20
फिरता ढढेरा पुकारता	58/6

कर्मणि प्रयोग -

कर्मणि प्रयोग क्रिया का वह रूपान्तर है जिससे यह जाना जाता है कि क्रि या का अन्वय { लिंग, वचन, सहयोग } कर्म के अनुसार है। कर्मणि प्रयोग मानक हिन्दी की विशेषता है। प्रयोग तथा वाच्य का निर्णय पदात्मक स्तर की अपेक्षा वाक्यात्मक स्तर पर ही ठीक ठाक हो सकता है। कीर्तन में भी बर्क कर्मणि प्रयोग हुये हैं।

बोलत मीठे बैन	63/9
गावत प्रकट ववन	7/13
किया जाना सब शब्दों का	54/18
प्रगटी है सत जोतत	55/3
ब्रह्म सृष्टि प्रगट भई	55/11
इसक आग ऐसी उठी	75/14
मोचे आतम अंधी करी	74/5
पाई न काहू को रीत	ब 3/9
सोभा बरनी न जाई	3/8
आगम बानी इत मिली	55/1
छूट गई मरयाद	60/17

संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रिया आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की प्रमुख विशेषता है। जब दो या दो से अधिक क्रिया में संयुक्त होकर एक ही भाव ज्ञ व्यक्त करती है तब उन्हें संयुक्त क्रिया कहते है। संयुक्त क्रिया में

मुख्य क्रिया के म रूप में कोई कृदन्त रहता है और सहकारी क्रिया पद-काल का बोध कराता है । संयुक्त क्रिया को रूप के आधार पर मुख्यत: आठ वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है ।

§1§ वर्तमान कालिक कृदन्त + अन्य क्रिया :-

करता गया पुकार	34/7
जोवन चढ़ता आया	123/2
जुध ते करता जाय	68/14
दूढ़त फिरत भरम में	82/6

§2§ भूतकालिक कृदन्त + अन्य क्रिया :-

पोहोंचाए देत धनी आस	18/8
लिये जात है	24/3
चली जात बेसुध	21/1
उड्यो जात है	65/11

§3§ क्रियार्थक संज्ञा + अन्य क्रिया :-

अधखिन रहने न पावे	30/5
हम भी लगे देखने	107/9
केहेना कछु ना रहया	106/25
जासो होय मिलना	18/6

§4§ पूर्वकालिक कृदन्त + अन्य क्रिया :-

उठ बैठे	80/13
रहया उरझाई	6/1
दई उलटाई	3/2
निकसी फूट	10/1

जाय मिली	17/18
रहया समाई	19/6
भाग्या रोई	20/4
मिल रचिया	30/7
जाय दई	61/5
भुलाए दियो	60/3
छूट गई	60/17
ले बैठा	60/20
देख भयो	46/2
जाय पाया	33/10
तज भए	28/1
बैठ बजाए	61/10

§5§ वर्तमान क्रिया द्योतक +

साथ दौड़ता आवे	54/13
हंसते चले घर नार	62/2
यों चढ़ते चढ़े	79/22

§6§ भूत क्रिया द्योतक +

जरा रहा विकार	61/21
लिये खड़े संग	56/9
क्योंकर मेटे जाय	52/13
दुनियां मांगी फिरै	18/28

§7§ संज्ञा, विशेषण + अन्य क्रिया :-

प्रगट करी	53/25

चलत चाल	82/17
हुआ जाहेर	85/17
करत पुकार	89/15
किया मिलाप	109/10
करत रूदन	125/28

§4§ पुनरूक्ति वाचक संयुक्त क्रिया:-

कैहे- कैहे	100/6
कर- कर	101/2
गाते-गाते	100/9
सुनाए- सुनाए	108/16
पुकार पुकार	४ /6
उठत बैठत	18/12
दूढत फिरत	16/3
भर भर	२8/6

प्रस्तुत उपर्युक्त संदर्भ में क्रिया के भिन्न- भिन्न रूपों का अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि महामति प्राणनाथ ने कीरतन पदावली में लगभग सभी क्रिया रूपों का प्रयोग किया है । काल रचना पर समान दृष्टिपात हुआ है किन्तु सम्भावनार्थ काल का प्रयोग बहुत ही कम है। प्रेरणार्थक क्रियाओं का प्रयोग कीरतन में बहुतायत हैं। संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग भी पूर्णरूप से हुआ है ।

अध्याय- 7

अव्यय

अव्यय

जिन पदों में लिंग, बचन, कारक, पुरुष सम्बंधी कोई विकार नहीं होता उन्हें अव्यय की संज्ञा दी जाती है। रूप और अर्थ की दृष्टि से अव्यय चार प्रकार के होते हैं -

§1§ क्रिया विशेषण

§2§ संबंध सूचक

§3§ समुच्चय बोधक

§4§ विस्मयादि बोधक

क्रिया विशेषण -

क्रिया विशेषण वह पद है जो § काल, स्थान, रीति परिणाम-संबंधी § विशेषताओं का बोध कराकर क्रिया की व्याप्ति को मर्यादित करता है। जिस प्रकार विशेषण पद संज्ञा, सर्वनाम की विशेषता बताता है उसी प्रकार क्रिया विशेषण क्रिया की विशेषता व्यक्त करता है। रचना की दृष्टि से क्रिया विशेषण दो वर्गों में वर्गीकृत हो सकते हैं।

§1§ सार्वनामिक क्रिया विशेषण

§2§ अन्य § मूल क्रिया विशेषण §

सर्वनाम मूलक क्रिया विशेषण -

अर्थ की दृष्टि से क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं।

§1§ काल वाचक

§2§ स्थान वाचक

§3§ रीति वाचक

§4§ संज्ञा वाचक

रूप रचना की दृष्टि से इनके मुख्यत: दो वर्ग बनते हैं -

§1§ सर्वनाम मूल- जो सर्वनाम के मूल + प्रत्यय लगाकर बनते हैं।

§2§ क्रिया मूलक + संज्ञा मूलक + क्रिया विशेषण मूलक प्राणनाथ की कीरतंन पदावली में ये सभी प्रकार के क्रिया विशेषण पाये जाते हैं।

§1§ काल वाचक :-

जब	76/24
जब लग	2/1
जब ही	76/21
जो- लों	78/5
तब	6/4
तब लग	75/5
तब ही	76/19
तों लों	30/2
लों	75/13
अब	20/11
कब	13/7
कबे	13/10
कबूं	78/12
कबहूं	78/9

कदी	18/53
अब ही	10/6

क्रिया विशेषण, काल वाचक :

§ संज्ञा, क्रिया, क्रिया विशेषण मूलक §-

आज	14/1
अहनिस	9/2
अबेरी	24/4
पीछे§ उदयो§	14/2
पीछला	92/10
पेहेले	2/1
पूरब	3/10
पल	20/9
छिन	60/50
निमख	8/7
चुटकी	22/7
हमेशा	106/23
निस वासर	63/21
अव्वल	108/8

स्थान वाचक :-§ सर्वनाम मूलक §

इहाँ	16/9
एही	8/1
याहीं	4/8

जहाँ	12/7
तहाँ	12/7
कहाँ	11/3
काहीं	6/7
काहूँ	60/16
जितहीं	98/12

<u>स्थाना वाचक</u>-§ संज्ञा, क्रिया ,विशेषण मूलक §

आगे	42/8
आगूँ	96/12
आगल	55/10
सनमुख	5/13
पार	8/1
उमर	22/5
तले	97/6
माहें	76/9
बीच	66/13
इतहीं	4/8
अंदर	97/18
निकट	76/12
चहुं ओर	75/12
जित	98/12
तित	21/3

रीति वाचक- । सर्वनाम मूलक ।

ऐसे	10/1
कैसे	14/12
जैसे	16/5
यों	15/12
योंही	108/43
ज्यों	4/5
त्यों	35/5
क्यों	2/3
क्योंकर	22/9
क्योंए	42/8
किन क्याहैं	14/8

रीति वाचक- । संज्ञा क्रिया सर्वनाम मूलक ।

या विध	9/3
बहुविध	62/11
बहु विधै	8/5
सेहेजे	16/10
वेगें	54/1
नीके।देउ।	73/31
काहे को	13/20

क्रिया विशेषण रीति- कारण सर्वनाम मूलक :-

क्योंकर	81/10
काहे को	13/21
किन क्याहैं	14/8

क्रिया विशेषण रीति- गुण परिणाम:-

अति § अगाध §	
अधिक§ सौचया §	
बहुत § दौड़े §	16/7
एक § न राखी §	14/8
अवश्य § वाहीतों § धरे §	22 / 4
ज्यादा § जीत्या §	

क्रिया विशेषण रीति- निषेध :-

न	16/12
ना	62/3
नहीं	78/4
नाहीं	73/10
§ तुम§ जिन § कै भूलो §	111/3

क्रिया विशेषण रीति- अवधारणा :-

ही	17/17
भी	63/11
केवल	30/13

§2§ अव्यय-संबंध बोधक-

	बिन	7/10
	बिना	8/5
	अन्तर	35/23
	पासे	13/7
	बराबर	21/2
	साथ	78/13
	संग	8/2
	ढिग	19/1
§ अब §	लौं	35/24
विदेशी	दरम्यान	71/12
	मापक	73/19
	बिगर	25/4

§3§ अव्यय -समुच्चय बोधक

समुच्चय बोधक अव्यय मुख्यत दो भागों में वर्गीकृत किये जा सकते हैं यथा- 1- समानाधिकरण 2- व्याधिकरण

§क§ समानाधिक करण:-

समानाधिकरण समुच्चय वे समुच्चय हैं जो समान वाक्यों को जोड़ते हैं । अर्थ के अनुसार इन्हें निम्नलिखित वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं ।

॥1॥ सयोंजक :-

और- सीखो सवै और पढ़ो पुरान 15/8

तोभी- तोभी बदल्या न हाल 42/3

फेर- फेर वाही पल में हमे 74/26

॥2॥ विभाजक:-

या- या घर में या बन में रहेम 21/5

कि- कहो के भूला, टीका करता के तुम 14/12

॥ विरोधक ॥-

अर्थ करो द्वादस के -

पर- पर आप न होय पेहेचान 15/8

पर- बोले चाले पर कोई न पेहेचाने 1/1

॥ख॥ व्याधिकरण :-

व्याधिकरण समुच्चय पद वह है जिनके द्वारा एक वाक्य के प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य जोड़े जाते हैं अर्थ की दृष्टि से इनके कई भेद होते हैं।

॥1॥ कारण वाचक :-

क्यो- अब ए लीला क्यों छानी रहे 52/24

क्योंकर- क्योंकर समझे और 52/7

॥2॥ उद्देश्य वाचक :-

तो- अर्जुन मानो तो इत आओ 13/20

तो-	प्यार कर सके त्यों कर	102/12
ताथै-	ताथै छूटत नहीं विकार	

§3§ संकेत वाचक:-

तो-	ए तो अहनिश को अवसर	4/2
तो-	तो क्यों समझे जीव	52/12
जा-ता-	जा कारन माया रची	
	ता कारन शास्त्र भी	52/6

§4§ स्वरूप वाचक :-

जानो-	जानो भरया ब मृगजल नीर	34/2
ज्यों-	मिल के मरद चले ज्यो महीपत	20/8
जैसे-	सुन्नथैं जैसे जल बतासा	8/6

§4§ विस्मयादि बोधक अव्यय-

विस्मयादि बोधक अव्यय वे पद हैं जिनसे वक्ता के विस्मय आदि तीव्र मनोभावों को व्यक्त किया जाता है। प्रस्तुत संदर्भ में हे, अरे, ओ, हाय आदि सम्बोधन कारकीय पर सर्ग कार्य करते हैं। विस्मयादि बोधक पद निम्नलिखित हैं -

विस्मय -

रे-	छूटत है रे ! लडग क्षत्रियों से	58/2
हो-	हो धनी मेरे एली है तपावत	42/1

हर्ष -

धन धन- धनधन सो या मंदर 35/33

शोक-

हाए-हाए- हाए- हाए कहा कहूँ मैं तिनको 78/7

तिरस्कार-

रे धिक-धिक- धिक- धिक पंडु ते मानवी 27/4

निषेध -

न- ऐसी भूल कबहूँ न परी 78/9

न- पतित ऐसी पुकार न कीजै 16/12

अध्याय- 8

पुनरुक्ति

पुनरुक्ति

पुनरुक्ति शब्दों का प्रयोग यों तो सामाजिक पदों की भांति होता है परन्तु पुनरुक्ति शब्दों में व्युत्पत्ति की दृष्टि से भिन्नता होती है। पुनरुक्ति शब्दों में मात्र पुनरुक्ति होती है। जब कि सामाजिक शब्दों के संयोग में प्रायः विभक्ति अथवा संबंधी शब्दों का लोप हो जाता है।

कीरतन पदावली में निम्नलिखित पुनरुक्ति शब्द प्रयुक्त हुये हैं -

(1) पूर्ण पुनरुक्ति -

संज्ञा	+	संज्ञा	रोम- रोम	42/13
		"	नैन- नैन	3/2
			घर- घर	55/21
			पल-पल	17/11
			मन-मन	47/6
			टूक-टूक	7/16
			भांत- भांत	7/14
			भवन- भवन	51/3
सर्वनाम	+	सर्वनाम	मेरो- मेरो	5/2
			जो - जो	15/3
			सोई-सोई	14/5
			कोई-कोई	94/32
			ते -ते	42/11

विशेषण + विशेषण -

नये - नये	7/6
विधि- विधि	13/19
एक - एक	90/11
भले - भले	57/1
बरना- बरन	55/19
जुदी- जुदी	71/21
वारी- वारी {दुलहिन}	42/16

क्रिया विशेषण + क्रिया + वि० -

नित- नित	14/19
बेर - बेर	19/1
पर - पर	30/11
धन - धन	55/24
धिक- धिक	106/12
जै - जै	57/6

कृदन्त -

पूर्वकालिक + पू०का० -

दे - दे	5/4
पढ़ - पढ़	28/7

कर- कर	106/1
पच- पच	106/3
भूक- भूक	42/7
रोए-रोए	34/16
पुकार-पुकार	4/9
देख - देख	5/1
खोज- खोज	31/9
हँस- हँस	55/19
भर- भर	24/6
चढ़- चढ़	18/33

वर्तमान कालिक + व० का०-

बहुत- बहुत	116/2
खोजत-खोजत	27/1
पीवते- पीवते	115/1
चलते- चलते	65/8
बहती- बहती	83/6
गाते - गाते	100/9

§2§ अपूर्ण पुनरुक्ति-

पसू- पंछी	54/9
चरैं- चुगैं	54/9
फूलपात	7/2

बाट- धाट	8/8
मोल- तोल	18/27
वार- पार	26/4
देखा- देखी	63/2
मिनो-मिनै	105/10
खाते- पीते	18/12
उठत- बैठत	18/12

अध्याय- 9

समास

समास

दो या दो से अधिक युक्त पदों के योग से उत्पन्न नवीन शब्द समास कहलाता है । " कीरतन " की भाषा में यद्यपि कई भाषाओं का सम्मिश्रण है अतः समासिकता की प्रयुक्ति अधिक नहीं हुई है । तथापि दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर समास की तरह उनका कतिपय प्रयोग कीरतन पदावली में अवश्य मिलता है । जिनके उदाहरण निम्न-लिखित -

द्वन्द समास

रवि- शशि	5/10
आवागमन	12/6
वेद- पुरान	17/6
गुरू- शिष्य	21/4
देव- दानव	28/10
जीव- जन्तु	28/13
मोह- माया	29/2
मात- पिता	28/4
छीर- नीर	28/22
निस- वासर	62/21
कुशल- छेम	83/14
रात- दिन	82/21
हार- जीत	78/15
नर- नारी	59/6
रिषि- मुनि	28/11

तत्पुरुष समास-

जोगारम्भ	॥ कर्म तत्पुरुष ॥	11/7
जगत जनेला	॥ कर्म तत्पुरुष ॥	28/3
विजयाभिनन्दन	॥ 〃 〃 ॥	56/1
परवस मन	॥ करण तत्पु० ॥	32/1
प्रेम पियासी	॥ सम्प्र० तत्पु० ॥	52/23
भवपार	॥ अपादान त० ॥	11/5
कालतत्व	॥ सम्बंध तत्पु० ॥	53/17
जगपति	॥ 〃 〃 ॥	16/6
चक्र कमल	॥ 〃 〃 ॥	35/15
मानखो देह	॥ 〃 〃 ॥	4/1
वल्लभ कुंवर	॥ 〃 〃 ॥	13/17
चोटी हार	॥ 〃 〃 ॥	13/17
मनोरथ	॥ 〃 〃 ॥	80/7
जम जाल	॥ 〃 〃 ॥	34/18
भगृ जल नीर	॥ 〃 〃 ॥	34/21
प्राण नाथ	॥ 〃 〃 ॥	76/25
वल्लभ बानी	॥ 〃 〃 ॥	13/21
सिरोमनि	॥ अधिकरण तत्पु० ॥	60/प 6
मदमाती	॥ 〃 〃 ॥	23/1
जलघर	॥ 〃 〃 ॥	84/12
पुरुषोत्तम	॥ 〃 〃 ॥	9/4

कर्मधारय समास-

सत सुख	76/7
सुन्दर वर	82/10
सत गुरु	35/23
सत सनेह	18/19
उत्तम कामल	15/4
झूठी दृष्टि	21/3
मूढ़ मती	23/5
महा बली	60/19
महा वाक्य	32/3

बहुव्रीहि समास-

प्रन धारी	13/20
आतम निवेदी	13/20
मुकुट मणि	16/13
चरण कमल	16/2
भव सागर	11/9
जल बतासा	8/6
आनंद धाम	35/32
अक्षरातीत	16/11
भव जल	18/14
दुखिआ दिल	7/9

ि्वदगु समास-

त्रिवेनी	60/8
त्रिलोकी	28/7
त्रिगुन	32/5
चौखटों	56/12
षट प्रमान	32/4
अष्ट कुली	28/9
दस नामी	56/13

अव्ययी भाव समास-

हाथो हाथ	55/6
सर मर	18/34
बीचो बीच	

अध्याय- 10

शब्द- कोश

शब्द कोश

मध्यकालीन शब्दकोश संबंधी प्रकृति की ओर समान रूप से ध्यान दें तो हमे ज्ञात होता है कि हिन्दी की वर्तमान तत्समता प्रधान प्रवृत्ति कुछ कम है। यह एक स्वाभाविक शब्दकोशात्मक विकास न होकर लादी गईं हुईं एक प्रवृत्ति है। किन्तु ज्यों- ज्यों हम भक्तिकाल, रीतिकाल से होते हुये आधुनिकता की ओर आते है त्यो- त्यों तत्समता की प्रवृत्ति बढ़ती ही दिखाई पड़ती है किंतु यह नियम मानक हिन्दी के प्राचीन तथा मध्यकालीन खड़ी बोली में नहीं लगता। उत्तर भारत में ब्रज, अवधी, राजस्थानी आदि भाषाओं का साहित्य आरंभ से एक विशेष प्रदेश, विशेष सम्प्रदाय की सीमा में ही बंधकर चला है। किन्तु खड़ी बोली (हिन्दवी) का साहित्य आरंभ से अन्तर्प्रादेशिक तथा अन्तर्साम्प्र-दायिक रहा है इसीलिये आरंभ से ही हिन्दी की प्रकृति समन्वयात्मक रही है। इसकी यह प्रवृत्ति शब्दकोश की प्रकृति को भी प्रभावित करती रही है।

महामति प्राणनाथ के शब्दकोश की प्रवृत्ति अधिकांशतः तद्भव प्रधान रही है। इसके साथ - साथ उनके शब्दकोश में अन्त प्रादेशिकता और अन्तर्साम्प्रदा-यिकता भी है। खड़ी बोली की राष्ट्रीयता या समन्वयात्मक प्रवृत्ति तुलना में अन्य प्रादेशिक भाषा की प्रादेशिकता दृष्टिगत होती है इसीलिये उसके शब्दकोश में एक रूपता या प्रादेशिक विशिष्टता है। बंगला, उड़िया, पंजाबी, सिन्धी, गुजराती, मराठी आदि समस्त प्रादेशिक भाषाओं के शब्दकोश में व्याकरणिक एक रूपता नहीं है। व्याकरणिक एक रूपता को रखते हुये कीर्तन पदावली के समस्त तत्सम पदों और सहपदों की संख्या लगभग 1500 से अधिक है।

कीर्तन पदावली में निम्नलिखित तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है किन्तु ये तत्सम शब्द अपने तदभव रूप में ढाल लिये गये हैं।

तत्सम शब्दकोश - संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण

अंध	6/7	आश्रम	56/12
अंत	13/8	आगम	5/7
अंह	22/2	आचार	9/6
अंतर	5/3	इस्ट	6/5
अम्बर	20/8	इंड	7/6
अमृत	20/3	इन्द्र	10/3
अलख	4/3	उत्तम	13/6
अखंड	4 /2	उनमाद	13/6
अनन्त	125/9	एक	6/3
अधिक	14/3	ऐन	62/14
अनेक	5/10	और	75/12
अमर	12/8	औगुन	77/7
अष्ट	28/9	कृष्ण	13/19
अगम	4/8	कंचन	33/6
अपार	8/10	कृपा	79/14
कंस	14/ 11	जल	13/14
कंथ	8/8	जम	35/7
कछु	12/8	जुध	16/6
कमल	17/2	जोग	28/3
कलियुग	73/30	झाल	34/8
कष्ट	101/2	त्रास	13/12
काल	61/23	थिर	28/13
क्रिया	61/23	दयाल	56/6

विवाद	13/11	सेवक	13/17
स्वामी	32/3	हिरदे	18/33
संसार	11/10	**क्रिया विशेषण-**	
सकल	18/3	आगे	42/2
सतगुरू	11/3	ऊँचे	98/1
सज्जन	60/11	चंहु ओर	75/12
सारसँ	76/7	रंचक	87/3
सत	6/10	निकट	76/12
संत	11/10	ओर	75/12
सांच	11/8	वहु	8/5
सिंधु	3/1	सावचेत	6/11
सिस्य	13/18	पूरब	3/10
श्री	57/1	ऊपर	22/5
सुख	11/11	नीके	73/31
सूर	76/7	अन्तर	35/2
सोभा	76/7	बाहर	5/5
सिनगार	76/3	पीछला	92/11
सनंमर्थ	74/33	साथ	78/13
सूरत	73/29	विलम	16/9
संग्राम	58/6	सदा	54/20

तदभव- संज्ञा शब्दकोश

अनं	51/9	आसन	12/5

तदभव् - संज्ञा शब्दकोश

शब्द	संदर्भ	शब्द	संदर्भ
अनै	51/9	आसन	12/5
अक्षर	14/5	आरती	56/16
अंगार	23/2	आँख	9/6
अंधार	23/3	आकास	48/5
अधर	46/4	आसा	9/5
अस्व	53/10	आँटी	6/2
अवनी	24/5	आँकड़ी	14/13
अरथ	13/1	आतमा	52/19
अवसर	17/7	आकार	13/8
अहार	17/4	आखर	15/11
अनुभव	32/2	आँच	16/2
अन्नकूट	15/7	आगमी	55/3
अवस्था	26/3	इन्द्री	10/3
अवीर	51/4	ईश्वर	18/3
अपुस	13/8	उजास	14/14
अजियाल	34/23	उपाय	3/7
अमरपुर	48/3	उपासन	31/9
अवतार	61/2	ऊन	15/4
अंकुर	15/12		
अगिन	12/2	ऊंट	63/3
अनहद	12/5	उबट	20/4
अस्नान	15/5	औलिया	71/16=
		उपनिषद	52/10
अक्षरातीत	52/9	कंठ	23/4

कसौटी	34/14	कोहेड़ा	34/1
कलस	52/29	खंड	58/6
करम	34/1	खडग	58/2
कल्प	68/22	खाग	10/3
कवि	32/10	खाड़	60/19
कांटे	34/15	खिन	60/9
कमाई	13/18	खिलौना	71/5
करनी	42/1	खूटों	54/8
कलिंगा	54/8	गर्भ	13/21
करार	25/9	गृह	51/2
कबीर	33/10	गति	7/9
करतार	32/14	गमार	4/7
काया	42/4	गात	63/11
काम	62/19	गान	26/4
काष्ट	7/2	गीत	51/30
कामल	15/4	गुन	7/9
किरना	29/6	गुलाल	51/4
किरतंन	15/6	घन	35/2 32
किव	27/2	घर	14/7
कांच	107/1	घड़ी	46/3
कर्तब	82/20	घाट	8/8
कुल	12/1	छ चर	28/13

दावानल	18/20
दिसा	30/15
दीया	7/1
दूध	51/1
देह	32/8
धनुष	54/11
धरम	13/3
धरती	54/8
धधा	11/1
धनी	30/15
धाम	88/5
धार	54/7
धुसार	54/6
धोती	13/4
धोखा	76/16
नगर	51/5
पात	8/3
पाट	55/5
पालव	55/5
पाताल	7/2
पिउ	24/5
पीठ	25/8
पुरुष	29/7
नेहैच्चे	18/16
नैन	63/11
पक्ष	33/6
पट	76/11
पसू	76/9
परवी	76/9
पलक	5/2
परस	9/4
परवत	55/6
पहाण	75/9
पत्थर	25/4
पतंग	34/9
पदवी	6/4
परीक्षा	92/16
पदारथ	18/11
पाल	17/8
विचार	14/3
विरहा	18/16
विछोहा	18/8
बिस्व	54/21
विंद	3/2
विष	55/20
वस्त्र	56/8

पुरान	6/7	विषय	60/9
पेड़	31/2	बीतक	52/14
पेड़ा	8/4	विधाता	51/2
प्रान	48/5	वेवहार	53/3
बन	34/8	बैराग	27/3
बनजारे	7/1	बैकुंठ	42/2
ब्रज	14/10	बैन	63/9
बच्छ	14/18	बोझ	5/3
वृच्छ	68/22	ब्रह्मांड	28/10
बस्तर	51/9	भरम	5/5
बरन	7/6	भडाँर	51/8
बतासा	8/6	भरतार	31/15
बाल	28/3	भरोसा	5/2
बाग	34/8	भलाई	10/5
बाती	7/1	भिँस्त	79/18
बान	14/4	भौर	85/15
बाध	10 /3	भूवन	51/9
व्याह	55/6	भेद	9/3
वाचा	79/30	भाग	52/18
भौर	17/12	रात	14/10
भौम	13/5	रिषी	28/11
भोजन	55 /4	रीत	16/2
मत	10/7	रैन	14/17

सार 52/5
स्यापप 18/31
सिखर 28/9
सिर्धं 3/1
सिछा 21/2
सिस्य 13/18
सील 13/12
सुध 22/8
सुन 22/7
सुरत 8/2
सुपना 17/12
श्रुती 32/2
सुजान 18/3
हिन्दू 53/3

मैत 47/4
सैज 93/13
सैन्या 16/11
सौने 13/18
संतोख 20/7
सासुड़ी 46/3
साड़ी 46/6
हिरदे 70/4
हार 46/6
हाथं 35/3
हाट 125/8
हाड़ 128/31
हथियार 102/4
हरिद्वार 53/4

शब्दकोश - विशेषण

अलख 1/2
अति 54/1
अजान 4/4
असत 3/3
अधम 18/18
अनूप 76/3
अथाह 14/18

अवला 9/2
अकेला 32/5
अनोखा 85/8
अचंभा 85/11
अलमस्त 84/12
अरधांग 54/2
अधिक 29/9

अपार	51/5	अलवेला	44/2
आड़ी	31/12	चौर	42/9
आदि	29/9	चांडाल	42/9
अभंग	76/6	छोटा	47/4
उपली	78/12	जूठा	13/14
उल्टा	16/3	झूठी	85/12
उत्तम	15/4	टेढ़ा	14/12
उजले	53/10	ढिग	19/1
ऊंड़	12/1	तम	47/2
उबट	20/4	तीखा	47/4
कटुक	89/13	तेज	29/6
कठिन	98/1	तुच्छ	73/26
कठोर	98/1	दारुण	54/7
करड़ी	34/4	दीन	22/8
कायर •	20/10	दीवाना	24/9
कामी	46/3	दुष्ट	13/2
कुटिल	13/17	धीर	33/11
कुकरम	13/17	धूरत	13/13
कसाला	87/16	ननरम	95/10
कोरे	35/28	नवले	14/9
खारा	47/5	न्यारा	30/8
खाली	47/6	निसंक	93/15
गल्लित	63/11	निपट	98/1

गुनी	8/3	नैक	63/4
घायल	10/2	निलज	46/2
घोर	54/7	नीच	9/1
चरमिष्ट	42/9	नेहेचल	64/8
चतुर	31/9	निरमल	9/1
परम	63/1	मीला	47/4
प्यारा	18/6	धवल	57/5
पाक	60/13	नये	57/3
फीके	13/10	नाठ्या	20/10
व्याही	55/9	दोस	88/16
बड़ी	4/8	ढौल	88/4
वावरा	19/5	त्रिधा	79/13
विकट	33/118	थोड़े	55/25
बुरी	35/30	रंचक	87/3
बूढ़ा	59/6	सज्जन	78/12
बंके	93/15	स्याम	57/1
भला	17/6	सत	76/6
भारी	61/1	सीतल	33/18
ठौठ	42/2	सीधा	16/9
ढढेरा	58/6	सुन्दर	13/4
मलीन	73/33	सुजान	78/2
मस्त	24/6	सुबुध	19/5
मीठे	78/12	सूक	75/9

माननी	51/6	सेहेल	10/5
मूद	4/9	हल्का	47/4
महावली	60/9	हरवरी	75/5
मूरख	63/3	हरामी	13/15
महा	30/15	कुमत	25/7
मैला	47/5	कुवाली	24/8
मोटो	68/16	सूक्ष्म	28/13
विरला	17/4	विवल	26/4
विकराल	74/9	समरथ	25/9
वृथा	78/2	स्याना	24/1
दूँढ	85/14	गमार	23/1

शब्दकोश - क्रिया

अन्हाए	106/13	खनाए	5/10
आया.	13/1	गयो	9/6
आई	54/4	गावे	5/7
उलटाए	46/6	गमावे	4/7
उड़ाइया	42/3	ग्रहयो	7/13
उठी	17/9	गिरे	8/10
उतरी	61/11	गलिया	13/21
उदयो	14/2	घुरै	55/13
उरझाए	14/2	चेलियो	86/13
उपजे	15/12	चल्या	20/4

ऊग्या	14/7
आलेखानो	1/2
काढ्यो	52/5
कियो	5/13
कह्या	14/7
कीन्हो	4/21
खोजैं	3/5
खोवैं	20/4
खांए	17/4
खेलावे	7/6
खड़े	55/3
खरचो	13/13
खुल्या	14/15
जावे	4/3
जगाए	18/14
जगाई	6/9
जाई	6/2
जागा	86/18
जीत्या	16/10

चुभैं	33/15
चुवैं चरैं	54/9
चुगैं	54/9
चोरावैं	105/5
छिहाए	28/22
चुनाए	6/10
चढ़ाए	93/14
चाह्या	18/29
चरची	14/4
छिपपाए	6/8
छोड़ी	16/4
छोड्या	54/16
छुयो	28/4
छुटकाए	106/6
छूट्या	94/28
दई	71/13
दौड़त	19/4
देखत	19/3
धरवावैं	7/9
धरायो	3/2
धरयो	28/10

जररया	19/9
जान्या	33/3
जलाया	15/3
टूटे	35/3
टलिया	13/21
ठेहेरावें	5/7
डबोईं	27/3
डरावे	10/3
डांढ़ा	86/18
दहाए	58/13
ढंपाया	3/4
ढूढे	21/12
तोड़ी	16/7
तजिया	18/22
तलफ्या	14/17
दौड़िया	58/8
दिये	6/10
दिखावें	5/5
दीन्हों	4/1
पूजिया	109/21
पुराईं	6/3
पुकारिया	33/10
धुतारिये	35/30
धोए	15/3
निकसी	14/18
निबाहे	16/4
निरखें	93/14
नवाए	29/12
निकालों	6/5
निकस्यो	106/9
नसाइयो	61/20
पतीजे	19/5
पछाड़े	5/3
पढ़ाए	28/12
पुजाओं	11/5
प्रगटिया	55/2
पकड़िया	25/2
परच्या	33/2
पुराईं	6/3
पाया	14/14
पटैबो	14/16
परखे	15/10
बिसारिया	28/6
बिगड़्या	19/7
बताया	16/3

पेहेराव्या	51/9
पछताना	24/2
प्रकास्यो	14/2
परमोधिये	25/4
पेहेचाने	2/5
फूलिया	34/7
फिराए	24/6
फिराई	16/8
फूट	10/1
बेचैं	27/5
बनाए	6/10
बरसे	11/5
विलसे	54/5
विछुरे	53/8
बजाएं	48/8
बरज्यो	46/5
बरज्यो	53/6
बुझाए	48/5
बोले	20/9
बैठा	3/5
बोता	34/7
ब्याहो	55/8
विचरिया	12/4
बदल्या	42/3
बखाना	24/3
भूले	9/2
भयो	9/3
भागे	17/4
भरमाये	28/15
भळके	7/9
भुनाने	6/5
भरिया	34/2
भजिया	54/11
भूलिया	33/8
भेदयो	18/21
भाने	23/7
भरी	28/13
मागि	8/7
मिला	17/2
माना	24/1
मुड़ायो	15/2
मूंदिया	76/22
मिलिया	20/2
मांगया	18/18
मेटयो	54/16
मुरछावे	7/14

होवे	5/3
हुये	18/25
होई	4/4
लीजियो	77/15
जगाइया	77/14
बैठिंया	77/2
उबारे	77/16
लगावैं	77/12
गल्यो	75/12
रोइया	75/10

<u>विदेशी शब्द कोश-</u> (संज्ञा, विशेषण, क्रिया)

अमल	71/10
अरस	79/12
अकल	66/8
अदल	79/26
असर	60/3
अजीब	61/7
अजीम	71/2
अल्ला	96/27
अव्वल	96/4
आदमी	81/3
आरफ	66/23
आलम	62/18
आसक	62/16
ईसा	61/16
ईमान	74/4
उजू	64/10
उमत	71/20
उम्मेद	52/21
उमराह	94/22
उमराव	90/21
उजागर	94/36
औलाद	66/7
औलिया	61/13
कसबी	66/4
करीब	60/13
करीम	61/7

क़रबानी	61/5		
कौम्मिस	71/1	जमात	62/3
खबर	3/8	जंजीर	71/21
खसम	47/6	जवूर	70/6
खलील	61/8	जहाज	90/9
खाक	75/8	जान	17/6
खातर	60/1	जबराइल	61/12
खलक	58/15	जहान	73/35
खाविंद	30/8	जमाने	78/7
खास	72/5	जाहेर	31/13
खिदमत	94/22	जौनस	72/1
खिताब	66/7	जुदा	63/20
खुदाए	61/20	जुलम	88/7
खुशखबरी	72/10	जुबान	89/4
खूबी	62/4	जेहेर	55/20
खुमार	54/17	जेजिया	58/60
गफलत	34/16	जोस	61/12
गवाही	81/9	तबक	109/6
गाजियों	71/5	तवीब	16/1
		तमाम	71/14
तफावत	71/16	नाजल	71/4
तरीकत	66/1	नासूत	77/13

सहायक ग्रन्थों की सूची

1- मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण- डा0 माताबदल जायसवाल- इलाहाबाद विश्वविद्यालय

2- कबीर की भाषा - डा0 माताबदल जायसवाल - कैलास प्रकाशन, संस्करण 1969

3- हिन्दी भाषा का इतिहास- डा0 धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, नवम संस्करण

4- हिन्दी व्याकरण- पं0 कामता प्रसाद गुरु - नागरी प्रचारणी सभा

5- हिन्दी उद्भव, विकास और रूप- डा0 हरदेव बाहरी प्रकाशन-किताब महल इलाहाबाद द्वितीय संस्करण - 1966 ई0

6- भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी - डा0 धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दुस्तानी एकेडमी उ0 प्र0, इलाहाबाद दसवां संस्करण - 1953 ई0